---(गीताञ्जली धारा = 3)---

जैन आध्यात्मिक गीताञ्जली

(जैन धर्म की महानता एवं व्यापकता)

गीत रचनाकार - कविवर आचार्य श्री कनकनन्दी जी

द्रव्यदाता

1. श्री नाथूलाल जी खलोड़िया जैन, उदयपुर (हितेष फार्मा डिस्ट्रीब्यूटर्स) पार्श्वनाथ दवा बाजार, उदयपुर- हेमन्त, प्रीति, जितेश, वन्दना, निर्देश, पक्षम, वाणी। Mob.: 9460445698

2. सुश्री चार्वी D/o तमन्ना नितिन कुमार भोरावत, दुबई- (उदयपुर) जन्म दिवस के उपलक्ष्य में

3. सुरेश कुमार बडजात्या की पत्नी की स्मृति में (तिलक नगर, इन्दौर)

ग्रंथाक - 201 संस्करण - 2011

प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 31/-रु.

-: *प्राप्ति स्थान* :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर
(राज.) - 313001, मो. 9783216418

-: *सम्पर्क सूत्र* :-

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - 313001
फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622
E-mail : nlkachhara@yahoo.com

हृदयोद्गार

(विभिन्न कवियों के स्वरूप एवं विभिन्न कविताएँ)

आचार्य कनकनन्दी

भाव की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। भाषायें विभिन्न होने पर भी उन सब की दो प्रमुख विधायें होती हैं। यथा (1) गद्यात्मक (2) पद्यात्मक। गद्यात्मक विधा से पद्यात्मक विधा से लिखना तथा गाना कठिन होते हुए भी यह विधा लालित्य, कर्णप्रिय, मनमुग्धकारी, प्रभाव-उत्पादक, चिरस्मरणीय, लय-ताल-संगीतमय है। इस विधा के लेखक को कवि कहते हैं और बोलने/गाने वालों को गायक कहते हैं। सच्चे कवि में विषयज्ञान, भाषाज्ञान, कल्पनाशीलता, भावप्रवणता, प्रेरणा, स्व-पर-विश्वकल्याण की भावना के साथ-साथ भक्ति /पीड़ा/उत्साह/उत्कंठा आदि विशेष गुण भी होते हैं। आध्यात्मिक-सन्त कवि में यह भक्ति आदि स्व-आराध्य के प्रति होती है तो प्रकृति प्रेमी कवि में प्रकृति के प्रति, राष्ट्रप्रेमी कवि में राष्ट्र प्रति होती है। ऐसा ही अन्याय विषयों के कवि के बारे में जान लेना चाहिए। आध्यात्मिक-सन्त कवि/भक्त द्धारा लिखित पद्य को प्रार्थना, स्तुति, भजन, आरती, पूजा, आराधना, कीर्तन आदि कहते हैं। भक्त कवि स्वयं को स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के समक्ष क्षुद्र/अल्पज्ञ/असमर्थ मानते जानते हुए भी स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के प्रति उनमें जो उत्कृष्ट भक्ति आदि होती है उससे वे प्रेरित होकर पद्य आदि की रचना करते है। यथा-

स्तुति पुण्य गुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।

निष्ठितार्थो भवां स्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखम्।। (99) सहस्रनाम

पुण्यमय आदर्श गुणों के कीर्तन/प्रशंसा/गुणगान को स्तुति, अर्चना, प्रार्थना, पूजा कहते हैं। आदर्श गुणानुरागी भव्य प्रसन्न मन वाला स्तोता/स्तुति करने वाला पूजक होता है। जिसने कृतकृत्य होकर परम पुरुषार्थ रूप

अमृत स्वरूप पूर्णावस्था को प्राप्त कर लिया है ऐसे परम ब्रह्म स्वरुप शुद्धात्मा स्तुत्य/पूजनीय है। स्तुति, पूजा, प्रार्थना का फल नैश्रेयस सुख है।

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे।

तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरितांजनेभ्यः।। (57) (स्वयंभू स्तोत्र)

हे जिनेन्द्र भगवान्! आप वीतरागी होने के कारण आपको पूजा से कोई प्रयोजन नहीं है तथा निन्दा करने वालों से आपका किसी प्रकार का वैरत्व नहीं है तथापि आपके पुण्यश्लोक, गुणों के स्मरणमात्र से चित्त पवित्र हो जाता है एवं पाप रूपी कलंक दूर हो जाते हैं।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतुशांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।। (14)

वे केवलज्ञानी जिनेन्द्र भगवान् पूजा करने वाले के लिए चैत्य, चैत्यालय और धर्म की रक्षा करने वालों के लिए आचार्य, उपाध्याय और साधुओं के लिए, शैक्ष्य आदि सामान्य तपस्वियों के लिए, देश के लिए, राष्ट्र के लिए, नगर के लिए, प्रजा के लिए शान्ति प्रदान करें!

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय तत्त्व बोधा,

दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः।

स्तोत्रेर्जगत् त्रितय चित्र हरै रुदारैः,

स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। (2) (भक्तामर स्तोत्र)

द्वादशांग वाणी व तत्त्वज्ञान में जो चतुर हैं, ऐसे बृहस्पति द्वारा मनमोहक स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की गई है, अतः मैं भी उन आदि प्रभु की निश्चय से स्तुति करूंगा।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पाद पीठ,

स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगत त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जल संस्थित मिन्दु बिम्ब,

मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।। (3)

हे स्वामी! आपकी सेवा देवों द्वारा की गई है अतः हम भी मन्दबुद्धि होते हुए भी आपकी भक्ति करते हैं। मेरा यह प्रयास वैसा है जैसे-कोई बालक जल में पड़े चन्द्रबिम्ब को अल्पबुद्धि के कारण शीघ्र पकड़ने को दौड़ता है।

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश,

कर्तुं स्तवं विगत शक्ति रपि प्रवृतः।

प्रीत्यात्म वीर्यंमविचार मृगी मृगेन्द्रम्,

नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थम्।। (5)

हे मुनीश! जिस प्रकार कमजोर हिरणी पुत्र स्नेह के कारण अपने शिशु को बचाने के लिए शक्ति का ख्याल न करते हुए शेर से लड़ती है, उसी प्रकार मैं भी शक्ति रहित होते हुए भी आपकी स्तुति में प्रवृत्त हो रहा हूँ।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,

त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,

तच्चाम्र चारु कलिका निकरैक हेतु।। (6)

आपकी स्तुति करने में मैं अल्पज्ञानी हूँ, विद्धानों द्वारा हास्य का पात्र हूँ, लेकिन आपकी भक्ति मुझे बलात् वाचाल बना रही है। जैसे वसन्त ऋतु में कोयल से गुञ्जन कराने के लिए निश्चय से सुन्दर आम्रमञ्जरी ही मुख्य कारण है।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,

मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्।

चेतो हरिष्यति सत्तां नलिनी दलेषु ,

मुत्ताफल द्युति मुपैति ननूद बिन्दुः।। (8)

जिस प्रकार कमल के पत्ते के प्रभाव के कारण पत्ते पर पडी जल की बून्द मोती सी लगती है वैसे ही मुक्त अल्पज्ञ के द्धारा किया गया यह स्तवन सज्जनों के मन को आकर्षित करेगा तो इसमें आपका ही प्रभाव है।

आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं,

त्वत् संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।

दूरे सहस्त्र किरणः कुरुते प्रभैव,

पद्मा-करेषु जलजानि विकास भाञ्जि।। (9)

सूर्य की तो बात ही क्या जब उसकी प्रभा से ही सरोवर में कमल खिल जाते हैं, ठीक वैसे ही आपकी स्तुति तो दूर आपकी पवित्र कथा से ही प्राणियों के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

नात्यद् भूतं भुवन भूषण भूतनाथ,

भूतैर्गुणे र्भुवि भवन्तमभिष्ठुवन्तः।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोति।। (10)

हे जगभूषण! प्राणियों के स्वामी! आपके यथार्थ गुणों की भक्ति करने वाले इस पृथ्वी पर आप जैसे ही हो जाते हैं, इसमें कोई अचरज नहीं। सच्चा मालिक वही है, जो अपने आश्रित को स्वयं अपने जैसा बना ले।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,

भक्त्या मया विविध वर्ण विचित्र पुष्पाम्।

धत्ते जनो य इह कंठगता-मजस्रं,

तं 'मानतुंग'-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।। (48)

हे जिनदेव! नाना रुचि, अलंकार, पुष्पों से गूँथा गया आपका यह पावन

स्तोत्र जो व्यक्ति हमेशा भक्ति पूर्वक पढ़ता है, गाता है, याद करता है, उसे नियम से भविष्य में मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त होती है।

बाल्मीकि भी मैथुनरत क्रोंच पक्षी की जोड़ी की अवस्था/व्यथा से द्रवीभूत होकर रामायण की रचना की। यथा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वती समा।

यत्क्राँच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।।

48 कोठों के मध्य में राजा द्वारा बन्दी किये गए आचार्य मानतुंग स्वामी ने भक्तामर स्तोत्र, भस्मक रोग से पीड़ित आचार्य समन्त भद्र स्वामी (छद्म-वेश में) ने स्वयम्भू स्तोत्र, सर्पदंश से पीड़ित स्व-पुत्र की सूचना प्राप्त करके धनञ्जय कवि ने विषापहार स्तोत्र, कुष्ठरोग से आक्रान्त आचार्य वादीराज स्वामी ने एकीभाव स्तोत्र आदि की रचनाएँ की है। उपरोक्त कवियों के द्वारा उत्कट भक्ति पूर्वक स्तुति की रचना एवं स्मरण-गान से उनके स्व-स्व संकट आदि दूर हुए।

मन्त्र विज्ञान, संगीत चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा आदि से भी उपर्युक्त प्रकरण को बल मिलता है। विशेष परिज्ञान के लिए जिज्ञासु मेरी (आ. कनकनन्दी) 1. मन्त्र विज्ञान 2. शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम आदि का अध्ययन करें।

इन रचनाओं की आवश्कता-पीड़ा-प्रेरणा

मैं (आचार्य कनकनन्दी) बाल्य विद्यार्थी अवस्था से ही विभिन्न भाषाओं की देश-विदेशों की प्राचीन से लेकर आधुनिक आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, प्राकृतिक, क्रान्तिकारी कविताओं को पढ़ता-सुनता आ रहा हूँ जिसमें से श्रेष्ठ कविताओं का प्रभाव मेरे जीवन में प्रेरणास्पद है। कुछ वर्षों से हिन्दी सिनेमा के कुप्रभाव तथा कुकवियों के कारण विशेषतः हिन्दी कविता के स्तर में गिरावट हुई है और हो रही है। ऐसा ही प्रादेशिक भाषाओं की

कविताओं में भी कुछ गिरावट हो रही है। जिसका कुप्रभाव भारतीयों के ऊपर पड़ रहा है, इससे भी मुझे पीड़ा हो रही है और श्रेष्ठ कविताओं की आवश्यकता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी साहित्य आदि का अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु 2000 से विदेशी वैज्ञानिक चैनलों का विशेष अध्ययन कर रहा हूँ। इससे विदेशी वैज्ञानिकों की उदारता, व्यापकता, प्रगतिशीलता, अहिंसा, शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा, निष्पक्षता, निडरता, नम्रता, जिज्ञासा, सहज-सरलता आदि से मुझे प्रेरणा मिल रही है। 2010 को हमारा ससंघ का चातुर्मास सीपुर अतिशय क्षेत्र में हुआ। वहाँ के एकान्त, शान्त, स्वच्छ, शुद्ध वातावरण में मेरी उपरोक्त आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा ने मूर्तरूप लेकर इन कविताओं को रचा है। कविताओं के रागों को सही रूप देने में संघस्थ साधु-साध्वी, ब्रह्मचारिणियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इन सबको, अर्थ सहयोगियों को मेरा यथायोग्य प्रतिनमोडस्तु, आशीर्वाद है। प्रस्तुत कृति में कुछ कविताअें का प्रकाशन हो रहा है। शेष कविताअें का प्रकाशन आगामी कृतियों में शीघ्र होगा। इन सब कविताओं के माध्यम से स्व-पर-विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति-शान्ति हो, ऐसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ-

विशेष सूचनाः- किसी भी कविता में राग सम्बन्धी तृटियाँ हो तो सदाशयता से राग विशेषज्ञ उसे संशोधित करते हुए गायेंगे एवं हमें सूचित करेंगे।

-आचार्य कनकनन्दी

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय एवं गीत क्रमाँक	पृ.क्र.
परिच्छेद - I		
जैनधर्म (जैनधर्म से प्राप्त शिक्षाएँ)		**12-79**
1.	जैन तत्त्व वर्णमाला (जैन तत्त्व परिचय मालिका) (1)	12
2.	वर्णमाला हमें सिखाती है (वर्णमाला के आध्यात्मिक रहस्य) (2)	13
3.	धर्म का मर्म-शान्ति के कर्म (3)	17
4.	वह जैन धर्म है मेरा (4)	18
5.	सच्चा एवं मिथ्या धर्म का परिणाम (5)	19
6.	संयम सरल भी- कठिन भी (6)	20
7.	दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय (7)	21
8.	स्व-पर-विश्व कल्याणार्थे दान (उपकार) (8)	23
9.	हमारी साधना एवं सिद्धि (9)	24
10.	आहारदान विधि एवं सुफल (10)	25
11.	धर्मस्थल बने पवित्र स्थल (11)	26
12.	जैन साधुओं की अष्ट प्रवचन माता (12)	27
13.	उपेक्षित जिनवाणी व अमृत सन्देश (13)	29
14.	बहिरंग-अन्तरंग व्यसन त्याग (14)	30
15.	साधु यदि है तुम्हें सुख जो पाना (15)	31
16.	विश्व ज्ञान-विज्ञानमयी जिनवाणी (अहोभाग्य है जिनवाणी का पय जो पीये है) (16)	33
17.	स्वाध्याय का स्वरूप-विषय एवं फल (17)	34
18.	चातुर्मास महोत्सव (कविता व श्लोगान रूप में) (18)	36

19. चातुर्मास-चहुँमुखी विकास का महोत्सव (19) 37
20. जैन साधुओं के केशलोंचन (20) 38
21. भ. महावीर की जीवनी हमें सिखाती है। (21) 39
22. धार्मिक क्रियाएँ हमें सिखाती है। (22) 41
23. पिच्छी-कमण्डल-शास्त्र हमें शिक्षा देते हैं। (23) 42
24. विश्व बन्धुत्व का जीवन्त रूप समवशरण (24) 43
25. कलियुग (कलयुग) में आध्यात्म वैज्ञानिकता का महत्व (25) 44
26. मुनिसंघ आया आनन्द छाया (मुनिसंघ आगमन गीत) (26) 46
27. गुरुओं का आगमन-संग एवं विहार (गुरु सानिध्य का महत्व व पुण्य लाभ) (27) 47
28. दुराभिमान, स्वाभिमान, आत्मानुभाव (अशुभ, शुभ, शुद्ध, अहंभाव) (28) 48
29. अति ही चञ्चल है मानव मनुआ (मनजयी से विश्वजयी तथा जो मन के दास सो सब के दास) (29) 50
30. बड़ा ही उद्दण्ड है मानव मनुआ (मानव करता है- धर्म, शिक्षा, राजनीति, कानून, धन का दुरुपयोग) (30) 51
31. बड़ा ही स्वार्थी है मानव मनुआ (31) 53
32. भाव ही भाग्य एवं भावी निर्माता (भाव-गीत) (32) 54
33. सुखी होने के उपाय (33) 55
34. दुःख एवं सुख के परम उपाय (कर्मबन्ध से दुःख तो कर्म मोक्ष से सुख) (34) 57
35. श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम सत्य (विभिन्न प्रकार के सत्य) (35) 58
36. जैनधर्म में वर्णित महासत्ता एवं अवान्तर सत्ता (जैन धर्म में वर्णित ब्रह्माण्डीय विज्ञान) (36) 58
37. जन्म-जरा-मरण तथा अमृत स्वरूप (37) 60

38. जैनधर्म में वर्णित एकीकृत सिद्धान्त (M. Theory)
शाश्वतिक परिणमनशील स्थायित्व द्रव्य (सत्य)
(परिणमन शील सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड) (38) 61
39. मोक्षमार्ग एवं मोक्ष (सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः
सूत्र की व्याख्या) (39) 62
40. आहार दान के सप्त गुण (40) 63
41. आत्म धर्म तथा अनात्त धर्म (41) 64
42. भाव ही सर्व सुन्दर (42) 65
43. सम्पूर्ण विकास के सूत्र (43) 66
44. राजतन्त्र या लोकतन्त्र में भी पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं
(परम आध्यात्मिक स्वतंत्रता की कविता) (44) 67
45. दशविध आध्यात्मिक वैश्विक धर्म (45) 70
46. उत्तम क्षमा धर्म (46) 71
47. विकास के लिए त्याग करो या दान (47) 72
48. हे माँ जिनवाणी हमारी रक्षा करो, सबको शिक्षा दो (48) 74
49. अध्यात्म प्रकाश से जागृति (आध्यात्मिक जागरण गीत) (49) 75
50. सत्य परमेश्वर की स्तुति (संकीर्तन) (50) 76
51. सम्यग्ज्ञान की स्तुति (ज्ञान संकीर्तन) (51) 77
52. रत्नत्रय/मोक्षमार्ग कीर्तन (52) 78
53. नव देवता कीर्तन (53) 79

परिच्छेद - II

विज्ञान एवं गणित का सच्चा तथा व्यापक स्वरूप 80-91

54. धर्म रहित विज्ञान अन्धा, अवैज्ञानिक धर्म पंगु। (1) 80
55. ब्रह्माण्ड की कहानी (ब्रह्माण्डीय व्यवस्था/प्रबन्ध) (2) 82

56. विश्व का सही विकास- धर्म और विज्ञान के सहयोग से (3) 83
57. गणित मेरा नाम है, सबसे बड़ा काम है।
(लौकिक एवं अलौकिक गणित की आत्मकथा) (4) 85
58. गणित के मौलिक संख्या एवं पद्धति हमें सिखाते।
(संख्या एवं पद्धति के आध्यात्मिक रहस्य) (5) 87
59. प्राचीन एवं आधुनिक वैज्ञानिकों का संक्षिप्त परिचय
(भौतिक वैज्ञानिक से आध्यात्मिक महावैज्ञानिक
तक का स्वरूप व फल) (6) 88
60. विज्ञान के अन्धकार पक्ष (विज्ञान के दुरुपयोग से विनाश) (7) 90
61. विज्ञान की उज्ज्वल गाथा (विज्ञान का वरदान-विज्ञान गीत) (8) 91
परिशिष्ट- 1. उत्तमक्षमा आदि दशधर्म 107-109
परिशिष्ट- 2. आ.कनकनन्दी ससंघ की नियमावली 110-112

आ.कनकनन्दी साहित्य कक्ष की सूची

राग संशोधन के सहयोगी :- (1.) मुनि सुविज्ञसागरजी (2.) मुनि आध्यात्मनन्दी जी (3.) आर्यिका क्षमाश्री माताजी (4.) ब्र.फाल्गुनी दीदी (5.) ब्र.विधि दीदी (6.) कनकप्रभा हाडा (7.) वन्दना जैन (8.) अर्चना जैन (जयपुर)
सहयोगी-ब्रजलाल जैन (सेमारी)

परिच्छेद - I

जैनधर्म (जैनधर्म से प्राप्त शिक्षाएँ)

-: जैन तत्त्व वर्णमाला (1) :- ... (स्लो-गन)

(जैन तत्त्व परिचय मालिका)

रागः हे गुरुवर! हे मुनिवर!

सत्य अहिंसा नारा है-- सबसे हम को प्यारा है।
पञ्चपरमेष्ठी प्यारा है-- जग में सब से न्यारा है।
अनेकान्त सिद्धान्त प्यारा है-- समस्या समाधान सारा है।
स्याद्वाद कथन प्यारा है-- वचन पद्धति न्यारा है।
पञ्च अणुव्रत प्यारा है-- वैश्विक कानून सारा है।
पञ्च महाव्रत प्यारा है-- बन्ध. मुक्ति का सहारा है।
अनर्थदण्ड व्रत प्यारा है-- पर्यावरण सुरक्षा/(रक्षा) सारा है।
पञ्च समिति प्यारा है-- नैतिकाचार सारा है।
उत्तम दशधर्म प्यारा है-- वैश्विक धर्म सारा है।
षोढ़ष कारण प्यारा है-- तीर्थेश पद का सहारा है।
द्वादश/(बारह) अनुप्रेक्षा प्यारा है-- तात्त्विक चिन्तन सारा है।
चौदह गुणस्थान द्वारा है-- आत्म सोपान सारा है।
षट्लेश्या वर्णन सारा है-- मनोवैज्ञानिक सारा है।
सप्त व्यसन सारा है-- प्रमुख पतन द्वारा है।
प्रथम अनुयोग प्यारा है-- विश्व इतिहास सारा है।
करण अनुयोग प्यारा है-- गणितीय वर्णन सारा है।
चरण अनुयोग प्यारा है-- चारित्र वर्णन सारा है।
द्रव्य के अनुयोग प्यारा है-- वैश्विक व्यवस्था सारा है।

सम्यक् दर्शन प्यारा है--	आत्म/(सत्य) दर्शन के द्वारा है।
सम्यक् ज्ञान प्यारा है--	सत्य ज्ञान के द्वारा है।
सम्यक् चारित्र प्यारा है--	पवित्र आचरण द्वारा है।
जीव द्रव्य सबसे न्यारा है--	सच्चिदानन्द प्यारा है।
पुद्गल द्रव्य भी न्यारा है--	वैश्विक रचना सारा है।
धर्म द्रव्य भी न्यारा है--	सर्वगति में सहारा है।
अधर्म द्रव्य भी न्यारा है--	सर्व स्थिति में सहारा है।
आकाश द्रव्य भी न्यारा है--	सर्व अवकाश में सहारा है।
काल द्रव्य भी न्यारा है--	परिणमन में सहारा है।
आस्रव बन्ध के द्वारा है--	संसार भ्रमण सारा है।
संवर निर्जरा द्वारा है--	भवनाश के सहारा है।
पाप पदार्थ द्वारा है--	संसार दुःख सारा है।
पुण्य पदार्थ द्वारा है--	संसार सुख सारा है।
सर्वकर्म नष्ट द्वारा है--	मोक्ष तत्त्व मिले सारा है।
मोक्ष तत्त्व के द्वारा है--	आत्म सुख मिले सारा है।
जैनधर्म का नारा है--	वैश्विक शान्ति सारा है।

वर्णमाला हमें सिखाती है! (2)

वर्णमाला के आध्यात्मिक रहस्य

राग:- 1.अच्छा सिला दिया.... 2.नगरी-नगरी.... 3.मन तड़पत हरि दर्शन...

-: स्वरों से प्राप्त शिक्षाएँ :-

1. 'अ' हमें सिखाता है अरिहन्त बन, घातिया नाश से सर्वज्ञ बन।
2. 'आ' हमें सिखाता है आचार्य बन, स्व-पर आचार से धार्मिक बन।

3. 'इ' हमें सिखाता है इन्द्रियजयी बन, आत्मजयी बनकर विश्वजयी बन।
4. 'ई' हमें सिखाता है ईर्ष्यात्याग कर, सहिष्णु बनकर आत्महित कर।
5. 'उ' हमें सिखाता है उदारभावी बन, वसुधैव कुटुम्ब के अनुयायी बन।
6. 'ऊ' हमें सिखाता है ऊर्ध्वगामी बन, उत्कृष्ट भावना से गुणश्रेणी चढ़।
7. 'ऋ' हमें सिखाता है ऋषभ बन, आध्यात्मिक साधना से धर्ममय बन।
8. 'ॠ' हमें सिखाता है ऋषित्व पाओ, आत्मिक शक्ति से ऋद्धित्व/(सिद्धत्व) पाओ
9. 'ए' हमें सिखाता है एकत्व बन, एकत्व भावना से कर्मशत्रु हन।
10. 'ऐ' हमें सिखाता है ऐश्वर्य पाओ, सांसारिक ऐश्वर्य से विमुक्ति पाओ।
11. 'ओ' हमें सिखाता है ओघहर बन, संसार नाशकर परमात्मा बन।
12. 'औ' हमें सिखाता है औदायिक त्याग, क्षायिक/(समता) भाव से परभाव त्याग।
13. 'अं' हमें सिखाता है अमोघ बन, कर्मशत्रु को भी परास्त कर।
14 'अः' हमें सिखाता है अस्तगमन बनो, पापों के अस्त से पावन बनो।

-: व्यञ्जनों से प्राप्त शिक्षाएँ :-

(क वर्ग)-

15. 'क' हमें सिखाता है कल्याण करो, स्व-पर कल्याण हेतु विचार करो।
16. 'ख' हमें सिखाता है 'ख' सम बनो, आकाश/(गगन) सदृश्य उदार बनो।
17. 'ग' हमें सिखाता है गम्भीर बनो, तुच्छता का भाव उर न धरो।
18. 'घ' हमें सिखाता है घाती विनाशो, आध्यात्म ज्योति को स्व में प्रकाशो।
19. 'ङ' हमें सिखाता है अङ्ग ही बनो, विशुद्ध भाव को मन में धरो।

(च वर्ग)-

20. 'च' हमें सिखाता है चर्चा सु करो, पाप सम्वर्द्धक चर्चा कभी न करो।

21. 'छ' हमें सिखाता है छल न करो, छल के कुफल खाया न करो।
22. 'ज' हमें सिखाता है जन्म को नाशो, अमृत पदवी को शीघ्र प्रकाशो।
23. 'झ' हमें सिखाता है झस ध्वज नाशो, आत्मरमण में शर्म को पाओ/(प्रकाशो)।
24. 'ञ' हमें सिखाता है स्वज्ञायक बनो, ज्ञायक भाव से सर्वज्ञ बनो।

(ट वर्ग)-

25. 'ट' हमें सिखाता है टरटराना त्यागो, मौनभाव से आत्म को भजो।
26. 'ठ' हमें सिखाता है ठहर जाओ, अनादि भ्रमण विश्रान्ति पाओ।
27. 'ड' हमें सिखाता डम्बरू अकार भाव, त्याग करके भज सरल भाव।
28. 'ढ' हमें सिखाता है ढकोसला को छोड़, घनीभूत ज्ञान से स्वयं को जोड़।
29. 'ण' हमें सिखाता है णमोकार स्मरण, भवभय हरण सब सुख कारण।

(त वर्ग)-

30. 'त' हमें सिखाता है तपस्वी बनो, तटस्थभाव से संसार तरो।
31. 'थ' हमें सिखाता है थकान त्यागो, अविश्रान्त भाव से पाप को त्यागो।
32. 'द' हमें सिखाता है दयालु बनो, विश्वबन्धुत्व को धारण करो।
33. 'ध' हमें सिखाता है धर्म को धारो, अधर्मभाव को त्याग ही करो।
34. 'न' हमें सिखाता है नमन करो, नमनीयों को प्रमाण/(स्मरण) करो।

(प वर्ग)-

35. 'प' हमें सिखाता है पवित्र बनो, पावन भाव से कर्त्तव्य करो।
36. 'फ' हमें सिखाता है फलीभूत बनो, गरिमामय हो विनम्र बनो।
37. 'ब' हमें सिखाता है बन्धन त्यागो, विमुक्त भाव से शान्ति को भोगो।
38. 'भ' हमें सिखाता है भक्त भी बनो, भक्ति से भगवत् पदवी पाओ।
39. 'म' हमें सिखाता है मद को त्यागो, विनम्र भाव से सत्य को भजो।

(मध्यम वर्ण)-

40. 'य' हमें सिखाता है यम नियम पालो, अनुशासन से विकास करो।

41. 'र' हमें सिखाता है रक्षक बनो, स्व-पर की रक्षा से महान् बनो।

42. 'ल' हमें सिखाता है लक्ष्य को साधो, आत्मलक्ष्य छोड समस्त त्यागो।

43. 'व' हमें सिखाता है वरण्य बनो, विशेष गुणों से विशिष्ट बनो।

(ऊष्म वर्ण)-

44. 'श' हमें सिखाता है शमथ बनो, शान्तचित्तता से आत्मा भजो।

45. 'ष' हमें सिखाता षड्रिपु को हनो, अरिहन्त बनकर सिद्ध बनो।

46. 'स' हमें सिखाता है सरल बनो, मिथ्या माया त्यागकर पावन बनो।

47. 'ह' हमें सिखाता है हतक्लेशी बनो, प्रशान्त भाव में निवास करो।

(संयुक्त वर्ण)-

48. 'क्ष' हमें सिखाता है क्षमा धारण करो, क्षमा से मोक्ष पाओ अक्षय वरो।

49. 'त्र' हमें सिखाता है त्रयरत्न धारो, विमुक्त मार्ग में विहार करो।

50. 'ज्ञ' हमें सिखाता है 'ज्ञ' स्वभावी बनो, आत्मज्ञ बनकर विश्वज्ञ बनो।

(रागः ऐ दिल मुझे बता दे)

अक्षर है अविनाशी सत्य शिव सुन्दर,
शब्दब्रह्म परब्रह्म भेद रूप है अक्षर।
परब्रह्म वाचक है शब्द ब्रह्म अक्षर,
अव्यक्त ब्रह्म/(आत्म) वाचक व्यञ्जक है अक्षर।
वाच्य है आकार शब्द सादि और नाशक,
परम ब्रह्म शाश्वत निराकार वाचक।
अतएव अक्षर से शिक्षा लेते पाठक,
इसके बिना केवल तोता सम पाठक।

मन्त्र भी है बीजाक्षर हर मन्त्र अक्षर,

हर वाक्य पदमय हर पद है अक्षर।

पद से ही पद्य गद्य सूत्र ग्रन्थ रचना,

अतएव ज्ञानमय हर अक्षर है रचना/(संरचना)।

मैं तो बालक सम विद्यार्थी, शिक्षा लेता जड़ या चेतन।

'कनकनन्दी' का गुणग्राही भाव, मधुकर सम गुण संचयन।।

झाड़ोल (स.) दि- 19-5-2011 रात्रि 11.47

धर्म का मर्म - शान्ति के कर्म (3)

(तर्ज- 1. मेरी भावना... 2. हूँ स्वतंत्र...)

सत्य समता शान्ति का काम, यथार्थ से है धर्म का नाम,

रागद्वेष मोह युक्त जो काम, धर्म नहीं है अधर्म काम।

क्लेश विद्वेष ईर्ष्या विभ्रम, धर्म के नाम कषायी काम,

अज्ञानी मोह जाने अनजाने, अधर्म करे धर्म के नाम।। (1)

केवल सत्ता सम्पत्ति मान, इससे नहीं आत्मा की शान,

सत्य समता शान्ति सम्मान, इससे है आत्मा की शान।

उदारता और निर्मल भाव, सर्वजीव प्रति हो सद्भाव,

निष्काम काम अवैर भाव, विश्वशान्तिकर यह ही भाव।। (2)

अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्म, अपरिग्रह है सब के धर्म,

क्रोध मान माया लोभ त्याग, शान्ति समता का यह मर्म।

इसके बिना अन्य सब उपाय, होते सब बाह्य कर्म,

बाह्य कर्म से ही सब धर्म, शान्ति समता माने अधम।। (3)

लोहे के कण उत्तर दक्षिण, होते व्यवस्थित अवस्थान,

चुम्बक बन जाता है लोहा, स्वशक्ति से होता गुणवान्।
ऐसा ही जब जीव स्वगुण को, करता स्व में अवस्थान,
नर से नारायण बनकर, बन जाता है भक्त भगवान्।। (4)

आध्यात्म धर्म है आत्म का मान, उसका फल है शान्ति महान्,
भौतिकता व बाह्य क्रिया में, इसे मानना दोष महान्।
भौतिकता मानो भोजन सम, आध्यात्मिक है प्राण समान,
प्राण बिना भोजन क्या काम, आत्म बिना धर्म-भौतिक जान।। (5)

कनकनन्दी सदा यह भाये, जग में सभी जीव सुख पाये,
वैर विरोध ईर्ष्या और द्वेष, त्याग कर जीव मंगल गाये।
परस्पर हो वात्सल्य भाव, उदारभाव सब जन मन भाये,
तन मन आत्मिक विकास पाये, सर्वात्म कल्याण जग में छाए।। (6)

वह जैन धर्म है मेरा (4)

तर्ज- (जहाँ डाल-डाल पर .....)

एकान्त संकीर्ण पंथवाद से रहित सापेक्ष वाला।
वह जैन धर्म जग आला, वह विश्व धर्म है निराला
वह आत्म धर्म है प्यारा, वह सत्य धर्म है न्यारा।।
जिस धर्म के प्रचारक होते हैं तीर्थंकर गणधर प्यारा।। वह जैन....
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... जय जिनवरम् SSS (टेक)...
जिस धर्म के अनुयायी होते हैं, सम्यक्दृष्टि न्यारे, सम्यग्दृष्टि न्यारे
सम्यग्दृष्टि हो सकते हैं, नर, नारक, पशु, देव सारे। [2]
जो मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी को, निरस्त करने वाला। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (1)

आध्यात्म विकास श्रेणी में चढ़कर, जीव होते हैं जिनवरा[2],....
आत्मशुद्धि का धर्म यही, वसुधैव कुटुम्बकम् धारा।[2].....
स्वयं ही स्वयं का करता धरता, निर्माण करने वाला।।। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (2)
भौतिकता से ऊपर उठकर, वैश्विक विचार वाला[2],
जहाँ न अपना न कोई पराया, है आत्मिक विचार वाला ....
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य अचौर्य वाला। ।। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (3)
क्षमा, मृदुता, सरल, सहजता, आकिंचन्य धर्म वाला[2],
आत्म अन्वेषण विश्व गवेषणा, आध्यात्म संस्कृति वाला[2]।...
'कनकनन्दी' का आत्म धर्म है, वैश्विक कल्याण वाला।। वह जैन....
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (4)

सच्चा एवं मिथ्याधर्म का परिणाम (5)

चौपाई (रागः हूँ स्वतंत्र ...)

धर्म के दो भेद प्रमुख ही जानो
बाह्य आभ्यन्तर सर्वत्र मानो,
बाह्य भेद है शरीर समाना
आभ्यन्तर भेद प्राण है मानो।। (टेक)

अंतर भेद है सत्य व समता, पवित्रता व क्षमा सहजता
दयालुता व विश्वबंधुत्व, उदार भाव प्रेम बखानो।। धर्म.....
बाह्य भेद है पूजा आराधना, पर्व व उत्सव भौतिक साधना
भगवान् का नाम है जपना, तीर्थयात्रा तन यंत्रणा जानो।। धर्म....
प्राण बिना यह देह है त्यजनीय, अंतर धर्म बिन बाह्य वर्जनीय

प्राण बिना यथा शरीर शव है, अन्तर धर्म बिना क्लिव मानो।। धर्म....

यथा ही शव सड़ता व गलता, दुर्गंध रोगाणु सर्वत्र फैलता

तथाहि अंतरंग धर्म बिना, बाह्य धर्म को अधर्म ही जानो।। धर्म....

इसी ही कारण धर्म नाम पे, असत्य अन्याय भी है बढ़ता

हिंसा युद्ध व आतंकवाद, धर्म के आड़ अधर्म मानो।। धर्म....

कनकनंदी निज आत्म ध्यान से, निज आतम में रमण है करते

मुक्ति मार्ग पे अविचल चलके, निज आतम कल्याण ही जानो।। धर्म....

दोहा - सच्चे धर्म से मानव बन जाता भगवान्।

मिथ्या धर्म से मानव बन जाता हैवान्।।

संयम सरल भी कठिन भी (6)

तर्ज- (आत्मशक्ति से ओतप्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो....)

आत्म संयम है सबसे सरल, सबसे कठिन जानो रे.....2

स्व से नियन्त्रित होना सरल है, पर निरपेक्ष मानो रे.....2 ।।टेक।।

स्व-नियन्त्रण सबसे कठिन है, मन असंयम होने से।

मन जयी तो आत्मसंयमी है, मन करे मनमानी रे।।आत्म संयम।। (1)

आत्मसंयमी सो विश्व विजयी है, असंयमी दीन-हीन रे।

संयम से ही कर्म परजयी, होते हैं महान् जन रे।।आत्म संयम।। (2)

संयम निमित्त कषाय विजय है, सबसे प्रमुख जानो रे।

इन्द्रिय विजय भी अनिवार्य है, जीवों की रक्षा करो रे।।आत्म संयम।। (3)

संयम के बिना सुख न शान्ति है, विकास विनाश जानो रे।

संयम हीन से आरोग्य हानि, संयम अमृत जानो रे।।आत्म संयम।। (4)

संयम के बिना कार भी बेकार, धन-जन की हानि रे।

प्रकाश गति संयम सहित है, कार सम नर जयी रे।।आत्म संयम।। (5)

दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय (7)

तर्ज- (दुःख से घबराओ.... श्रीपाल चरित्र, दुःखिया सब संसार)

दुःख के बहुविध स्वरूप है जानो,

संख्य असंख्य अनन्त प्रमाण।

यथा विध कर्म तथा विध दुःख,

संकल्प-विकल्प प्रमाण भी दुःख।।(2)।। (टेक)

यथा विध पाप तथा विध दुःख, विषय कषाय प्रमाण भी दुःख-2

यथा विध व्यसन तथा विध दुःख, बहु विध भय प्रमाण भी दुःख-2

दुःख.....

यथा विध अहंकार तथा विध दुःख, बहु विध ममत्व प्रमाण भी दुःख-2

यथा विध अज्ञान तथा विध दुःख, नाना विध कुज्ञान प्रमाण भी दुःख।।

दुःख.....

यथा विध चिन्ता तथा विध दुःख, नाना विध शंका प्रमाण भी दुःख-2

विभिन्न भ्रष्टाचार सम दुःख जानो, संकीर्णता सम दुःखों को मानो।।

दुःख.....

शारीरिक रोग प्रमाण भी दुःख, मानसिक रोग समान भी दुःख-2

असत्य कटु वचन प्रमाण भी दुःख, विविध समस्या समान भी दुःख।।

दुःख.....

यथा विध तृष्णा तथा विध दुःख, नाना विध कमी प्रमाण भी दुःख-2

प्रतिशोध भाव प्रमाण भी दुःख, आकर्षण-विकर्षण समान दुःख।।

दुःख.....

व्यक्तिगत दुःखी

नया तर्ज- (मेरा जूता है जापानी.....)

कोई धन से दुःखी तो कोई मन से दुःखी,
कोई वचने दुःखी तो कोई जन से दुःखी।
कोई तन से दुःखी तो कोई रोग से दुःखी,
कोई क्रोध से दुःखी तो कोई मान से दुःखी।।
कोई माया से दुःखी तो कोई लोभ से दुःखी,
कोई मोह से दुःखी तो कोई काम से दुःखी।
कोई फैशने दुःखी तो कोई व्यसने दुःखी,
कोई भय से दुःखी तो कोई मद से दुःखी।।
कोई अज्ञाने दुःखी तो कोई कुज्ञाने दुःखी,
कोई चिन्ता से दुःखी तो कोई शंका से दुःखी।
कोई कुधर्मे दुःखी तो कोई अधर्मे दुःखी,
कोई जन्म से दुःखी तो कोई मरणे दुःखी।।
कोई वैभवे दुःखी तो कोई अभावे दुःखी,
कोई संयोगे दुःखी तो कोई वियोगे दुःखी।।

सुख-स्वरूप एवं सुख-प्राप्ति के उपाय

नया तर्ज- (जय हनुमान ज्ञान.....)

सुख के स्वरूप अभी तुम जानो, सुख प्राप्ति के उपाय मानो।
निज शुद्ध आत्म तो सच्चिदानन्द, अव्यय अविकारी ज्ञानानंद।।
समता शुचिता संतोष भाव, क्षमा सरलता सहज भाव।
अहिंसा नम्रता आकिंचन्य भाव, धैर्य एकाग्रता संयम भाव।। (1)

संकल्प-विकल्प रहित भाव, भय चिंता से मुक्त स्वभाव।

विषय कषाय विवर्जित भाव, फैशन व्यसन से मुक्त स्वभाव।। (2)

ध्यान अध्ययन सहिष्णु भाव, दोष विरहित निर्मल भाव।

विवेक गुणग्राही उदार भाव, कर्मबंध से रहित स्वभाव।। (3)

स्वभाव सुख तो विभाव ही दुःख, मोक्ष ही सुख तो बंधन दुःख।

विषमता दुःख तो समता सुख, शुद्ध ही सुख है तो अशुद्ध दुःख।। (4)

इन सब भावों में होता है सुख, पराधीन रहित आत्मिक सुख।

''कनकनन्दी'' तो भावना भाये, स्व-पर-विश्व में सुख हो जाये।। (5)

स्व-पर-विश्वकल्याणार्थे दान-(उपकार) (8)

छन्द-चौपाई

स्व उपकार के निमित्ते, करे जो पर उपकार।

सो दान सहयोग है, स्व-पर कल्याण कार।।

उपकार हो सदा दान निमित्ते, निःस्वार्थ भावना हो सदा चित्ते।

भौतिक लाभ न ख्याति पूजा, निर्मल भाव रहे सदा सत्त्वे।। (1)

साधु-सन्त व गुणी जनों को, आहार औषधि शास्त्र दान को

वसतिका शुद्ध उपकरणों को, दिया जाये सो श्रेष्ठ पात्रों को।। (2)

श्रम-उपसर्ग दूर जो करना, मार्ग प्रदर्शन यात्रा करना।

आज्ञा पालन विनय है करना, वैयावृत्ति दान निदाना।। (3)

उपकार करना माता-पिता का, प्रथम कर्त्तव्य गृहस्थ जनों का।

परिवार व समाज जनों का, उपकार करना धर्मीजनों का।। (4)

पशु-पक्षी विधर्मीजनों का, गरीब रोगी वृद्ध जनों का।

उपकार करना दयादत्ति जानों, नैतिक कर्त्तव्य गृहस्थों का मानों।। (5)

आहार दान से वैभव पाये, ज्ञान दान से ज्ञान जो पाये।

औषधि दान से निरोग शरीरा, अभयदान से अपमृत्यु दूरा।। (6)

वैयावृत्ति महापुण्य होय, तीर्थंकर पदवी भी पाय।

दयादत्ति अनुकम्पा होती, जिससे जीवों की रक्षा होती।। (7)

आहारदान से क्षुधा निवारण, औषधि दान से रोग उपशमन।

पर्यावरण रक्षा अभयदान से, आत्म सुरक्षा ज्ञान दान से।। (8)

परस्पर उपग्रहो नीति बताती, उदार पुरुषाणां गाथा है गाती।

वसुधैव कुटुम्बक प्रज्ञा बताती, उपकार करना वैश्विक नीति।। (9)

''हमारी साधना एवं सिद्धि'' (9)

तर्ज= सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे....

सत्य धर्म को प्राप्त करेंगे - मिथ्या का बहिष्कार करेंगे ।
पापों का परिहार करेंगे - शुभ भावों को प्राप्त करेंगे ।।
सभी व्यसन का त्याग करेंगे - सदाचार को नित पालेंगे ।
अहंकार न कभी करेंगे - विनय भाव को सदा धरेंगे ।।
कायर कभी न हम बनेंगे - स्वाभिमान से आगे बढेंगे ।
गुणग्राही हम सदा बनेंगे - गुण-गुणी बहुमान करेंगे ।।
दयाभाव को सदा धरेंगे - क्रूरभाव से सदा बचेंगे ।
विवेकवान् सदा बनेंगे - गुणग्राही हम सदा रहेंगे ।।
क्षमा भाव को हृदय धरेंगे - वैर भाव से दूर रहेंगे ।
मायाचारी से दूर रहेंगे - सरल भाव को सदा धरेंगे ।।
लोभभाव को नहीं करेंगे - भ्रष्टाचारी नहीं बनेंगे ।
दान-सेवा सदा करेंगे - परोपकारी हम बनेंगे ।।

रुढ़िवादी नहीं बनेंगे - प्रगतिशील हो आगे बढ़ेंगे ।
सदा संस्कारवान् बनेंगे - कुत्सित आचार नहीं करेंगे ।।
सात्त्विक आहार हम करेंगे - सत्यवादी भी हम बनेंगे ।
सच्चे ज्ञानी हम बनेंगे - सत्य का शोध सदा करेंगे ।।
आत्मज्ञानी हम बनेंगे - साधु बनकर ध्यान करेंगे ।
कर्म नाशकर मोक्ष जायेंगे - सच्चिदानन्द हम बनेंगे ।।

आहारदान विधि एवं सुफल (10)

तर्ज- ((1) नाम तिहारा--- (2) नगरी-2--- (3) राज चरणमां--- (4) माईन --- (5) चाँदी की दीवार न तोड़ी)

बड़ा सुख पाया, आनंद हुआ, गुरुवर को आहार दिया।
मन वच काय प्रासुक होकर, गुरुवर को जब पड़गाया।।
नमोडस्तु अत्र अत्र भो स्वामिन्, कहकर त्रिकरण शुद्धि कहा,।
त्रिपरिक्रमा करके गुरु की भक्ति से निवेदन भी किया।।
गृह में प्रवेश कराकर के, गुरुवर को उच्चासन भी दिया। ... (1)
प्रासुक जल से (पाद) प्रक्षालन कर, गन्दोधक भी लिया।।
नमोडस्तु कहकर अष्टद्रव्य से, (है) पूजार्चना भी किया।
आहार परोसा निवेदन किया, नवधा भक्ति प्रगटाया।। ... (2)
मन वच काय आहार शुद्धि, ग्रहण हेतु भी कहा।
अंतराय टाल सप्त गुण युत, आहार करो आवेदन किया।।
गर्भस्थ शिशु सम भाव से युत, प्रासुक मैंने आहार दिया। ... (3)
आहार अनन्तर शुद्धि कराकर, पिच्छीका भी प्रदान किया।।
जयकार युक्त गद्गद् मन से गुरुवर को प्रणाम किया।

कमण्डल में प्रासुक जल भरकर, वसतिका में ले गया।। ... (4)
पहुँचा करके श्रीगुरु चरणों में, भक्ति से प्रणाम किया।
मानव जन्म को सफल बनाकर, आनन्द ही आनंद हुआ।।
नवधा भक्ति सप्तगुण सहित, आहार गुरु को जो देता।
मिथ्यादृष्टि भी भोगभूमि पा, वहाँ से स्वर्ग को जाता।। ... (5)
वहाँ से मानव जन्म ही पाकर, तीन जन्म में सुख पाता।
सम्यग्दृष्टि तो स्वर्ग पाकर, मानव जन्म को है पाता।। ... (6)
मुनि बनकर साधना करके, शाश्वतिक सुख पाता।
पुण्यप्रदायक आनंददायक स्वर्ग मोक्ष के सुख दाता।।
आहारदान है जो भव्य करे, सर्वथा मंगल ही पाता। ... (7)

सेमारी 8-4-2011 रात्रि- 4.20

धर्मस्थल बने पवित्र स्थल (11)

(रागः 1. नगरी-नगरी... 2. चन्दा मामा दूर के...)

मन्दिर मस्जिद गिरजाघर में तू खोजे भगवान् रे,
हर प्राणी में प्रभु विराजे इस सत्य को बिन जान रे?
बीज में वृक्ष है तिल में तैल काष्ट में अग्नि समान रे,
हर प्राणी में प्रभु विराजे सुप्त गुप्त के भाव से ।। --- (1)

दूध न मिले सींग दोहने से, जड़ में न होता ज्ञान रे,
आकाश निचोड़े पानी न मिले, रेत से मिले न तैल रे। ... 2
विद्यालयों में विद्या न होती, वहाँ होता विद्यादान रे,
धर्मस्थलों में धर्म न होता, वहाँ होता धर्मज्ञान रे।।--- (2)

धर्मस्थलों में ही भगवान् नहीं, वे तो आराधना स्थल रे,

आराधना बिना धर्मस्थल भी, असाधारण नहीं स्थल रे। ... 2
साधना करे जहाँ आराधक, वह सत् आराधना स्थल रे,
जहाँ भी होता विद्या अध्ययन वह विद्या-स्थल रे।।--- (3)

भाव में बसे भगवान् हैं, भाववान् भाग्यवान् है,
भाग्यवान् ही भगवान् बने, इसलिए भाव प्रधान है। ... 2
सत्य समता पवित्र भाव ही, भाव की सही पहचान है,
भाव ये बनते जिस क्षेत्र में, वह सत् धर्मस्थान है।।--- (4)

भाववान् न संकीर्ण होता, भेद भाव से परे है,
कट्टर क्रूरता हिंसाभाव से, होता सर्वथा दूर है।
सर्वजीव में मित्रता भाव, वैर विरोध से दूर है,
कूट कपट मिथ्याभाव से, होता सर्वथा दूर है।।--- (5)

इससे विपरीत धर्मस्थल में, होते अपवित्रभाव हैं,
धर्मस्थल में अपवित्र भाव से, होते अधिक पाप हैं। ... 2
पवित्र भाव करने हेतु, धर्मस्थल जो जाता है,
उसके लिए वह धर्मस्थल है, अन्य हेतु नहीं होता है।।--- (6)

विद्यादान यदि न हो तो कैसे होगा वह विद्यालय,
फैशन व्यसन पाप हेतु यदि जाता है कोई विद्यालय।
तथाहि धर्मस्थल के लिए होता है यह नियम सदा,
'कनकनन्दी' की भावना धर्मस्थल हर तीर्थक्षेत्र बने सदा।।--- (7)

जैन साधुओं की अष्ट प्रवचन माता (12)

तर्ज- (1. यमुना किनारे श्याम... 2. इक परदेशी...)

सुनो हे साधु तेरी माता की कथा, जिससे मिटेगी तेरी संसार व्यथा।

त्रय गुप्ति सहित पंच समिति जानो, आत्म रक्षा निमित्त माता ही मानो।।
शरीर का जन्म तो नारी माता देती है, मोक्ष निमित्ते अष्ट माता होती है।।

असत्य, अहित, अमित बोला न करो, हित, मित, प्रिय वच बोला ही करो।
साधना यदि है मौन पाला भी करो, मन, वच, काया को गुप्त भी करो,
इससे ऊर्जा संचय होता है अधिक, पाप का संवर भी होता है अधिक।। सुनो-

मन को स्वात्मा में स्थिर करते रहना, अन्य विषयों से निवृत्त होते रहना।
मनो गुप्ति उसे कहते हैं जानो, दुःख निवृत्ति के मुख्य कारण हैं मानो।।
वचन क्रिया से निवृत्त होते रहना, वचन की गुप्ति है आगम में माना।। सुनो-

दोनों गुप्ति युक्त काय क्रिया की निवृत्ति, आगम में वर्णित सो काया की है गुप्ति।
गुप्ति से कर्मों की होती है निवृत्ति, इससे ध्यान की भी होती है सिद्धि।
ध्यान से सम्पूर्ण कर्म विनाश होता है, जिससे जीवों को मोक्ष मिलता है।। सुनो-

गुप्ति से होती है पूर्ण निवृत्ति, कठिन साधना से होती है सिद्धि।
गुप्ति अभाव में हो सम्यक्वृत्ति, जिसे कहते हैं पंच समिति।
ईर्या, भाषा व एषणा समिति होती, आदान-निक्षेपण प्रतिष्ठापन समिति।। सुनो-

जीवों की रक्षा करते चलना है ईर्या, हित-मित-प्रिय वच कहना है भाषा।
आत्मकल्याणार्थे सात्विक आहार एषणा, दोष विवर्जित दिन में ग्रहण करना।
जीवों की रक्षा सहित उपकरण रखना, आदान-निक्षेपण समिति आगम माना।। सुनो-

जीवों की रक्षा मलमूत्र विसर्जन, प्रतिष्ठापन समिति पर्यावरण रक्षण।
साधुओं की अष्टमाता इसे ही जानो, इसके बिन न मोक्ष मिले सो मानो।
माता के समान रक्षा यह करती, इसलिए प्रवचन माता ही होती।।

उपेक्षित जिनवाणी का अमृत संदेश (13)

तर्ज- (1. होठों पे सच्चाई रहती है... 2. हाँ तुम बिल्कुल)

मैं जिनवाणी सर्वज्ञवाणी सबसे उपेक्षित मैं दिव्यवाणी।
सर्वज्ञसुता मैं सरस्वती मेरे (हैं) पुत्र गणधर ज्ञानी।। (टेक)
मेरी सन्तति आचार्य यती पाठक साधुसंत आर्यिका सती
मेरी कोख से जन्म लेते हैं ज्ञान-विज्ञान भाषा संस्कृति।। ज्ञान---
तथापि मुझे कोई न जाने न माने हैं वे मंदमती
जो भव्य जाने जो भव्य माने सो ही बनें मोक्षपति।। सो--- (1)
पढ़ाई-बढ़ाई चमड़ी-दमड़ी में लगे रहते हैं मूढ अज्ञानी
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि डिग्री को ही सब कुछ माने अज्ञानी।। को---
कोई मुझे पढ़े पर गुने नहीं अतः हैं वे पंथ मतगामी
स्वार्थ में मेरा करे उपयोग स्व-पर घातक अन्धश्रद्धानी।। स्व-पर-(2)
अनेकान्त को एकान्तवाद रूप में वीतराग को वित्तराग में माने
परमार्थ को स्वार्थरूप में आत्मसिद्धि को प्रसिद्धि रूप माने।। आत्मसिद्धि--
मैं जो बताऊँ ज्ञान-विज्ञान आत्मिकज्ञान में नहीं है रुचि
किंतु अढाई वर्ष आयु से पढ़ने-पढ़ाने में होती है रुचि।। पढ़ने--- (3)
मेरा ज्ञान तो अनंतज्ञान लौकिक अलौकिक आध्यात्मज्ञान
लौकिकज्ञान भौतिकज्ञान तथापि मेरा न लेता ज्ञान।। तथापि---
ऊँट को यथा नीम सुहाये मोही को लौकिकज्ञान ही भाये
इसलिए मैं होती उपेक्षित उल्लू को यथा सूर्य न भाये।। उल्लू--- (4)
''कनकनन्दी'' का सुनो आह्वान स्वाध्याय से तुम नाश करो अज्ञान
अमृत समान मेरा है ज्ञान समस्त दुःखों के नाशक ज्ञान।। समस्त---
मैं जिनवाणी सर्वज्ञवाणी सबसे उपेक्षित मैं दिव्यवाणी
सर्वज्ञसुता मैं सरस्वती मेरे हैं पुत्र गणधर ज्ञानी।। --- (5)

बहिरंग-अन्तरंग व्यसन त्याग (14)

तर्ज- (है यही समय की पुकार ---)

व्यसन त्याग है दो प्रकार, बहिरंग आभ्यन्तर।
बहिरंग है मद्यादि त्याग, भावात्मक आभ्यन्तर।।

जय जय जय सदाचार जय--- शुद्धाचार

मद्यधूम्रपान बहिरंग त्याग, मोहमद आभ्यन्तर
मोह प्रसिद्धि अहं त्याग, मद्य त्याग आभ्यन्तर।
मांस, चर्म, प्रसाधन त्याग, वस्तु जो त्रस शरीर।
अमर्यादित भोजन त्याग, पापड़ बड़ी अचार।।

जय जय जय सदाचार--- शुद्धाचार

शरीर आसक्ति, भोगासक्ति फैशन व कामाचार,
पत्नी-पुत्र प्रति जो आसक्ति सो आभ्यन्तर त्याग।
पण्य स्त्री रमण पाप एड्स रोग का जानो कारण।
जो त्याग बाह्य वेश्या अन्तरंग मोह का कारक।।

जय जय जय सदाचार---

स्वभाव विरक्त परभावरत परवस्तु मोहासक्त,
सो आसक्त त्याग अन्तः वेश्या ज्ञानानन्द में रक्त।।
निर्दोष जीव संहार का त्याग बाह्य शिकार व्यसन।
पुश-पक्षी व नर तिर्यंचादि न करें कभी हनन।।

जय जय जय सदाचार---

मिथ्यात्व कषाय भाव के घात से स्वात्मा की रक्षा करें,
सो ही अन्तः त्याग सो बाह्य कारक स्वपर अभय वरे।

स्वधर्म पत्नि पति बिन अन्य सर्व हैं यौनाचार।
सो त्याग बाह्य है विभाव सो त्याग अन्तराचार।।

जय जय जय सदाचार---

समस्त अदत्तादान त्याग सो बाह्य अचौर्य जान,
समस्त पर वस्तु मोह त्याग अन्तरंग अचौर्य जान।
भौतिक लाभार्थे कम विनिमये जो क्रीडा या व्यापार।
सो सब त्याग बाह्य धूत तृष्णा अंतरंग त्यागाचार।।

जय जय जय सदाचार---

अंतरंग त्याग निमित्त बने सो बहिरंग उपकार
अतरंग बाह्य कारण कार्य सो बहुगुणी शुद्धाचार,
व्यसन से राजा, महाराजा पंडित भी नाश हुए।
व्यसन त्याग से भव्य पतित भी पावन सिद्ध हुए।।

जय जय जय सदाचार---

साधु यदि है तुम्हें सुख जो पाना (15)

रागः- (परदेशियों से न---)

साधु यदि है तुम्हें सुख जो पाना
समता के मार्ग पर बढ़ता ही जाना... बढ़ता ही... ।।टेक।।

\+ रास्ते में पड़े हैं कषाय के काँटे...2
ख्याति पूजा के खण्डित काँच।
प्रसिद्धि की फिसलन यत्र है तत्र
मान व अपमान सर्वत्र तत्र।। (1)

\+ आहार विहार या निवास निहारे...2

अनुचित व्यवस्था से समस्या घनेरे।
प्रतिकूल काल व हीन संहनन से
कर्म उदय से रोग घनेरे।। (2)

+ गरमी में विहार है नंगे पैरों से...2
उपवास या अन्तरायों में।
रास्ते में काँटे भाटे यान वाहनों से
समस्यायें होती है मृत्यु भी संभवे।। (3)

+ पंचकल्याणक विधान क्रियाओं में...2
समुचित भाव भी नहीं है जनों में...2
धन जन प्रसिद्धि के भाव भरे हैं
साधु का प्रयोग इनमें करे हैं।। (4)

+ साधु समक्ष जो प्रतिज्ञा करे हैं...2
उसका पालन प्रायः नहीं है। ...2
जाति पंथ परम्परा ग्रन्थ साधु से
विखण्डित बन्धे समाज जन रे।। (5)

+ इन सब कारणों को साधु समझें...2
शक्ति-भक्ति से साधना करें ...2
समता भाव से जो शान्ति मिले हैं,
अन्यथा वह कहाँ प्राप्त हुए हैं।। (6)

+ समता ही सार्वभौम धर्म कर्म है ...2
इससे ही संवर निर्जरा मोक्ष है ...2
समता के बिना संसार भ्रमे है
समता साधना से सर्व साध्य है।। (7)

+ कनकनन्दी की भावना यह है...2

सर्व साधु भी आदर्श बने है।

यह सर्व अनुभव आगम गम्य है

प्रपञ्च भावों से सर्वथा भिन्न है।। (8)

(विश्व ज्ञान-विज्ञानमयी जिनवाणी) (16)

अहोभाग्य है जिनवाणी का पय जो पीये है।

रागः- (रात कली इक ख्वाब में आई...)

तर्जः- (धन्य हमारे भाव...)

धन्य हमारे भाव जगे हैं, जिनवाणी का मनन करें।

अनन्त भावों में स्व को न जाना, दिव्यवाणी से अभी जाने।। (टेक)

विद्यालय की शिक्षा से क्या हो, जीवन निर्वाह पाठ रटे,

जिनवाणी से शिक्षा जो मिले है जीवन निर्माण करें।।

स्कूल की शिक्षा व सांसारिक जन, संसार चलाना सिखलाते,

पशु पक्षी व कीट वृक्ष तक, संसार वर्द्धक कार्य करे।। धन्य---

यह तो सहज संस्कार जनक, बहु भवों का कर्म वेग,

इसे क्या सिखाये आहार मैथुन, निद्रा परिग्रह तीव्र वेग।

दयालु जननी जिनेन्द्रवाणी, अमृतपय का पान कराये,

जिसे पानकर काम क्रोध मान, जन्म जरा मृत्यु-विनष्ट करे।। धन्य---

अज्ञान मोह अन्धेरा नाशे, उदारभाव का उदय,

भेद-भाव व संकीर्णता नाशे, आत्मज्योति का प्रकाश फैले।

विश्वबन्धुत्व व विश्वशान्ति का, सहज पाठ जो हमें मिले,

पर्यावरण की सुरक्षा उपाय, ज्ञान-विज्ञान सुशिक्षा मिले।। धन्य---

मनोविज्ञान व सापेक्ष सिद्धान्त, अणुशक्ति का ज्ञान मिले।
एकीकृत का सूत्र भी पढें, ब्रह्माण्ड का सच्चा ज्ञान करे,
न्याय या राजनीति वैश्विक सुनीति, प्रबन्धन का बोध मिले,
''कनकनन्दी'' तो बालछात्र सम, जिनवाणी पय पान करे।। धन्य---

झाडोल (स.) 20-5-2011, मध्यान्ह- 3:27

स्वाध्याय का स्वरूप- विषय एवं फल (17)

तर्ज- (नगरी नगरी ---)

बड़ा सुख होता, आनंद होता, गुरुवर से ज्ञान जो होता।
मध्यान्ह प्रातः होता स्वाध्याय, गुरुवर से ज्ञान जो पाता।।

वाचना, पृच्छना, समाधान गुरुवर से ज्ञान जो पाता।
मनन, चिन्तन, अनुप्रेक्षा होता हर विधा का ज्ञान जो होता।। बड़ा सुख---
प्रथमानुयोग से गुरुवर हमें, प्राचीन इतिहास का ज्ञान देते।
प्राचीन शिक्षा संस्कार नीति, संस्कृति, सभ्यता भी देते।। बड़ा सुख---
समाज शास्त्र, राजनीति ज्ञान, कानून कला वास्तु देते।
युद्ध-विग्रह समाधान ज्ञान, स्वप्न शकुन का पाठ पढ़ाते।। बड़ा सुख---
ज्ञान-विज्ञान यांत्रिक ज्ञान, देश-विदेश का ज्ञान देते।
नदी-पर्वतग्राम नगर, प्रकृति प्रेम का पाठ पढ़ाते।। बड़ा सुख---
करणानुयोग है गहन ज्ञान, गणित द्धारा ही पाठ पढ़ाते।
लौकिक गणित सामान्य ज्ञान, अलौकिक भी जो बतलाते।। बड़ा सुख---
परमाणु से है प्रारंभ होता, ब्रह्माण्ड तक का मापन होता।
सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि, ब्रह्माण्डीय ज्ञान हमें भी होता।। बड़ा सुख---

ब्रह्माण्डीय काल गणना आदि, कर्म प्रकृति की गणना होती।
ब्रह्माण्डीय जीव अजीव आदि, समस्त द्रव्यों की गणना होती।। बड़ा सुख---
चरणानुयोग से हमें सिखाते, सदाचार का पाठ पढ़ाते।
प्रथम भेद है श्रावकाचार, गृहस्थ सम्बन्धी नीति सिखाते।। बड़ा सुख---
पंचाणुव्रत में हमें सिखाते, भ्रष्टाचार से हमें बचाते।
सप्त व्यसन का त्याग दिलाते, अष्टमूलगुण हमें दिलाते।। बड़ा सुख---
उत्कृष्ट भेद है श्रमणाचार साधु सम्बन्धी पाठ पढ़ाते।
पंचमहाव्रत हमें सिखाते, समस्त पापों का त्याग बताते।। बड़ा सुख---
पंच समिति का पाठ पढ़ाते, सम्यग् प्रवृत्ति की शिक्षा देते।
दश-धर्मों का पाठ पढाते, वैश्विक धर्म की शिक्षा भी देते।। बड़ा सुख---
द्रव्यानुयोग है सूक्ष्माति ज्ञान, आध्यात्म विज्ञान सहित ज्ञान।
दर्शन तर्क से युक्त भी ज्ञान, वैश्विक दृष्टि का महान् ज्ञान।। बड़ा सुख---
आत्मिक विकास ज्ञान सिखाते, आत्मिक शक्ति का ज्ञान भी देते।
शुद्धात्मा होने का पाठ पढ़ाते, आत्म वैभव का ज्ञान भी देते।। बड़ा सुख---
षट्द्रव्यों का ज्ञान भी देते, सापेक्ष सिद्धान्त हमें सिखाते।
सिद्धांत एकीकृत हमें सिखाते, विज्ञान से परे ज्ञान भी देते।। बड़ा सुख---
भौतिक रसायन अणु सिद्धान्त, मनोविज्ञान व जीव सिद्धांत।
इससे श्रेष्ठ का ज्ञान भी देते, परम विज्ञान पाठ पढ़ाते।। बड़ा सुख---
गुरुदेव से जो पाठ हैं पढ़ते, लोक लोकोत्तर काम में आते।
तन मनात्मा की शुद्धि बताते, पवित्रता का पाठ पढ़ाते।। बड़ा सुख---
स्व पर विश्व के हित बताते, विश्वशान्ति की शिक्षा भी देते।
ऐसा ज्ञान सब कोई पायें, ''कनकनन्दी'' भी यह भावना भाये।।

सेमारी 9-4-2011 रात्रि- 11.45

चातुर्मास महोत्सव (18)

कविता व श्लोगन रूप में

राग- हे गुरुवर धन्य हो तुम---
चातुर्मास आया है--- शुभ सन्देश लाया है
वर्षाराणी आई है--- धरती शीतल हुई है
साधु-संघ भी आया है--- ज्ञान की वर्षा लाया है
तन मन भी हरषाया है--- ग्राम में आनन्द छाया है
अभिषेक पूजन होते हैं--- गुरु के प्रवचन होते है
आरती भजन होते हैं--- सांस्कृतिक कार्य होते हैं
ध्यान अध्ययन होते है--- शंका समाधान होते हैं
आहार का समय आता है--- हृदय पुलकित होता है
पड़गाहन भी करते हैं--- भक्ति से आहार देते हैं
सामायिक ध्यान करते हैं--- आत्मा को पवित्र करते हैं
प्रवचन गुरु के होते हैं--- ज्ञानामृत वर्षाते हैं
आबाल-वृद्ध आते हैं--- आत्मा को तृप्त करते हैं
गुरु की जयकार करते हैं--- बच्चे भी आनन्द लेते हैं
धार्मिक कक्षा लगती है--- धार्मिक शिक्षा मिलती है
शिविर आयोजन होते हैं--- विविध प्रोग्राम होते हैं
संगोष्ठी आयोजित होती है--- वैज्ञानिकता झलकती है
विज्ञ वैज्ञानिक आते हैं--- वैश्विक चर्चा होती है
जैन-अजैन आते हैं--- विभिन्न ज्ञान पाते हैं
पर्व पर्यूषण आता है--- धार्मिक कार्य होता है
विधान व्रत होते हैं--- सातिशय पुण्य लेते हैं

पर्व दीपावली आता है--- नया उत्साह लाता है
निर्वाण लाडू चढ़ाते हैं--- मोक्ष का लक्ष्य धरते हैं
चातुर्मास पर्व होता है--- चहुँमुखी विकास होता है

सेमारी (राज.) दि. 21/4/2011 रात्रि 3.55

चातुर्मास चहुँमुखी विकास का महोत्सव (19)

तर्ज- (1. यशोमति मैया से--- 2. अम्मा गई पानी---)

चातुर्मास आया है मन हरषाया है, सर्वत्र आनन्द मंगल छाया है।
वर्षारानी आई है पानी वरषाई है, हरियाली सर्वत्र देखो छाई है।। (टेक)
साधु संघ आया है ज्ञानवर्षा लाया है-2, आत्मिक आनंद सर्वत्र छाया है।
जनता जगी है हो -2 जड़ता भागी है, उत्साह सर्वत्र सबमें छाया है।। (1)
पूजन, भजन, ध्यान, अध्ययन होते-2, जन-जन में मंगलाचार भी होते।
प्रवचन होते है हो -2 श्रोता भी आते हैं, ज्ञान वर्षा होती है ज्ञानामृत पीते हैं।। (2)
आहार देते हैं पुण्य-लाभ लेते है-2, मन हरषाता है जयकार होता है।
सामायिक होता है हो -2 आत्मध्यान होता है, संक्लेश जाता है आनंद आता है। (3)
स्वाध्याय होता है धर्मज्ञान होता है-2, सर्वजन आते हैं आनन्दित होते हैं।
बच्चे भी आते हैं हो -2 हरज्ञान लेते हैं, प्रमुदित होते हैं संस्कार पाते हैं।। (4)
आरती होती है घंटाध्वनि होती है-2, वाचना होती है ज्ञानवृद्धि होती है।
प्रश्नमंच होते हैं हो -2 पुरस्कार देते हैं, ज्ञानधन पाते हैं संस्कारित होते हैं।। (5)
शिविर भी होते है शिविरार्थी आते है-2, अनुशासन पालते हैं योगा भी होते हैं।
अध्ययन भी होते है हो -2 प्रश्न-उत्तर होते हैं, कार्य सांस्कृतिक होते आनंद लेते है।। (6)
वैज्ञानिक संगोष्ठी होती प्रभावना होती है-2, प्रबुद्ध वैज्ञानिक आते शोध बोध होते।
वैज्ञानिक धर्म बनता हो -2 समन्वय होता है, नूतन दृष्टि मिलती नई क्रांति होती है।। (7)

पर्व पर्युषण आता आत्म शोधन होता है-2, विश्व मैत्री भाते हैं विश्व शांति चाहे है।
क्षमा भाव रखते हैं हो -2 क्षमादान होता है, व्रत उपवास करते हैं दान पुण्य होता हैं।। (8)
दीपावली आती है लाडू चढ़ाते है-2, वीरगुण गाते हैं मोक्षपूजा करते हैं।
आत्म ज्योति जलाते हैं हो -2 मोहतम हरते हैं, मोक्षप्राप्ति चाहते हैं सदा ही ध्याते हैं।। (9)
वैयावृत्ति करते हैं पुण्य बंध करते हैं-2, साधुओं के गुणों को प्राप्त हेतु भाते हैं।
शौचक्रिया हेतु जब हो -2 गुरुदेव जाते हैं, कमण्डल लिये हम साथ-2 जाते हैं।। (10)
देशविदेशों से अतिथि आते हैं-2, गुरुओं के दर्शन का पुण्यलाभ पाते हैं।
ज्ञान-लाभ लेते हैं हो -2 समाधान पाते हैं, देश-विदेशों में प्रचारार्थे जाते हैं।। (11)
अतिथि सत्कार का हम लाभ लेते है-2, ज्ञान-लाभ लेते हैं उनसे पाते हैं।
विधान महोत्सव आदि हो -2 सभी कार्य होते हैं, चहुँमुखी विकास हेतु चातुर्मास में होते हैं।। (12)
चातुर्मास आया है मन हरषाया है, सर्वत्र आनंद मंगल छाया है।

जैन साधुओं के केशलोंचन (20)

तर्ज- (छोटी छोटी गैया ---)

केशलोंचन केशलोंचन जैन साधुओं का केशलोंचन
केशलोंचन नहीं बच्चों का खेल, केशलोंचन है त्यागों का मोल ।।टेक।।

केशलोंचन नहीं पगलों का काम, केशलोंचन है वीरों का काम।
केशलोंचन नहीं नाई का काम, केशलोंचन है व्रती का काम।। (1)

केशलोंचन नहीं भोगी का काम, केशलोंचन है योगी का काम।
केशलोंचन नहीं शृंगार काम, केशलोंचन है विराग काम।। (2)

केशलोंचन नहीं दैनिक काम, केशलोंचन है विशेष काम।
केशलोंचन नहीं गृही का काम, केशलोंचन है त्यागी का काम।। (3)

लोंचन नहीं केवल केशों का काम, लोंचन है क्लेश त्याग का काम।
केशलोंचन नहीं हिंसा का काम, केशलोंचन हिंसा त्याग का काम।। (4)

प्रदर्शन हेतु लोचन नहीं, आत्मदर्शन का चिह्न है सही।
आत्म बल की है परीक्षा सही, तीर्थंकरों की आज्ञा है यही।। (5)

भ. महावीर की जीवनी हमें सिखाती है! (21)

तर्ज- (1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. नदी के किनारे श्याम... 3. इक परदेशी...)

वीर की कृति/(जीवनी) सिखाती सन्मति बन,
दूसरों की कुमति को स्वीकार न कर।
वर्द्धमान बनो आत्मा के विकास बल,
वीर अतिवीर बनो कर्म विजय/ (आत्मजय) पर।।--- (टेक /स्थायी)
महावीर की जीवनी बने, स्वयं की कहानी,
जीवनी हमारी बने तब सञ्जीवनी
भोग वैभव त्यागा वीर बने है साधु,
भोग वैभव त्याग सन्देश देते हैं प्रभु।। --- (1)
मौन साधना में रहे छद्मस्थ काल में,
मौन साधना करो, वीर कहते हमें
अनेक दुष्ट जनों का उपसर्ग सहा है,
ऋद्धि शक्ति से भी उसे दूर न किया है।। --- (2)
धैर्य क्षमा समता की हमें शिक्षा मिलती है,
इससे आत्मबल/(शक्ति) बढ़े वीर की कृति है
निराडम्बर निस्पृह वृत्ति अपनाया,

हमने साधना हेतु उनसे पाया।। --- (3)
स्वावलम्बी बनकर पैदल ही चले,
स्वावलम्बन का पाठ हमें भी बतायें
साधना की सिद्धि हेतु महाश्रमण बने,
आत्म विकास वे करें जो श्रमशील बने।। --- (4)
नर देव पशु में भेदभाव नहीं है,
जिनके सम्यक् भाव बने भक्त सही है
भेद भाव रहित का पाठ हम पढ़े,
सम्यक् भाव सहित जीव है गढ़े।। --- (5)
घाती कर्म नाश से वे सर्वज्ञ बने,
अनन्त चतुष्टय के स्वामी वे बने
स्व-वैभव प्राप्त करो कर्मनाश से,
महावीर ने यह शिक्षा दी स्व-उपलब्धि से।। --- (6)
सर्व कर्म नाश से सिद्ध शुद्ध वे बने,
सत्य शिव सुन्दर अविकारी वे बने
ये ही दशा हमारी भावी पर्याय बने,
ये ही शिक्षा उनसे हमें सतत मिले।। --- (7)
उन्होंने जो त्याग किया, उसे प्राप्त/(ग्रहण) न करे
उन्होंने जो प्राप्त किया उसे स्वीकार करे ऽऽ
उन्होंने त्यागा है कषाय भोग नश्वर,
ऐसे त्याग भाव धारी भक्त प्रवर।। --- (8)

धार्मिक क्रियाएँ हमें सिखाती है! (22)

(तर्ज- बिन गुरु ज्ञान नहीं है..... 2. रागः मालकोश.....)

पूजा हमें सिखाती है- पूज्यता को पाओ
नाम जप/(स्मरण) सिखाता है- पूज्य गुण पाओ/(गाओ)
अभिषेक सिखाता है- पाप ताप नाशो
नमस्कार सिखाता है- अहंकार नाशो
मन्त्र जाप सिखाता है- मननीय/(मननशील) बनो
स्वाध्याय से सीखे हम- स्वज्ञानी/(आत्मज्ञानी) बनो
तीर्थक्षेत्र सिखाता है- संसार से तर
दर्शन हमें सिखाता है- आत्म/(स्वात्म) दर्शन कर
प्रदक्षिणा सिखाती है- प्रायश्चित/(प्रत्याख्यान)कर
दण्डवत सिखाता है- विनम्रता वर
निःसही सिखाता है- पाप त्याग कर
आसही सिखाता है- आत्मगुण वर
गन्धोदक सिखाता है- वन्दनीय बन
घण्टाध्वनि सिखाती है- सत्य वच बोल
जयकारा सिखाता है- जयवन्त बन
श्लोगान सिखाता है- पुण्य श्लोक बन
तिलक हमें सिखाता है- चित्ते धर्म धर/(धर्म चित्तेधर)
जनेऊ हमें सिखाता है- रत्नत्रय धर
पर्व हमें सिखाता है- पावन बन
उत्सव हमें सिखाता है- उत्साही बन

पिच्छी-कमण्डल-शास्त्र हमें शिक्षा देते हैं! (23)

तर्ज- (1. अच्छा सिला दिया तूने....2. सावन का महीना....)

पिच्छी हमें शिक्षा देती मृदु बनते चल,
मृदुता से सब की रक्षा करते चल ऽऽ... टेक/स्थायी...
पिच्छी हमें शिक्षा देती लघु बनते चल,
लघुता से प्रभुता को प्राप्त करते चल
पिच्छी हमें शिक्षा देती अनासक्त बन,
इससे कर्मों को दूर करते चल.....(1)
पिच्छी हमें शिक्षा देती जीव रक्षा कर,
अन्य धर्मी की भी रक्षा करते चल
कमण्डल शिक्षा देता पात्र बनते चल,
पात्रता से गुणों को भरता चल.....(2)
कमण्डल हमें शिक्षा देता गुणग्राही बन,
अधिक ग्रहण व कम वचन बोल
आस्था में वज्र सम बनता चल,
हृदय में कोमलता पानी सम बन.....(3)
शास्त्र हमें शिक्षा देते ज्ञानार्जन कर,
ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित कर,
शास्त्र हमें शिक्षा देते भेदज्ञानी बन,
आत्मिक ज्ञान से कर्म नष्ट कर,.....(4)
शास्त्र हमें शिक्षा देते सर्वज्ञ बन,
सर्वज्ञ बनकर सदा सुखी बन,
उपकरण से सदा शिक्षा लेते चल,

स्व-पर उपकार करते ही चल.....(5)

उपकार कभी नाहीं करना भूल,

उपकार के बिना होगा जीना शूल

परस्पर उपग्रहो वीर का बोल,

'कनकनन्दी' की सुन सत्य बोल.....(6)

विश्व बन्धुत्व का जीवन्त रूप समवशरण (24)

तर्ज- (1. दुःख से घबराओ... 2. स्याद्वाद के इस... 3. नगरी-नगरी... 4. यदि भला किसी का... 5. रामचन्द्र कह गये... 6. तीरथ करने चली...)

समवशरण के मध्य में सोहे, गन्धकुटि है अति मनहर।

धर्म सभा में सिंहासन पर, दिव्य कमल सोहे अतिसुन्दर-2।।(टेक)

उसके अधर चार अंगुलि पर, विराजमान है त्रिभुवन भास्कर-2

अष्ट प्रतिहारी मंगल सोहे, अशोक वृक्ष है दिव्य चमत्कार-2 धर्म...(1)

छत्र त्रय शुभ शिर पर सोहे, भामण्डल है दिव्य मनहर-2

पुष्पवृष्टि देवदुन्दुभी बजे, चमर ढोरे चौसठ प्रकार-2 धर्म...(2)

बारह कोठा में विराजमान है, चतुर्विध संघ देव तिर्यंच-2

दिव्यध्वनिरूपी अमृत पीवे, जन्मजरामृत्यु रोग हर-2 धर्म...(3)

सर्वज्ञदेव के सर्वांग से खिरे, सर्वभाषामय दिव्यसंदेश-2

अक्षरी अनक्षरी भाषामयी, विश्वतत्त्व के सर्वप्रकाश-2 धर्म...(4)

भव्यकमलों के विकासकारक, सत्य-असत्य के भेद कारक-2

भेद विज्ञान के दिव्यदर्शक, मोक्षतत्त्व के प्रतिपादक-2 धर्म...(5)

समवशरणस्थ जीवों को नहीं, होता है रोग शोक कभी-2

भूख व प्यास नहीं सताती, शीत गरमी भी नहीं लगती-2 धर्म...(6)
समवशरण के शत योजन में, दुर्भिक्ष महामारी रोग न होते-2
समस्त ऋतु के फल-फूल भी, प्रभु के पुण्य से प्रचुर होते-2 धर्म...(7)
वैर विरोध त्याग के प्राणी, दिव्यध्वनि का पान करे-2
विश्वबन्धुत्व विश्वशान्ति का, जीवन्त रूप प्रगट करे-2 धर्म...(8)
सर्वज्ञदेव द्धारा वर्णित ज्ञान, जिनवाणी द्धारा हमें है प्राप्त-2
'कनकनन्दी' करे उसका पान, विश्व प्राप्त करे उससे ज्ञान-2 धर्म...(9)

झाड़ोल, 24-5-2011, मध्याह्न - 1.48

कलियुग (कलयुग) में आध्यात्म-वैज्ञानिकता का महत्व (25)

तर्ज- (1. स्याद्वाद के इस झरने... 2. रामचन्द्र कह गये... 3. यदि भला किसी का...)

अभी का काल अति निराला, हुण्डावसर्पिणी पंचम काल।
असंख्य युग बाद में आता, ऐसा काल है कलि का काल-2 (टेक)
अभी न होते तीर्थंकर देव, गणधर व ऋद्धि सम्पन्न-2
अभी न होता मोक्ष गमन, सप्तम नरक भी नहीं प्रयाण-2 असंख्य...(1)
कल्पवासी देव यहाँ न आते, न होते लीन उत्कृष्ट ज्ञान-2
चक्रवर्ती कामदेव न होते, नारायण बलभद्र भी जान-2 असंख्य...(2)
महापुरुषों के अभाव से, आध्यात्म धर्म भी हो गया गौण-2
इसलिये भी सुख-शान्ति का, दिनों ही दिनों होता है ह्रास-2 असंख्य...(3)
इसी काल में कुछ होते हैं, अनहोनी या विशेष काम-2

तीर्थंकरों पर उपसर्ग होता, चक्रवर्ती का खण्डित मान-2 असंख्य...(4)
पाँच सौ वर्षों के अन्तराल में, धर्म में हानि वृद्धि होती-2

कल्की उपकल्की के कारण, यह प्रक्रिया प्रवाहित होती-2 असंख्य...(5)
अभी विज्ञान व वैश्वीकरण से, कुछ विकास होता व विनाश-2

प्रकृति के रहस्य शोध-बोध से, संकीर्णता घटी अन्धविश्वास-2 असंख्य...(6)
प्रकृति संरक्षण के निमित्त से, वृक्ष व प्राणी को देते महत्व-2

विश्वबन्धु व शान्ति निमित्त, अन्तर्राष्ट्र में होता प्रयास-2 असंख्य...(7)
कलकारखाना से कलयुग बना, प्रदूषण राक्षस उससे बना-2

जिसके कारण धरती माता व, प्राणी जगत का हो रहा नाश-2 असंख्य...(8)
भौतिकवादी चार्वाक बढ़े, हर देश हर धर्म में-2

उन्हें चाहिये खाओ पीओ, मनोरंजन व भोग विलास-2 असंख्य...(9)
इसी कारण धरती माता, प्रकृति माँ का होता शोषण-2

आपाधापी व अन्धी दौड़ में, मानव जीवन हुआ हैवान-2 असंख्य...(10)
आधुनिकता व टेन्शन से, अनेक रोग भी कुपित हुये-2

इसलिये तो मानव आज, भोगी बनकर रोगी हुये-2 असंख्य...(11)
आत्महत्या व दुर्घटना से, लाखों की अपमृत्यु होती-2

पृथ्वी तो बनी एक परिवार, परिवार में शान्ति न होती-2 असंख्य...(12)
इसलिये हे विश्वमानव, शान्ति हेतु तू आध्यात्म बन-2

आध्यात्म वैज्ञानिक धर्म से ही, तुम्हारे संकट होंगे शमन-2 असंख्य...(13)
इसी काल में भी जो बना है,

आध्यात्म वैज्ञानिक धर्म वाला-2
धन्य वह जन निश्चय पाता,

आत्मिक शान्ति दुर्लभ वाला-2 असंख्य...(14)

''कनकनन्दी'' तो कलियुग में भी,

आत्मधर्म की करे साधना-2

विश्व भी आत्मधर्म को पाले-2

ऐसी उर में धरूँ भावना-2 असंख्य...(15)

झाड़ोल, 24-5-2011, मध्याह्न - 3.13

मुनिसंघ आया आनन्द छाया (26)

राग : हे गुरुवर.... नगरी-नगरी.... मुनिसंघ आगमन गीत....

मुनिसंघ आया आनन्द छाया, जन-गण-मन हरषाया है

ज्ञान वर्षा हुई प्रभावना हुई, जड़ता भी नाश हुई/जड़ता का नाश कराया है...(स्थायी/धत्ता)

वात्सल्य बढ़ा संगठन हुआ, वैर-विरोध का नाश हुआ

आत्मज्योति जागी मोहमाया भागी, आत्मबल प्रगटाया है...(1)

भेद ज्ञान हुआ वैराग्य बढ़ा, पाप ताप तम नाश हुआ

विवेक जगा कुकृत्य त्यागा, ममत्व भाव भागा है...(2)

संस्कृति पाया विकृति नशाया, फैशन-व्यसन से दूर हुआ

अभक्ष्य छोड़ा मिथ्यात्व तोड़ा, सात्विक सम्यक्त्व से जुड़ा...(3)

आहार देते सेवा भी करते, सातिशय पुण्य कमाते हैं

भावना भाते पावन बनते आतम रस सुख पाते हैं....(4)

गुरु गुण गाते आत्मगुण पाते, संक्लेश भाव से दूर हैं

'कनकनन्दी' भावे मुनिसंघ आवे, सब को मिले सद्ज्ञान है....(5)

टोकर, दि. 1/7/2011, रात्रि 11.34

गुरुओं का आगमन-संग एवं विहार (27)

राग : हे गुरुवर धन्य हो तुम....

हे गुरुवर! हे ऋषिवर! हे मुनिवर! हे यतिवर!
गुरुवर जब आते है, ज्ञान की गंगा लाते हैं
हृदय कमल खिल जाते हैं, आनन्द मकरन्द झरते हैं...हे गुरुवर...(स्थायी/धत्ता)
भव्य मधुप आते हैं, ज्ञानानन्द रस पीते हैं
धर्म के अंकुर ऊगते हैं, भाव के सस्य बढ़ते हैं....हे गुरुवर....(1)
वात्सल्य हरियाली छाती है, दया लता बढ़ जाती है
सुपुण्य सुगन्धी फैलती है, आध्यात्म ज्योति जलती है....हे गुरुवर....(2)
भेद-विज्ञान बढ़ता है, वैराग्य नशा चढ़ता है
समता सुख बढ़ता है, शान्ति का स्तर चढ़ता है....हे गुरुवर....(3)
मेल-मिलाप बढ़ता है, प्रेम-संगठन होता है
प्रभावना अंग बढ़ता है, दोष-दुर्गुण घटता है....हे गुरुवर....(4)
गुरुवर का विहार होता है, मन में उदासी छाती है
हृदय पद्म मुरझाता है, आनन्द मधु सूख जाता है....हे गुरुवर....(5)
ज्ञान ज्योति मन्द होती है, दयालुता मुरझाती है
पुण्य सुगन्धी मन्द होती (है), प्रमाद निद्रा छा जाती है....हे गुरुवर....(6)
प्रेम मन्द पड़ जाता है, संगठन ढीला होता है
धर्म भाव कम होता है, दुर्गुण भी बढ़ जाता है....हे गुरुवर....(7)
गुरु सानिध्य मन चाहता है, गुरु को ढूंढने जाता है
प्राप्त कर आनन्द पाता है, संग न छूटे भाव होता है....हे गुरुवर....(8)

टोकर, दि. 1-7-2011, रात्रि 10.45

दुराभिमान, स्वाभिमान, आत्मानुभव (28)

(अशुभ शुभ शुद्ध अहंभाव)

राग : 1. हे स्वतन्त्र निश्चल निष्काम ...2. यमुना किनारे श्याम....

अशुभ शुभ तथा शुद्ध प्रकार,
अहंभाव है जानो तीन प्रकार,
अशुभ अहंकार, शुभ स्वाभिमान
आत्मानुभव मानो सोऽहंभाव
अनात्म द्रव्य में होता अहंकार
अनात्म द्रव्य में होता अहंकार
अशुभ त्याग में होता स्वाभिमान.....(टेक) .....

आत्मिक गुण स्मरण आत्मरमण,
शुद्धात्मभावना अध्यात्म ध्यान,
यह सब सोऽहंभाव शुद्धात्म भाव,
अन्य द्रव्य निरपेक्ष शुद्ध स्वभाव
इसी निमित्त से होता अशुभ त्याग,
शुद्ध माध्यम से प्राप्त शुद्ध स्वभाव।। (1)

अनन्तानुबन्धी मान कषाय युक्त,
मिथ्यात्व से युक्त अनात्म स्वरुप।
कर्म उदय से प्राप्त विभाव भाव,
शरीर आश्रित जो भी स्वभाव।

जाति कुल-बल आदि अष्ट जो मद,
सो है अशुभभाव मोह के मद।। (2)

जिससे अष्टमद नहीं होते हैं,
पंच पाप, सप्तभय नहीं होते हैं।
अन्याय, कुकृत्य व्यसन त्याग होते
शुद्धभाव प्राप्ति हेतु जो भाव होते
वही स्वाभिमान जानो शुभ संकल्प (विकल्प),
सनम्र सत्यग्राहीता दृढ़ संकल्प।। (3)

यह भाव करणीय विकास हेतु,
शुद्ध प्राप्ति के निमित्त यथा है सेतु।
नदी पार निमित्त जो सेतु है हेतु,
नदी पार अनन्तर नहीं है हेतु।
तथावत् स्वाभिमान उभय हेतु,
अहंकार त्याग तथा सोऽहं के हेतु।। (4)

अहंकार तजकर स्वाभिमान (को) धर,
सोऽहं भाव का सतत लक्ष्य भी धर।
सनम्र सत्यग्राही दृढ़ संकल्पी बनो,
अहं भाव हठग्राही भाव को हनो।
'कनकनन्दी' तो सदा प्रयत्नरत है,
विश्वमानव भी करें ऐसा प्रयत्न है। (5)

टोकर, दि. 1.7.2011 मध्याह्न 3.57

अति ही चञ्चल है मानव मनुआ (29)
(मनजयी से विश्वजयी तथा जो मन के दास सो सब के दास)

राग : 1. गायेंगे गायेंगे हम वन्दे मातरम्

2. छोटी छोटी गैया.... 3. अच्छा सिला दिया तूने....

अति ही चञ्चल है मानव मनुआ, बिजली से भी अति है त्वरा.... हो हो
क्षण में स्वर्ग व क्षण में नरक, क्षण में रागी व क्षण में विरागी
क्षण में रुष्ट है क्षण में तुष्ट है, गिरगिट से भी अति निराला... (टेक)...
बन्दर, गिलहरी, कबूतर, बाज, जल की तरंग व ध्वनि के वेग
पुष्पक विमान व जेट के यान, सुपर सोनिक से अति वेगवान्
बिजली गति या प्रकाश गति, इनसे भी अधिक है मन की गति... (1)
इस गति के पीछे है मन की शक्ति, राग द्वेष से होती है विपरीत गति
जिससे होती है ओछी प्रवृत्ति, समता संयम से सद्गति होती
जिससे होती है अच्छी प्रवृत्ति, जिससे मनवा की स्थिरता होती... (2)
मन की चञ्चलता से शान्ति नष्ट होती, स्मरणशक्ति घटती दुश्चिन्ता बढ़ती
अशान्ति, आकुलता, उच्चाटन होती, विक्षुब्धता बढ़ती दिशाशून्या होती
प्रज्ञाशक्ति घटती निर्णयशक्ति जाती, टेन्शन फोबिया से आत्महत्या होती... (3)
समता संयम से चञ्चलता जाती, जिससे स्मरणशक्ति क्षमता बढ़ती
सन्तुष्टि शान्ति व स्थिरता आती, स्वाध्याय चिन्तन से विवेक वृद्धि
आत्मिक शुद्धि से वैराग्य बढ़ता, जिससे आत्मा को मोक्ष भी मिलता... (4)
इसलिए मानव मन वश करो, मन वश से दुःखो से शीघ्रक्षय करो
अन्यथा दुःखों से निवृत्ति नहीं है, इसके बिना सुख-शान्ति नहीं है
अतएव सुख-दुःख तुम्हारा उपज है, जैसा बीज बोओगे वैसा ही अनाज है... (5)

मन के वश से जगत् वश है, जो मन के वश सो जगत् दास है
तीर्थेश ऋषि बुद्ध मन के मालिक, जिससे विश्व का बने है मालिक
राजा-महाराजा नर व सुरासुर, मन के दास बन बनते भस्मासुर... (6)
मन के अनुसार मानव न चलो रे,
मनमाना से दुःख को न वरो है
मन को विवेक से स्ववश में करो है,
आध्यात्म साधना से दुःख दूर करो है
इस प्रयास में 'कनकनन्दी' रत है,
मानव करे निज मन को वश है... (7)

सेमारी, दि= 12/7/2011, मध्याह्न 1:52

बड़ा ही उद्दण्ड है मानव मनुआ (30)
(मानव करता है- धर्म, शिक्षा, राजनीति, कानून, धन का दुरुपयोग)

(राग : 1. गायेंगे गायेंगे हम वन्दे मातरम्
2. छोटी छोटी गैया.... 3. बड़ा नटखट है....)

बड़ा ही उद्दण्ड है ये मानव मनुआ, ना करे धर्म की सम्यक् क्रिया
धर्म तो सत्य दया पवित्र हिया, मन को लालसा हिंसा ही भाया
धर्म का दिखावा मन तो करे है, अन्दर विकार भावों को धरे है... (टेक)...
धर्म के नाम पर ढोंग रचाया, रीति-रिवाज क्रिया-काण्ड बनाया
ताम-झाम से आडम्बरों को रचाया, प्रभावित करने का तन्त्र रचाया
पवित्र भावना व समता को खोया, मानवों में भेद-भाव रचाया (1) ...

दिखावा मात्र से धर्म को पाला, इससे ही स्वर्ग-मोक्ष को माना
विधर्मी को नीच मान अभिमान बढ़ाया, ईर्ष्या-द्वेष युद्ध तक धर्म पे रचाया
धर्म रूपी अमृत से वञ्चित रहा, बाह्य रूप को धर्म है माना (2) ...

सर्वोदय शिक्षा को साक्षर बनाया, डिग्री व नौकरी को शिक्षा रूप माना
फैशन-व्यसन व भ्रष्टाचार पाला, आलस्य प्रमादमय जीवन जीया
''णाण पयासणं'' को नहीं पहचाना, विद्या से विमुक्ति को विपरीत किया (3)...

प्रजापालन रुपी राजनीति भूला, रक्षक के बदले में भक्षक बना
शोषण अत्याचार भोग अपनाया, सुरा सुन्दरी समर शिकार किया
धर्म अर्थ काम मूल राजनीति छोड़ा, अर्थ काम मूलक तानाशाही बना (4)...

सुवैद्य सम दोषहर न्यायनीति त्यागा, डाकू सम दण्डनीति प्रयोग अपनाया
सत्ता सम्पत्ति से न्याय की आँखों को बाँधा, जिसकी लाठी उसकी भैंस को माना
सबे सहायक सबल की नीति अपनाया, न्याय के नाम पर अन्याय किया (5)...

न्याय से उपार्जित धन का उपयोग, भरण-पोषण दान दया व पुण्य
तथापि लोभी मन करे है विपरीत, शोषण मिलावट चोरी व लूटपाट
फैशन-व्यसन में करे है धन खर्च, अहं ममकार धन के लिए चित्त (6)...

''मनएव मनुष्याणां'' बन्ध व मोक्ष है, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि भाव ही भावी है
मनचंगा तो कठौती में गंगा है, इसे भूलकर मनमानी करे है
मन मंजे बिना तन को ही मांजे है, विपरीत गति से लक्ष्य कहाँ मिले है (7)...

लक्ष्य यदि पाना है तो विपरीत तज, विलोम के विलोम से अनुकूल भज
उपलब्धियों का उपयोग करो है, दुरुपयोग को सर्वथा त्यागो है
कनकनन्दी के आह्वान को सुनो है, स्व-पर-विश्व का कल्याण ही करो है (8)...

सेमारी, दि= 11/7/2011, सायं 7.45

बड़ा ही स्वार्थी है मानव मनुआ (31)

राग : 1. गायेंगे गायेंगे हम वन्दे मातरम् 2. छोटी छोटी गैया.... 3. बड़ा नटखट है.... 4. बहुत प्यार करते ....

बड़ा ही/(महान्) स्वार्थी है ये मानव मनुआ
स्वार्थवश करता है सर्व क्रिया
स्वार्थ के आगे न देखता है भैया, माता पिता या नैतिक क्रिया
स्वार्थ ही माता पिता बन्धु व भैया, स्वार्थ ही स्वर्ग मोक्ष धार्मिक क्रिया...स्थायी...
स्वार्थ से शत्रु का पग भी पड़ता, स्वार्थ से माता का हनन करता
स्वार्थ बिना पिता को न पानी पिलाता, स्वार्थवश पत्नी की आज्ञा पालता
स्वार्थ से अन्याय अत्याचार करता, स्वार्थ को अपना सर्वस्व मानता (1)
स्वार्थ से चोरी व डकैती करता, स्वार्थ से शोषण अन्याय करता
स्वार्थ से असत्य मायाचारी करता, स्वार्थ से हिंसा व परिग्रह करता
इसके हेतु है विदेश भी जाता, विधर्मी पापी की सेवा भी करता (2)
स्वार्थ से प्रभावित धर्म को करता, स्वार्थ से प्रभावित धर्म को तजता
स्वार्थ के लिए न्याय कानून तोड़ता, इसके हेतु मादक वस्तु बेचता
मानव पशु-पक्षी स्व बच्चा बेचता, शील सदाचार स्वदेश बेचता (3)
स्वार्थ से गुरु से भी गद्दारी करता, स्वार्थ से कृतज्ञ व कृतघ्न बनता
स्वार्थ से निन्दा भी मधुर लगती, स्वार्थ बिन हित बातें कड़वी लगती
स्वार्थ के समक्ष ब्रह्माण्ड भी है छोटा, स्वार्थ के बिना परमार्थ लगता खोटा (4)
मानव सम स्वार्थी अन्य प्राणी नहीं है, कीट व पतंग पशु-पक्षी कोई नहीं है
वृक्ष से पशु तक उपकारी होते, इसके बिना मानव जीवित न होते
मानव बिना इनका होता उपकार, फलते फूलते होते है निहाल (5)

अब तो मानव स्वार्थ त्याग कर, परोपकार व परमार्थ को वर
संकीर्णता से तुम उदार बनो, परोपजीविता और शोषण छोड़ो
आत्मिक वैश्विक भावना धरो, कनकनन्दी का सद् आह्वान सुनो (6)

सेमारी, दि= 11/7/2011, रात्रि 11.19

भाव ही भाग्य एवं भावी निर्माता (32)

भाव गीत

राग : (कोथाये स्वर्ग, कोथाये नर्क के बोले ते बहुदूर)-रवीन्द्र संगीत : तुम ही मेरा उद्धार करो.. हे जननी दिव्यवाणी... बंगला राग

कहाँ है स्वर्ग कहाँ है नर्क, कोई कहे बहु दूर ---2 ।
भाव के मध्य में स्वर्ग नरक, भाव में है सुरासुर ---2 ।।

भाव है धर्म भाव अधर्म, भाव में ही पुण्य-पाप ---2 ।
बन्ध व मोक्ष भी भाव में संस्थित, अग्नि में यथा है ताप ---2 ।।

भाव से ही भाग्य निर्माण होता है, भाग्य से भावी निर्माण ---2 ।
भाव का निर्माण जो यथा करे है, तथा ही भावी निर्माण ---2 ।।

जब ही भाव का पतन होता है, तब से भाग्य पतन ---2 ।
भाग्य पतन से भावी भी पतन, सत्य-तथ्य यह जान ---2 ।।

तुम्हारे भाव के तुम ही निर्माता, पोषक व नष्ट कर्त्ता ---2 ।
अतएव तुम तुम्हारे त्रिदेव, अन्य न कर्त्ता व धर्त्ता ---2 ।।

ब्रह्माण्ड/(संसार) तुम में तुम ही संसार, संसार तारक तुम ---2 ।
तुम्हारा भाव ही सब में निहित, यथा जलमय हिम ---2 ।।

स्वयं को जानो स्वयं को मानो, स्वयं का करो विकास ---2 ।

भौतिक विकास मात्र ही तुम्हारा, नहीं है सर्व विकास ---2 ।।

भौतिक तन-मन-आध्यात्मिक, श्रेष्ठ है उत्तरोत्तर ---2 ।

भौतिकता को ही सर्वस्व मानना, तुम्हारा निम्न विचार ---2 ।।

तुम हो अमृत आध्यात्मिक रुप, भौतिक है शव रूप ---2 ।

आत्मा से रहित शव के समान, समस्त भौतिक रूप ---2 ।।

'कनकनन्दी' तो भावना स्वरुप, आध्यात्मिक तव रूप ---2 ।

भौतिक शरीर मन से परे है, तू सच्चिदानन्द स्वरूप ---2 ।।

टोकर, दि= 17/6/2011, रात्रि 11.36

सुखी होने के उपाय (33)

(तर्ज- यमुना किनारे श्याम जाया न करो ... 2. तुम दिल की धड़कन...)

सुखी होने के उपाय सुना भी करो

सुनकर आचरण किया भी करो।

तुम ही सुख स्वरूप माना भी करो,

दुःखों के कारणों को त्यागा भी करो।

संक्लेश, ईर्ष्या, द्वेषादि दुःख ही जानो,

सत्य साम्य शान्तिमय सुख ही मानों। (टेक)

सुख का प्रथम शर्त सत्य निदान,

असत्य मायाचारी दुःख निदान।

समता में सुख का होता निवास,

संक्लेश से दुःख का होता आवास।

अतएव समता से जीया ही करो,

तनाव को सर्वथा त्यागा ही करो। (1)

क्षमाधारो प्रेम करो ईर्ष्यादि त्यागो,

उपकारी प्रति धन्यवाद किया करो।

अपकारी पापी प्रति करुणा धरो,

पवित्र बनने हेतु भावना धरो।

स्व-दुर्गुण त्याग हेतु संकल्प करो,

निन्दा भाव त्यागकर क्षमा को धरो। (2)

आलोचना दूसरो की किया न करो है,

समालोचना से गुण ग्रहण करो है।

साक्षीभाव से सदा जीया ही करो,

आत्म स्वभाव का ध्यान किया ही करो।

सुसंवाद परस्पर किया ही करो,

वाद-विवाद-कुतर्क किया न करो। (3)

ईर्ष्या द्वेषादि से शक्ति होती नष्ट है,

स्व-पर की शान्ति भी होती विनष्ट है।

कर्म बन्ध रोगादि भी होते हैं अनेक,

विविध दुःखों से बीते भव भी अनेक।

दुःखों के विनाश हेतु करो है यत्न,

'कनकनन्दी' भी करे यही प्रयत्न। (4)

टोकर दि= 29/6/2011 रात्रि 10.13

दुःख एवं सुख के परम उपाय (34)
(कर्मबन्ध से दुःख तो कर्म मोक्ष से सुख)

(राग : 1. गायेंगे गायेंगे हम वन्दे मातरम्
2. छोटी छोटी गैया.... 3. बड़ा नटखट है....)

अतीव शक्तिशाली अष्टकर्म जानो, संसार भ्रमण के प्रमुख है मानो
चतुर्गति भ्रमण के दुःखों के कारण, चौरासी लाख योनि में जन्म-मरण/(जन्म कारण)
शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक दुःख, इहलोक-परलोक दुःख के जनक... (स्थायी...)
स्वयं जीव आकर्षण करता कर्म को, जीव ही सञ्चय करता कर्म को
जिससे जीव कर्म का कर्त्ता भी बनता, जिससे कर्म का भोक्ता भी बनता
इसलिए जीव ही स्वयं कर्म है, इसलिए जीव ही स्वयं भ्रमण है... (1)
जो विष पीता उसका मरण होता है, जो कर्म बान्धे उसका भ्रमण होता है
संसार भ्रमण को यदि करना है दूर, कर्म का आकर्षण करो है दूर
मोहासक्ति से जो दूर होता है, कर्म का आकर्षण नहीं होता है... (2)
समता शान्ति से जो जीया करे है, कर्म की शक्ति को वह नाश करे है
पवित्र भाव व ध्यान की शक्ति से, आत्मिक शक्ति बढ़े कर्म के हने (है)
अन्य उपाय तो बाह्य कारण है, अन्तरंग युत सह-कारण है... (3)
परम-आध्यात्मिक रहस्य यह है, आध्यात्म-विज्ञान के शोध यह है
जीवन जीने की कला यह है, परमशान्ति के स्रोत यह है
मोही जन का अज्ञात यह है, वैज्ञानिकों से अज्ञात राज है... (4)
सर्वज्ञ ज्ञान गम्य यह राज है, सुख शान्ति का परम राज है
सर्वोच्च विकास का यह राज है, सर्व जीव का श्रेष्ठ काज है
''कनकनन्दी'' का ये ही काज है, विश्व को ज्ञात हो यह राज है... (5)

सेमारी, दि= 12/7/2011, मध्याह्न 3.22

श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम सत्य (35)
(विभिन्न प्रकार के सत्य)

(राग : तुम ही मेरा उद्धार करो हे जननी दिव्यवाणी ....)

सत्य को जानना सत्य को मानना सत्यमय जो आचार ...2
वह ही नैतिक वैचारिक पूर्ण आध्यात्ममय प्रकार ...2
सामाजिक सत्य न्याय में स्थित राजनीति में जो मान्य ...2
ये सब सत्य है व्यवहार सत्य, व्यवहारे हुए मान्य ...2
दार्शनिक सत्य वैचारिक सत्य विचार आधीन सत्य ...2
वस्तुनिष्ठ सत्य द्रव्यगत सत्य यह है वैश्विक सत्य ...2
आध्यात्मिक सत्य आत्मा में संस्थित आत्मा की है शुद्धावस्था ...2
इसे ही कहते है शुद्ध परमात्मा, सच्चिदानन्द स्वरूपा ...2
उत्तरोत्तर है श्रेष्ठ सत्य जानो, व्यवहार से आध्यात्म ...2
आध्यात्म प्राप्ति के हेतु प्रयोजन, यथा सशरीर आत्मन् ...2
आध्यात्म सत्य की प्राप्ति के निमित्त त्यजनीय आद्यसत्य ...2
यथा तीर्थंकर राज्यादि त्याग के, पाते हैं आत्मिक सत्य ...2
सत्य ही परमेश्वर है विश्व में, सत्य में सर्व संस्थित ...2
'कनकनन्दी' का सर्वस्व ही सत्य, उसे भजे दिन-रात ...2

टोकर, दि= 17/6/2011, रात्रि 12.15

जैन धर्म में वर्णित महासत्ता एवं अवान्तर सत्ता (36)
(जैन धर्म में वर्णित ब्रह्माण्डीय विज्ञान)

(राग : सत्यं शिवं सुन्दरम्....) अजी रूठकर...

सत्य ही द्रव्य है,ऽऽ द्रव्य में गुण है आ आ पयार्यमय द्रव्य है ऽऽ
जागो ऽऽऽ द्रव्य को देखो, षड्द्रव्यमय विश्व है ऽऽ
द्रव्य गुण पर्याय हो ओ द्रव्य गुण पर्याय ऽऽऽ ... सत्य ही द्रव्य है

...(स्थायी/धत्ता)

एक ही सत्य है, परम सत्ता लोकालोक में सत्ता
सर्वज्ञदेव ने इसे देखा...2
कण कण में है व्यापा... स्वतन्त्र अपनी सत्ता ऽऽऽ

... द्रव्य गुण पर्याय हो ओ (1)

उत्पाद व्यय वाला, ध्रौव्य सहित वाला, अव्यय अविनाशी वाला
अगुरुलघु सदा सत्तावाला...2
शाश्वत अकृत्रिम वाला... नित्य ही परिणमन ऽऽऽ

... उत्पाद व्यय ध्रौव्यम् (2)

जीव अजीव वाला, षड्द्रव्य वाला, चेतन अचेतन वाला ऽऽ
लोक अलोक में है व्याप्त...2
मध्य में मनुष्य लोक वाला... स्वर्ग नरक वाला ... उर्ध्व में सिद्धशिला... (3)

... द्रव्य गुण पर्याय हो ओ...

कर्म रहित वाला, सच्चिदानन्द वाला, त्रैलोक्य दर्शन वाला
आत्मरमण विज्ञान ज्योति वाला...2
ज्ञायक स्वरुप आत्मा...
विमुक्त परम आत्मा
चरमध्येय वाला, वीतराग वाला ... सिद्धों की जाओ शरण (4)

... द्रव्य गुण पर्याय हो ओ...

अष्ट कर्म बन्धनं, विमुक्त चिदानन्दं, निजानन्द शुद्ध स्वभावम्

'कनकनन्दी' का स्वभावम् ...2

प्रत्येक जीव का भावम्

अन्तिम स्वशरणम् , स्वयं में स्वरमणम् ... सच्चिदानन्दभावम् (5)

... द्रव्य गुण पर्याय हो ओ ...

टोकर, दि= 2/6/2011, मध्याह्न 3.25

(जन्म-जरा-मरण तथा अमृत स्वरुप) (37)

राग : सत्यं शिवं सुन्दरम्....)

जन्म ही मरणं, मरण से जन्मं, मध्य में जीर्णम्

जागो... SSS स्वयं को जानो, स्वस्वरूप अमृतम्,

जन्मजरा मरणं... हो ओ... जन्मजरा मरणं...2 तीनोंमय ही भ्रमणम् !

... दुःखमय ही है तीनों ...

... तीनों से परे अमृतम् ... आ आ

जन्म से पहले, जन्म से परे, स्वयं का होता अस्तित्व,

कर्म से तीनों का हैं जन्म...2 जन्मजरा व मरणम्

तीनों से रहित मोक्षं... सच्चिदानन्द स्वरुपम् SSS हो ओ...2

शरीर का जन्म, जीर्ण भी शरीरं, मरण भी कर्मजन्य

तीनों ही कर्म के सौजन्य...2 शुद्धात्मा से भिन्न ...

तीनों के नाश निमित्तं ... आध्यात्म साधना हितम् ... हो हो

अन्यथा कारण ऋतम् ...2

दर्शनज्ञान चारित्रं... सम्यक्त्व संयुक्तं... तीनों से मिलता मोक्षम्...

सत्यशिवसुन्दर युक्तम्...2 यह है अमृत रूपम् ...

'कनक' का साध्य रूपम्... साधन अन्य स्वरूपं... जन्ममृत्युनाशरूपम्...2

सेमारी दि= 6/7/2011, मध्यान्ह 2.12

जैनधर्म में वर्णित एकीकृत सिद्धान्त (M.Theory) (38)

शाश्वतिक परिणमनशील स्थायित्व द्रव्य (सत्य)

(परिणमनशील सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड)

(राग : सत्यं शिवं सुन्दरम्... ''उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्तं सत्'' सूत्र सम्बन्धी कविता....)

उत्पाद ही व्यय है... व्यय ही उत्पाद है... ध्रौव्य उभय है... SSS

जानो द्रव्य को मानो... तीनों मय ही सत्यम् SSS

उत्पाद व्यय ध्रौव्यं S... हो..ओ.. उत्पाद व्यय ध्रौव्यं... 2... तीनों ही द्रव्य है... (स्थायी)

उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्, तीनों ही पृथक् पृथक्

अनेकान्त से सिद्ध है...2 प्रत्येक द्रव्य में व्याप्त...

अगुरुलघु से व्याप्त... उत्पाद व्यय ध्रौव्यम् ... 2 (1)

वैश्विक सत्य है, सम्पूर्ण द्रव्य में युक्त, आगम युक्ति से युक्त...

सूक्ष्म स्थूल में भी है व्याप्त...2 मूर्ति अमूर्ति सहित...

शुद्ध-अशुद्ध संयुक्त... त्रिकाल घटित सत्य... उत्पन्न विगम स्थितम् ... (2)

संसारी-मुक्त निहितं, जन्म-मरण ध्रुवत्वं... कर्म विनष्ट सिद्धत्वम्...

कटक केयूर काञ्चनम्...2 त्रय में कनक युक्तम्...

हर्ष-विषाद माध्यस्थं... त्रय दृष्टि युक्त ग्राहकम्... भिन्नाभिन्न समन्वितम् (3)

सत्य न उत्पाद व्ययं, पर्याय दृष्टि युक्तं, द्रव्य ही शाश्वत सत्यम्...
द्रव्यमय है सर्व लोकम्...2 'कनकनन्दी' में युक्तम्...
सिद्धान्त एकीकृतं... वैश्विक परम सत्यं... लोकालोक व्याप्तम्... उत्पन्न विनिष्ट स्थितम् (4)

सेमारी, दि= 3/7/2011, रात्रि 11.08

मोक्षमार्ग एवं मोक्ष (39)
(सम्यदर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः
सूत्र की व्याख्या) (रागः सत्यं शिवं सुन्दरम्...)

दर्शन से ज्ञान है, ज्ञान से चारित्र है, सम्यक्त्व संयुक्त है
जानों SSS तीनों को मानो, तीनों से मिलता निर्वाण है SSS
दर्शन ज्ञान चारित्रं... हो ओ दर्शन ज्ञान चारित्रं, त्रयस्वरूप ही मोक्षम् (टेक)

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रं... मोक्षमार्ग स्वरूपम्
दर्शन ज्ञान चारित्र युक्त मोक्षमार्ग...2 पूर्णता से ही है मोक्ष
सम्यग्दर्शन से प्रारंभ... चारित्र से होता (मोक्ष) सम्पूर्ण.... (1)

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्... शुद्धात्मा का होता है श्रद्धानम्
सर्वद्रव्यों से पृथक् श्रद्धान...2 आत्म प्रतीती है श्रद्धानम्
इससे होता है सम्यग्ज्ञान... जिसे कहते हैं परमज्ञान... हो ओ चारित्र सच्चा निदान ... (2)....

तीनों की उत्पत्ति जीव में जानों... विकास करता जीव में मानों
इससे होता पूर्ण निर्वाण...2 दुःख भी होते नाश (सम्पूर्ण)
आत्मगुण होते सम्पूर्ण...2 यह (ही) होता परिनिर्वाण...(3)

कनकनन्दी का परम लक्ष्य... जीव बनता परम साक्ष्य...
अक्षय अनन्त परम सौरव्यम्... दर्शन ज्ञान चारित्र रूपम्...

सेमारी 3/7/2011, रात्रि 10.52

आहार दान के सप्त गुण (40)

(तर्ज- पूजा पाठ रचाऊँ... (2) नाम तिहारा...)

नवधा भक्ति सप्तगुण युत, जो देता है आहार।
पुण्य लाभकर परम्परा से, हो जाता है भवपार।। (टेक)
नवधा भक्ति सप्तगुण शून्य, जो देता है आहार,
वह न आहारदान करता, करता है लोकाचार,
स्व-पर हितार्थे स्वधन खरचे, विधि द्रव्य दातृ पात्र युत।
अतिशय युत दान सो होता, सातिशय फल युक्त।। नवधा... (1)
क्रोध ईर्ष्या मायाचार शून्य, निदान विषाद हीन,
हर्ष सहित व अहंकार ही सप्तगुण युत जान,
क्रोध विरहित क्षमाभाव युत, ईर्ष्या भाव से रहित
मायाचार रिक्त सरलता युक्त, कूट-कपट से रहित।। नवधा... (2)
सांसारिक धन वैभव न चाहे, निदान बन्ध से रहित,
समय साधन श्रम के निमित्त, न होता विषाद युत,
दान के कारण होता अति हर्ष, तन-मन पुलकित भाव।
अहोभाग्य अहो पुण्य माने, न करता अहंभाव।। नवधा... (3)
मन वच काय कृत कारित व, अनुमोदन से युक्त।
नवकोटि से सप्तगुण पाले, यथार्थ दानी महन्त,
इसके बिना दान नहीं होता, वह होता है विनिमय।
आहार द्रव्य का प्रदान केवल, न होता आहार दान।। नवधा... (4)

नवधा भक्ति व सप्तगुण युक्त, करो हे! आहार दान,
इसी विधि में अन्यदान, करो हे जीवन धन्य,
करो कराओ व अनुमत करो, मन वच काय से युक्त।
''कनकनन्दी'' द्धारा यह रचना हुई, जो है आगम विहित।। नवधा... (5)
सेमारी-24/7/2011, मध्यान्ह. 4.17

आत्मधर्म तथा अनात्म धर्म (41)

(आध्यात्मिक धर्म एवं रूढ़िवादी कट्टर धर्म का स्वरूप तथा फल)

(राग : 1. आत्म शक्ति से ओत प्रोत... 2. पावन है इस...)

परम पवित्र आत्मधर्म मेरा, समस्त बन्धन/(सीमा) रहित है...2
पन्थ-मत परम्परा से परे, आत्मिक गुणों से सहित है...2... स्थायी...

तर्क-कुतर्क व वाद-विवाद से, रहित चिदानन्द स्वरुप है...2
जाति-कुल व गोत्र रहित है, तन-मन विरहित चिन्मय है...2 (1)

द्रव्य भाव नोकर्म से रहित, जन्म-मरण विरहित है...2
पुण्य-पाप बिन ज्ञानानन्द रूप, सांसारिक सुख-दुःख रहित है...2 (2)

क्षेत्र काल की सीमा से रहित, अनन्त अविनाशी स्वरूप है...2
इन्द्रिय यन्त्र व ग्रन्थों से अज्ञात, पावन अनुभव गम्य है...2 (3)

आकाश सम अखण्ड अविकारी, अनन्त अक्षय अरूपी है...2
मोही-रागी-द्वेषी जीवों से, अज्ञात-असेवनीय रूप है...2 (4)

प्रचलित धर्म पन्थ परम्परा, आत्मधर्म का शरीर है...2
आत्मधर्म से रहित यदि है, शिव नहीं शव के समान है...2 (5)

शव समान धर्म से उपजे, संकीर्ण-कट्टर दुर्गन्ध है...2
घृणा विद्वेष व क्रूरता स्वरूप, उपजे रोगाणु प्रचुर है...2 (6)

आत्मधर्म/(मेरा धर्म) से इससे विपरीत, व्यापक उदार पावन है...2
अहिंसा सत्य व समतामय है, शान्त स्वस्थमय अमृत है...2 (7)

मेरा स्वरूप भी मेरा धर्ममय, धर्म व धर्मी अभेद है...2
'कनकनन्दी' का साधन-साध्य भी, आत्मधर्म निज/(जिन)(शुद्ध)रूप है...2 (8)

सेमारी, दि= 3/9/2011, रात्रि 11.03

भाव ही सर्व सुन्दर (42)

(बंगला राग....)

देखो देखो देखो स्वभाव को देखो! कितना महान् है स्व-भाव देखो!
सुन्दर मेरा भाव सुन्दर, यहाँ ही जन्में शुभ व पुण्य
स्वर्ग व मोक्ष मन्दिर!
यहाँ ही जन्में सत्य व शिव, यहाँ ही जन्में मंगल... सुन्दर... (टेक)...

यहाँ से हटे अज्ञानतम, यहाँ से छटे विकार...2
यहाँ से भाग्य निर्माण होता, यहाँ से होता निर्वाण... सुन्दर... (1)

यहाँ से संवर निर्जीर्ण होता, यहाँ से खुले है बन्धन...2
यहाँ पाप से पुण्य हो जाता, यहाँ से पापी विमल... सुन्दर... (2)

यहाँ से जंगल मंगल होता, अशुभ से हो शुभतर...2
भाव शोभा से सब सुन्दर, भाव ही शिव मंगल... सुन्दर... (3)

इसी हेतु ही धर्म करम, इसी हेतु देव मन्दिर...2

इसी हेतु ही ज्ञान ध्यान सब, तप त्याग दान विचार... सुन्दर... (4)

'कनकनन्दी' का सर्वस्व भाव, भाव बिना सब बेकार...2

भाव को जानो भाव मानो, भाव ही सबके सार... सुन्दर... (5)

सम्पूर्ण विकास के सूत्र (43)
(समग्र स्वतन्त्रता से ही समग्र विकास)

राग : सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों....

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों, सर्व संन्यास का सच्चा रहस्य।

जिससे प्राप्त होता है सत्य, आत्मिक शान्ति श्रेष्ठ विकास।।... स्थायी...

सर्व संन्यास में होता है त्याग, बहिरङ्ग-अन्तरङ्ग बन्धन।

धन जन व ख्याति पूजा लाभ, क्रोध मान माया लोभ बन्धन।।

विवाह से पति-पत्नी बन्धन, जिससे जन्म ले अन्य बन्धन।

सन्तान परिवार समाज कृषि व्यापार व नौकरी बन्धन।।

संकीर्ण पन्थ-मत शिक्षा कानून, राजनीति सरकारी बन्धन।

लौकिक शिक्षा व भौतिक ज्ञान, परम विकास में बाधक जान।।

इन बन्धनों से जकड़ा मानव, न कर पाये पूर्ण विकास।

शिक्षा संस्कार सदाचार शान्ति, सत्य विज्ञान व आत्म विकास।।

इसी हेतु तो तीर्थंकर बुद्ध गणधर साधु हुए संन्यासी।

राजवैभव व सत्ता सम्पत्ति सर्व बन्धों से हुए विरागी।।

शान्ति कुन्थु व अहरनाथ जो चक्री कामदेव तीर्थंकर थे।

तीनों ही पद के त्याग के कारण, सर्वोदय से युक्त हुए थे।।

इससे सिद्ध होता स्वयमेव, बन्धन में नहीं पूर्ण विकास।

यथा यथा बन्धन है त्याग, तथा तथा बढ़े आगे विकास।।

लेखक, चिन्तक, कवि, वैज्ञानिक, साधु, कलाकार, न्यायाधीश।

बन्धन में जो बन्धा होता, न कर पाये सही विकास।।

हेम पिञ्जर में बद्ध यथा ही, पक्षी न उड़ पाये विशेष।

तथा ही बन्धन आबद्ध मानव, न कर पाये सही विकास।।

अतएव सम्पूर्ण विकास प्रेमी करो है बन्धन सर्व विनाश।

'कनकनन्दी' तो करे प्रयास, जिससे मिले है पूर्ण विकास।।

सेमारी, दि= 1/9/2011, रात्रि 12.53

परम आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की कविता

राजतन्त्र या लोकतन्त्र में भी पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं (44)

(हे मुमुक्षु आत्मन! स्व व मानवकृत बन्धन त्यागो!)

(रचयिता आ. कनकनन्दी की प्रतिज्ञा एवं विश्व के लिए आह्वान!)

(राग : इन्साफ की डगर.... ऐ दिल मुझे बता दे....)

सत्य शान्ति बल पर, हे आत्म आगे बढ़ना

सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... (स्थायी)...

सबसे पहिले काटो, अन्दर के सारे बन्धन

क्रोधादि मोह माया, संकीर्ण स्वार्थ मदन

सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (1)

पावन उदार भाव, सर्वत्र साम्य रखना

स्वतन्त्र शुद्धता से, सारे ही बन्ध त्यजना
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (2)
स्व-पर-विश्व हेतु, संकीर्ण भाव त्यजना
मानवकृत बन्धन, भाव से नहीं भजना
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (3)
स्व स्वार्थ हेतु मानव, बन्धन विविध बनाता
परिवार, समाज, राष्ट्र, राजनीति न्याय मान्यता
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (4)
धार्मिक पन्थ शिक्षा, विज्ञान या सभ्यता
रीति-रिवाज-नियम, संविधान दन्तकथा
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (5)
दासत्व बलिप्रथा, दहेज भ्रूणहत्या/(सतीप्रथा)
शासक-शासित हो, मजदूर-स्वामीप्रथा
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (6)
जन्म-मृत्यु-विवाह, पर्व व खेलादि में
समता-शान्ति-सत्य, रहित सर्व बन्ध
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (7)
नवधा कोटि से इसे, तुम भी कभी न करना
जो जन इसे करे हैं, उनसे तटस्थ/(साम्य)रहना
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (8)
इनके ही त्याग हेतु, चक्री भी साधु बनते
शासक चक्रवर्ती, इनसे भी बन्धे रहते
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (9)

प्रजातन्त्र में अभी भी, बन्धे प्रजा व नेता
नौकरशाह सहित, कोर्ट के न्यायदाता
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (10)

गणतन्त्र में भी जब, मुक्त न न्यायाधीश
कानून के परे न, कहे सत्य वक्तव्य
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (11)

रहते जब नौकरी में, कहे ऐसा वचन
मानकर इसे दोष, किया जाता निष्कासन
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (12)

सत्ता-धन-प्रभुत्व, सब ही है बन्धकारक
मोहासक्त जो जीव, इसे माने अति गौरव
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (13)

इसलिए तो सत्य-समता-सुख नहीं मिलते
जिसके हेतु मानव, विभिन्न दुःख सहते
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (14)

बन्ध ही दुःख हेतु, मोक्ष है सुख हेतु
आत्मिक मुक्ति बिना, सर्व ही दुःख हेतु
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (15)

तुमने इसी हेतु से, श्रमणत्व को स्वीकारा
सच्चा स्वरूप न है, फिर भी 'कनक' तुम्हारा
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना... सत्य... (16)

सत्य शान्ति बल पर, हे आत्म आगे बढ़ना!
सर्वत्र है बन्धन, तुम उनसे बचते चलना!!

सेमारी, दि= 8/9/2011, रात्रि 12.34

दशविध आध्यात्मिक वैश्विक धर्म (45)

(राग : 1. बंगला 2. नगरी-नगरी)

जय हे! आत्मिक/(आत्म) धर्म प्यारा, जय हे! वैश्विक धर्म...
जय हे! दशधा धर्म प्यारा, जय सर्वोदयी धर्म...
जय हे! कर्मजयी धर्म प्यारा, जय हे! दुःखहर धर्म...
जय हे! बन्धनाशी धर्म प्यारा, जय हे! मोक्षकर धर्म...
जय हे! सर्वोत्तम धर्म प्यारा, जय हे! रत्नत्रयमय...
जय हे! सर्वजयी धर्म प्यारा, जय हे! शाश्वत धर्म... टेक....

क्षमा/ क्रोध अभावे क्षमा उपजे, क्षोभ अशान्त विनाशे।...2
वैरत्व विद्रोह कलह नाशे, तन मन आत्म विकासे।।...2 (1)

मार्दव/ मान अभाव से नम्रता आवे, ज्ञान यश सुख पावे।...2
आत्मानुशासन गुण को पावे, मोक्षद्वार प्रगटावे।।...2 (2)

आर्जव/ माया के नाश से उपजे आर्जव, सहज सरल भाव।...2
मन वच काय में समता प्रवृत्ति, पारदर्शी युत भाव।।...2 (3)

शौच/ लोभ हनन से उपजे है शौच, पवित्र वैराग्य भाव।...2
सत्ता सम्पत्ति-प्रसिद्धि के प्रति, नहीं होता राग भाव।।...2 (4)

सत्य/ कषाय रहित समता से युक्त, तथ्य-पूर्ण न्याय युक्त।...2
स्व-पर हितार्थे अविकारी पथ्य, त्रिकाल अखण्डित सत्य।।...2 (5)

संयम/ मन वच इन्द्रिय नियन्त्रित, सर्वजीव रक्षा व्रत।...2
लौकिक-आत्मिक विकास हेतु, संयम धर्म है श्रेष्ठ।।...2 (6)

तप/ तृष्णा विरहित आत्मा के शोधक, उत्तम तप है धर्म।...2
शरीर मन व आत्म-शोधक, उत्थान सोपान धर्म/(कारक कर्म)।।..2 (7)

त्याग/ अनात्म वस्तु में ममत्व त्याग, भौतिक बन्धन मुक्त।...2

आत्मिक विकास में बाधाकारक, समस्त संक्लेश त्याग।।...2 (8)

आकिंचन्य/ स्वात्म वैभव से परिपूर्ण हो, अन्य समस्त विमुक्त।...2

अनन्त वैभव प्राप्ति हेतु, भौतिक वैभव मुक्त।।...2 (9)

ब्रह्मचर्य/ स्व-ब्रह्म के भोग के हेतु, भौतिक भोग का त्याग।...2

ब्रह्म स्मरण स्व-ब्रह्म रमण, ब्रह्मचर्य आत्म भोग।।...2 (10)

'कनकनन्दी' का आत्म-स्वरूप, सर्व जीव शुद्ध रूप।...2

राष्ट्र जाति-पंथ परे ये धर्म, जो पाले यह उसका धर्म।।...2

उत्तम क्षमा धर्म (46)

(घातिया कर्मों के क्षय से होती है-सम्पूर्ण उत्तम क्षमा)

राग : यमुना किनारे श्याम....

स्व-पर को क्षमा करो क्षमा भी मांगो,
दान बिना याचना किया न करो।
यथा बोओ तथा काटो/(पाओ) यह नियम,
क्षमा दाने क्षमा मिले यह निदान।
उर्वरा भूमि में बीज होता है वृक्ष,
चट्टान में बीज कहाँ बने है वृक्ष।।... टेक/स्थायी...

क्रोधादि कषाय जब होता भाव में,
क्षोभ उत्पन्न होता तब ही भाव में।
क्षोभ भाव ही अक्षमा या अधर्म,
भाव हिंसा या प्रमाद अनात्म धर्म।
पाप का आस्रव बन्ध होता तत्काल/(प्रचुर),
अशान्ति, रोगकारक, नरकद्धार।।... (1)...

कलह,वाद-विवाद, वैरत्व बढ़े,

हिंसा-प्रतिहिंसा से संग्राम/(महायुद्ध) भी चले।

उत्तम क्षमा से यह सब होते भी नहीं,

शान्ति व स्वर्ग-मोक्ष मिलते सही।

पार्श्वप्रभु/(कमठ-मरुभूति) का दृष्टान्त हमें सिखाता,

क्षमा धर्म की महिमा हमें बताता।।... (2)...

क्षमा रहित भाव से क्षमा मांगे जो जन, अथवा क्षमा प्रदान करे जो जन।

स्व-पर को धोखा देता वह दुर्जन, बगुला भगत सम करे है वर्तन।

केवल वाणी में नहीं क्षमा निदान, नव कोटि से क्षमा का होता पालन।।... (3).

मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी का होता अभाव, आंशिक क्षमा धर्म होता प्रादुर्भाव।

उत्तरोत्तर कषायों के क्षय होने से, क्षमा धर्म का उदय होता स्वयं से।

घातिकर्म क्षय से होती सम्पूर्ण क्षमा, अनन्त वैभव युक्त उत्तम क्षमा।।... (4)...

विकास के लिए त्याग करो या दान (47)

(त्याग संभव न हो तो दान करो)

तर्ज : (दिल जाने जिगर.... दुनियाँ में रहना है तो....)

त्याग करो भाई त्याग करो रे -2

अन्तरंग-बहिरंग त्याग करो रे -2

अन्तर विकार त्याग करो रे -2

बाहर सम्पत्ति का त्याग करो रे -2।। (टेक)

अन्तर त्याग सहित होता, बहिरंग त्याग हितकर होता,

अन्तर त्याग करने हेतु -2, बहिरंग त्याग परिकर है।।.... (1)

बहिरंग में परिग्रहधारी, अन्तरंग में है दोषकारी,

बिना अन्तर परिग्रह से -2, बहिरंग में न परिग्रही रे।।.... (2)

अन्त त्याग का बाह्यत्याग से, अविनाभावी संबंध होता,

जहाँ धुआँ है अग्नि भी होगी-2, जहाँ जीव है चेतना होगी रे।।... (3)

अन्तरंग में परिग्रही जो होता, बिना बहिरंग परिग्रह से,

कांचूली त्याग मात्र से नाग, नहीं होता है निर्विष नाग रे।।... (4)

सर्वत्याग से सर्वज्ञ होता, परिग्रह से नारकी होता,

परिग्रह के कारण जीव-2, बन जाता भ्रष्टाचारी रे।।... (5)

वनस्पति के त्याग के कारण, जिन्दा रहता मानव धरती पर,

अनाज फल दवा आदि से, वृक्ष करता महोपकार रे।।... (6)

दूध, घी, मट्ठ, मलाई आदि, दूधारु मादा से पाता मानव,

वस्त्र, लकड़ी, तेल सुगन्धी-2, वनस्पति से पाता मानव रे।।... (7)

त्यागी का सदा होता सम्मान, शोषक का होता अधःपतन,

त्याग से बादल होता ऊपर-2, ग्रहणकर्त्ता नीचे सागर रे... (8)

गति होती है त्याग पूर्वक, बिना त्याग से नहीं है गति,

प्रगति होती त्याग सहित-2, बिन त्याग से प्रगति नहीं रे।।... (9)

सर्वस्व उत्सर्ग होता है त्याग, दान होता है आंशिक त्याग,

संभव न यदि सर्वस्व त्याग, दान तो सदा मानव करो रे।।... (10)

तन मन धन समय श्रम से, त्याग अथवा दान करो रे,

दोनों के बिना हे मानव-2, वृक्ष से भी तू अति हीन रे।।... (11)

विकास उपाय त्याग या दान, ग्रहण करो तू मानव रे,

''कनकनन्दी'' करे आह्वान्-2, त्याग से बन जाओ भगवान् रे।।... (12)

सेमारी- 10/9/2011 मध्यान्ह, 3.35

हे माँ! जिनवाणी हमारी रक्षा करो सबको शिक्षा दो (48)

''धार्मिक विकृतियों को दूर करने हेतु माँ जिनवाणी से प्रार्थना''

तर्ज -(प्रभु नेमि बता जाना....)

जिनवाणी हमें बतला, सच्चा धर्म रूप सदा, यथा सर्वज्ञ ने जाना।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव से... निश्चय व्यवहार से, यथा गुरुओं ने माना।।...

उत्सर्ग अपवाद से... वय रोग शक्ति दृष्टि से, यथा मूल न लोप हुए।
यथा माता गुरु कहते... तथाहि हमें बतला सापेक्ष दृष्टि कोण से।।

जिनवाणी हमें.....1

तुमसे हमने सीखा..., सत्य, साम्य, शांति, धर्म, यथा प्रभु ने माना।
अभी तो धर्म क्षेत्र में भी... इससे विपरीत पाया, प्रायोगिक जीवन में।।

जिनवाणी हमें..... 2

तुमने तो सत्य कहा..., रत्नत्रय है आत्म धर्म, व्यवहार निश्चय से।
अभी तो यह पाया है..., सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि ही प्राप्त उपभाग धर्म।।

जिनवाणी हमें.....3

अनेकान्त समन्वय ही..., व्यक्ति समाज दृष्टि से, शान्ति, एकता का मार्ग है।
परन्तु मैंने तो पाया..., एकांत विघटन है, समाज व संघों में।।

जिनवाणी हमें..... 4

तुमसे हमने सीखा... समता व निस्पृहता श्रमणों की सच्ची साधना।
किन्तु हमने जो पाया अभी... सच्चे साधु की उपेक्षा, धन, नाम, साधु पूजा।।

जिनवाणी हमें.... 5

त्याग वैराग्य मौन गया... तृष्णा दिखावा चपलता मनोरंजन फूहड़ता।

विज्ञापन प्रसिद्धि बोली... खाना पीना मजा मस्ती धर्म के नाम चला।।

जिनवाणी हमें.... 6

ध्यान-अध्ययन लोप हुआ... साधु से समाज चाहे, धन-जन व मनोरंजन।

जो साधु इसके दाता... वह ही साधु-महात्मा, अन्यथा नहीं है अच्छा।।

जिनवाणी हमें.... 7

हे जिनवाणी मेरी माता... तुम ही करो रक्षा अन्यथा नहीं है सुरक्षा।

''कनकनंदी'' की है इच्छा सबको दो सत् शिक्षा, अन्यथा है बड़ी दुर्दशा।।

जिनवाणी हमें.... 8

सेमारी- 16/9/2011, रात्रि 12.8

अध्यात्म प्रकाश से जागृति आध्यात्म जागरण गीत (49)

(सत्य साम्य सुखमय हो सर्व विकास)

आध्यात्म कविता आत्म सम्बोधन

राग : नूतन प्रकाशे जागो, प्रभात होले जागो-2 दिनमणि मोह तिमिर द्धार खोलो हे खोलो... (रवीन्द्र संगीत)

अध्यात्म प्रकाशे जागो प्रभात हुआ,

जागो जागो आत्म सूर्य मोहतिमिर तुम नाशो हे नाशो.../(करो हे दूर)..।

नाशो मिथ्या अन्धकार कषाय पर्वत तुम करो हे पार।।... (टेक)....

ज्ञान प्रकाश फैलाओ स्वार्थ मच्छर भगाओ

भाव कमल खिलाओ सुगुण सुरभि विस्तार करो हे करो

ज्ञानानन्द मकरन्द सेवन करो... (1)

अनन्त काल बिताया निगोद मध्ये

कृमि कीट पशु देव नारकी मध्ये

तथापि आत्म प्रकाश से रहे हे दूर... (2)

मानव/(नर) में ही आत्म प्रकाश होता विस्तार

कुकृत्य प्रमाद में न गँवाओं आत्म विस्तार

आत्म विस्तार से मिले आत्मसार... (3)

आत्मविकास से ही सर्वोदय होता है,

आत्म पतन से अनुदय होता है।

पावन परिणाम से सर्वोदय होता है

पतित भाव से अनुदय होता है।।... (4)

संकीर्णता स्वार्थनिष्ठा अन्धश्रद्धा अज्ञान,

क्रोध मान माया लोभ जानो आत्म पतन

इससे विपरीत जानो आत्म उत्थान... (5)

'कनकनन्दी' स्व उदय में सदा प्रयासरत

विश्व का सर्वोदय हो मम अन्तःप्रयास

सत्य साम्य सुखमय हो सर्व विकास... (6)

सेमारी, दि- 17/9/2011, रात्रि 11.17

सत्य परमेश्वर की स्तुति (50)

सत्यरूपाय नमो नमः, विश्वरूपाय नमो नमः।

द्रव्यरूपाय नमो नमः, परमेश्वराय नमो नमः।। (1)

सनातनाय नमो नमः, ध्रौव्य रूपाय नमो नमः।

गुणरूपाय नमो नमः, सर्वात्माने नमो नमः।। (2)

अजराय नमो नमः, अमराय नमो नमः।

अमृताय नमो नमः, अव्ययाय नमो नमः।। (3)

सूक्ष्मरूपाय नमो नमः, विशालाय नमो नमः।

अनन्तरूपाय नमो नमः, सर्वव्याप्ताय नमो नमः।। (4)

अस्तिस्वरूपाय नमो नमः, नास्तिस्वरूपाय नमो नमः।

अव्यक्तरूपाय नमो नमः, व्यक्त रूपाय नमो नमः।। (5)

एकरूपाय नमो नमः, अनेक रूपाय नमो नमः।

ज्ञानरूपाय नमो नमः, ज्ञेयरूपाय नमो नमः।। (6)

परमरूपाय नमो नमः, अन्तिम रूपाय नमो नमः।

अन्तःरूपाय नमो नमः, बाह्यरूपाय नमो नमः।। (7)

प्रज्ञारूपाय नमो नमः, प्रमेय रूपाय नमो नमः।

ध्यानरूपाय नमो नमः, ध्येयरूपाय नमो नमः।। (8)

सेमारी, दि=17/9/2011, रात्रि 2.20

सम्यग्ज्ञान की स्तुति (ज्ञान संकीर्तन) (51)

रचयिता- आचार्य कनकनन्दी

ज्ञान रूपाय नमो नमः, आत्म रूपाय नमो नमः।

चेतनाय नमो नमः, स्वरूपाय नमो नमः।।

सम्यग्ज्ञान नमो नमः, पंचज्ञानाय नमो नमः।

मतिज्ञानाय नमो नमः, आद्यज्ञानाय नमो नमः।।

श्रुत ज्ञानाय नमो नमः, द्वादशाय नमो नमः।

अवधि ज्ञानाय नमो नमः, सीमाज्ञानाय नमो नमः।।

मनज्ञाय नमो नमः, ऋद्धिरूपाय नमो नमः।

सुज्ञानाय नमो नमः, छद्मस्थाय नमो नमः।।

सर्वज्ञाय नमो नमः, केवलाय नमो नमः।

अनन्ताय नमो नमः, शुद्धात्मने नमो नमः।।

विवेकाय नमो नमः, चैतन्याय नमो नमः।

ज्योतिरूपाय नमो नमः, सुख रूपाय नमो नमः।।

शाश्वताय नमो नमः, गुणरूपाय नमो नमः।

ज्ञानानन्दाय नमो नमः, सर्वव्यापाय नमो नमः।।

सेमारी- 17-9-2011 मध्यान्ह- 6.15

रत्नत्रय/मोक्षमार्ग कीर्तन (52)

- आचार्य कनकनन्दी

मोक्षमार्गाय नमो नमः --- रत्नत्रयाय नमो नमः।

शुद्धात्म रूपाय नमो नमः --- मोक्षरूपाय नमो नमः।।

आत्मधर्माय नमो नमः --- स्वरुपाय नमो नमः।

कर्मध्वंसाय नमो नमः --- मोक्षदाताय नमो नमः।।

शुभरूपाय नमो नमः --- शुद्धरूपाय नमो नमः।

सम्यक्त्वाय नमो नमः --- अष्टांगाय नमो नमः।।

सम्यग्ज्ञानाय नमो नमः --- पञ्चज्ञानाय नमो नमः ।

चारित्राय नमो नमः --- पञ्चाचाराय नमो नमः।।

पञ्चव्रताय नमो नमः --- दशधर्माय नमो नमः।

साधनरूपाय नमो नमः --- साध्यरूपाय नमो नमः।।

सेमारी, दि- 18/9/2011, रात्रि 11.08

नव देवता कीर्तन (53)

- आचार्य कनकनन्दी

नवदेवाय नमो नमः --- भाव-द्रव्याय नमो नमः

अरिहंताय नमो नमः --- सर्वज्ञाय नमो नमः

श्री सिद्धाय नमो नमः --- श्री शुद्धाय नमो नमः

सूरीदेवाय नमो नमः --- दीक्षादाताय नमो नमः

पाठकाय नमो नमः --- शिक्षादाताय नमो नमः

श्रमणाय नमो नमः --- साधकाय नमो नमः

जिनधर्माय नमो नमः --- वस्तु स्वरूपाय नमो नमः

श्रुतज्ञानाय नमो नमः --- सरस्वतै नमो नमः

जिनचैत्याय नमो नमः --- जिनबिम्बाय नमो नमः

जिननिलयाये नमो नमः --- जिनमन्दिराय नमो नमः

सेमारी, दि- 19/9/2011, सायं 7.40

परिच्छेद - II

विज्ञान एवं गणित का सच्चा तथा व्यापक स्वरूप (1)

(धर्म रहित विज्ञान अन्धा, अवैज्ञानिक धर्म पंगु!)

(तर्ज- 1. यमुना किनारे श्याम.... 2. अच्छा सिला दिया....)

वैज्ञानिक प्रयोग तो किया भी करो, ब्रह्माण्ड के रहस्यों को खोजा भी करो
खोज बोध शोध को बढ़ाया करो, सत्यज्ञान प्राप्ति हेतु आगे ही बढो
प्राप्त ज्ञान से विश्व कल्याण करो, विज्ञान की सीमा को बढाते चलो... (स्थायी)

सापेक्ष सिद्धान्त तथा अणु सिद्धान्त, पर्यावरण रक्षा तथा जीव सुरक्षा;
शाकाहार करना तथा स्वास्थ्य विज्ञान, ब्रह्माण्डीय ज्ञान तथा मनोविज्ञान;
भौतिक ज्ञान तथा रसायन ज्ञान, जीव विज्ञान तथा जिनोम ज्ञान... (1)

यान वाहन व कम्प्यूटर ज्ञान, टी.वी. मोबाइल आदि सञ्चार ज्ञान;
इत्यादि शोध बोध आविष्कार से, विज्ञान का उपकार मानव जाति के;
पर्यावरण रक्षादि से प्राणी मात्र के, कार्यकारण सूत्र से सूक्ष्म दृष्टि के... (2)

बहुविध उपकार जीव मात्र के, संकीर्णता नाशक बहुदृष्टि से;
विज्ञान ने सिखाया वैश्विक दृष्टि, कट्टरता के नाशक है विज्ञान दृष्टि;
इसलिए विज्ञान विकास कर रहा, सर्वमान्य विषय वो बन रहा... (3)

तथापि अनेक दोष विज्ञाने स्थित है, सार्वभौम सत्य से दूर ही स्थित है
अमूर्तिक अभौतिक का ज्ञान नहीं है, चैतन्य आत्मा का तो भान नहीं है
अनन्त अनादि का तो पता नहीं है, आत्मकल्याण का ठिकाना नहीं है...(4)

पुनः जन्म सिद्धान्त व कर्म सिद्धान्त, पुण्य पाप बन्ध मोक्ष आत्म सिद्धान्त,

इत्यादि महाज्ञान का नहीं है भान, इसलिए विज्ञान है अपूर्ण ज्ञान;
अनिर्णीत अपूर्ण व भौतिक ज्ञान दुरुपयोग से अहित है ज्ञान/(जान)... (5)

विज्ञान से जायमान प्रदूषण से, ग्लोबल वार्मिंग व दिनचर्या से
यान वाहन से मरे अनेक जान हैं, अस्र शस्त्र से मारे असंख्य/(अनेक) जान हैं
अनेक रोगों का विकास इससे हुआ, वरदान व अभिशाप विज्ञान हुआ... (6)

अध्यात्म व विज्ञान के दोनों मेल से, विश्व का कल्याण होगा सच्चा दिल से
परस्पर मिलने से होंगे वरदान, विरोधी होने से नाशक निदान
धर्म के बिना विज्ञान अन्धा समान, विज्ञान के बिना धर्म पंगु समान... (7)

अवैज्ञानिक धर्म तो रूढ़ि समान, लकीर के फकीर अन्धश्रद्धा अज्ञान
संकीर्ण कट्टरता आतंकवाद' हिंसा बलि प्रथा भेद-भाव कुज्ञान
प्रतिशोध भाव युक्त युद्ध पिपासु, आक्रमण प्रेरक रक्त पिपासु ... (8)

वैज्ञानिक धर्म इससे विपरीत जान, अहिंसा सत् अचौर्य विवेकवान्
क्षमा शुचिता उदार सहिष्णु जान, स्व-पर-विश्वकल्याणक करुणावान्
सतत प्रगतिशील समतावान् ,पर्यावरण रक्षक आध्यात्म ज्ञान/(जान)... (9)

वैज्ञानिक धर्म हेतु करो प्रयास, दोनों के मिलन से विश्वविकास
विज्ञान भी भौतिक सीमा को त्यागे, धर्म भी कट्टरता भाव को त्यागे
दोनों ही परस्पर गुणों को जाने, 'कनकनन्दी' का आह्वान दोनों ही माने... (10)

सेमारी (राज.) दि= 13/4/2011 प्रातः 5.40

ब्रह्माण्ड की कहानी (2)

(ब्रह्माण्डीय व्यवस्था/प्रबन्ध) Universe management

तर्ज : (सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों....)

आओ बच्चों तुम्हें बताऊँ, ब्रह्माण्ड की सच्ची कहानी।
सर्वज्ञ द्धारा ज्ञात जीवनी, आचार्य द्धारा लिखी कहानी।। टेक ।।

विश्व अकृत्रिम शाश्वत जान, अनादि अनिधन द्रव्य प्रमाण।
कर्त्ता धर्त्ता व हर्त्ता न कोई, उत्पाद व्यय ध्रौव्य सो होई।।
षट् द्रव्यमय लोक प्रमाण, इससे परे है अलोक जान।
तीन सौ तैतालिस घन राजू जान, लोक का घनफल है प्रमाण।।
इससे परे अनन्त आकाश, जिसे कहते हैं आलोकाकाश।
ब्रह्माण्ड व प्रतिब्रह्माण्ड जानो, विज्ञान अपेक्षा परिभाषा मानो।।
जीव पुद्गल धर्म अधर्म, काल व आकाश षट् द्रव्य जानो।
आकाश द्रव्य के मध्य में जानों, पंच द्रव्य का अवस्थान मानो।।
उसे कहते हैं लोकाकाश, उसके बाहरे अलोकाकाश।
लोक के तीन प्रभेद जानो, ऊर्ध्व मध्य और अधो मानो।।
सर्वोच्च ऊर्ध्व में सिद्ध विराजे, उसके नीचे देव विराजे।
मध्य लोक में मानव तिर्यञ्च, उसके ऊपर ज्योतिष मण्डल।।
अधो भाग में नारकी निवास, उसके नीचे निगोद वास।
धर्म अधर्म व्याप्त लोकाकाश, धर्म सहयोगी गमनागमने।।
अधर्म सहयोगी स्थिति निमित्त, काल सहयोगी परिणमन निमित्त।
लोकाकाश में जीव अनन्त, अनन्त गुणे पुद्गल व्याप्त।।
आकाश द्रव्य अनन्त प्रदेशी, धर्म अधर्म असंख्य प्रदेशी।
असंख्य कालाणु लोक में स्थित, छहों द्रव्य है अनादि अनन्त।।

जीवों के दो भेद है जानो, संसारी जीव और मुक्त मानो।
कर्म से युक्त संसारी जानो, कर्म रहित मुक्त है जानो।।
संसारी जीव के चार विभाग, नरक तिर्यञ्च देव मानव।
चौरासी लाख योनी भेद, संसारी जीव के भेद प्रभेद।।
कर्मकृत यह भेद प्रभेद, जन्म-मरण व प्रमोद खेद।
जीवों के भी न कोई कर्त्ता धर्त्ता, रसायन से न बना है आत्मा।।
भावानुसार कर्म सम्बन्ध, जिससे जीवों का होता प्रबन्ध।
प्रशस्त भाव से पुण्य बन्ध, जिससे होता है विकास प्रबन्ध।।
बाह्य द्रव्य क्षेत्र काल जिनोम, इससे प्रभावित विकास क्रम।
बीजानुसारे वृक्ष विकास, कर्मानुसारे क्रम विकास।।
तथापि जीव ना इससे बने, जीव तो चैतन्य भाव से बने।
आत्म विकासार्थे आध्यात्म ज्ञान, आत्मनिष्ठा व सदाचरण।।
समता स्वाध्याय पवित्रभाव, ध्यान अनासक्ति करुणाभाव।
निर्मलभाव से कर्म से मुक्ति, सच्चिदानन्दमय मोक्ष की प्राप्ति।।
ऐसी है बच्चों विश्व की कथा, चेतन अचेतन मिश्र की गाथा।
तुम भी हो चिदानन्द स्वरूप, 'कनक' को भाये मोक्ष स्वरूप।।

विश्व का सही विकास धर्म और विज्ञान के सहयोग से (3)

तर्ज : (आओ बच्चों तुम्हें.... हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-2 राम है....)

सत्य रूप प्रगटेगा उस दिन, विश्व के सही विकास का
जिस दिन होगा सहयोग विश्व में धर्म और विज्ञान का
वन्दे आत्म ज्ञानम्... जय हो विज्ञानम्।। टेक।।

भौतिक तत्त्व के परे विज्ञान भी, आत्मा को सत् मानेगा
मूर्तिक तत्त्व के साथ भी जब, अमूर्तिक तत्त्व को मानेगा
अनादि अनन्त सत्य होता है, जब ऐसा वह मानेगा
तब विज्ञान भी आगे बढ़ के, धर्म सहयोगी बनेगा... जिस दिन होगा... (1)

रूढ़िवाद को त्याग धर्म जब, उदारता को मानेगा
संकीर्णता की सीमा लाँघकर, मिथ्या मत को त्यागेगा
भेद-भाव और अपना-पराया, छोड़ सत्यग्राही होगा
वैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर, त्यागी सहिष्णु बनेगा... जिस दिन होगा... (2)

मिलकर दोनों जब अहिंसा शान्ति से काम लेंगे
आडम्बर व मिथ्यादंभ को, स्वप्रेरणा से त्यागेंगे
शाकाहार व सदाचार से, जीवन जब सादा होगा
आध्यात्मिक शक्ति जागरण से, विश्व विकासशील होगा... जिस दिन होगा... (3)

शिक्षा कानून व राजनीति में, जब इनका प्रयोग होगा
व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र, विश्व को सहज मान्य होगा
सहअस्तित्व से जीवन जीने, विकास हेतु अवसर होगा
सत्ता सम्पत्ति बुद्धि शक्ति का, दुरूपयोग कभी न होगा... जिस दिन होगा... (4)

कर्त्तव्य अधिकार के बल पर, परस्पर उपग्रहो होगा
सर्वात्मा में समभाव रखकर, भाव विश्वमैत्री होगा
पवित्र कर्त्तव्य को पूजा मानकर, निष्काम भाव जागेगा
'कनकनन्दी' की भावना है ये, विश्व में सर्वोदय होगा... जिस दिन होगा... (5)

गणित मेरा नाम है सबसे बड़ा काम है! (4)

(लौकिक एवं अलौकिक गणित की आत्मकथा)

तर्ज : (पूछ मेरा क्या नाम रे.... जीना यहाँ मरना यहाँ....)

गणित मेरा नाम है सबसे बड़ा काम है
संसार के हर काम में सच्चा मेरा मान है।
मैं हूँ व्याप्त लोक अलोक में हर द्रव्य में मैं हूँ
केवलज्ञान के बाद मैं ही सबसे बड़ा मान हूँ।।... टेक/स्थायी...

सत् के बाद मेरा स्थान सत् का मान मैं हूँ,
सत् को मापने वाला सजग गणक/(प्रहरी) भी हूँ।
क्षेत्र काल भाव अल्पबहुत्व मापने वाला हूँ
स्पर्शन अन्तर परिमाण को मैं बताने वाला हूँ ।।गणित।।... (1)

मेरे प्रमुख दो भेद हैं लौकिक अलौकिक नाम से,
लौकिक है लोक प्रचलन सामान्य गणना नाम से।
(लोकोत्तर)/अलौकिक है लोक से परे विशेष गणना नाम से,
संख्यात तक लौकिक मान अंक बीजादि नाम से ।।गणित।।... (2)

मतिज्ञान व श्रुतज्ञान का विषय संख्यात मान है,
कृत्रिम वस्तु की गणना में अधिक इसका काम है।
एक आदि से संख्यात तक क्षेत्रादि लौकिक मान है,
लोक व्यवहार प्रचलन हेतु अधिक इसका काम है ।।गणित।।... (3)

संख्यात असंख्यात अनन्त तक अलौकिक मान का काम है,
अवधि मनः पर्ययज्ञानी ज्ञात असंख्यात मान है।
केवलज्ञानी सब कुछ जाने अनन्त तक मान है,

अनन्तज्ञानी बिना न जाने अनन्त तक मान है ।।गणित।।... (4)

परमाणु से मान प्रारम्भ जघन्य मान जान है,
अक्षय अनन्त केवलज्ञान उत्कृष्टतम मान है।
पुद्गल अणु द्रव्यमान है क्षेत्र है आकाश प्रदेश,
समय प्रमाण काल मान है अनुभाग प्रतिच्छेद विशेष ।।गणित।।... (5)

चेतना के अनुभाग प्रतिच्छेद भाव जघन्य मान है,
चारों जघन्य मान से प्रारम्भ ब्रह्माण्ड के हर मान है।
चारों मान के उत्कृष्टतम है अनन्तानन्त मान,
अन्तिम उत्कृष्ट केवलज्ञान सर्वमान के प्रमाण ।।गणित।।... (6)

केवलज्ञान सर्वज्ञ ज्ञान सर्वमान का है प्रमाण,
मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय यथायोग्य भी है प्रमाण।
सम्यक् ज्ञानों से ज्ञात है मान सम्यक्मान प्रमाण,
सही मान से निर्णित मेरा सत्य-तथ्य प्रमाण ।।गणित।।... (7)

गणित से ही विज्ञान जन्मा व्यापार शिल्प व कला,
गणित से ही मापा/(जाना) जाता है ब्रह्माण्ड रहस्य सारा।
संसार चक्र, कर्म सिद्धान्त द्रव्यों की गणना सारा,
लोक अलोक सूर्य चन्द्रादि गति आगति सारा ।।गणित।।... (8)

भारत ने दिया विश्व को गणित विज्ञान बना हीरो,
गणित ज्ञान के उपयोग बिना इण्डिया बना है जीरो।
भारत में तो सब में घोटाला प्रमाण का क्या काम है,
जहाँ प्रमाण है वहाँ है गणित घोटाला में क्या काम है ।।गणित।।... (9)

जिस ज्ञान से भारत है बना विश्व का गुरु कभी

उसी/(मेरे) ज्ञान के तिरस्कार से तिरस्कृत इण्डिया अभी।
अभी तो जागो सुप्त भारत, छोड़ो है घोटाला सभी,
'कनकनन्दी' के आह्वान को प्रमाण को/(मुझे तो) मानो अभी ।।गणित।।... (10)

गणित मेरा नाम है सबसे बड़ा काम है,
संसार के हर काम में सच्चा मेरा मान है।

सेमारी (राज.) दि= 5/4/2011 रात्रि 12.8

गणित के मौलिक संख्या एवं पद्धति हमें सिखाते! (5)
(संख्या एवं पद्धति के आध्यात्मिक रहस्य)

राग : (अच्छा सिला दिया.... शास्त्रीय....)

(1) 1. (एक) हमें सिखाता है एकत्व बन, अन्यत्व का भाव परित्याग कर।
(2) 2. (दो) हमें सिखाता है द्वैतभाव त्याग, द्वन्द्वातीत भाव में विहार कर।
(3) 3. (तीन) हमें सिखाता है त्रयरत्न धर, त्रिलोक शिखर में निवास कर।
(4) 4. (चार) हमें सिखाता है चारों घाती हन, अनन्त चतुष्टय अधिपति बन।
(5) 5. (पाँच) हमें सिखाता है पञ्च पाप त्याग, पञ्चम गति को वरण कर।
(6) 6. (छह) हमें सिखाता है षड़ावश्यक पाल, षड्हानिवृद्धिमय शुद्धात्मा बन।
(7) 7. (सात) हमें सिखाता है सप्ततत्त्व मान, सप्त परमस्थान परिप्राप्त कर।
(8) 8. (आठ) हमें सिखाता है अष्टकर्म हन, अष्टगुणधारी सिद्धात्मा बन।
(9) 9. (नव) हमें सिखाता है नवदेवता मान, नवलब्धियों की उपलब्धि कर।
(10) 0. (शून्य) हमें सिखाता है कर्मशून्य बन, आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण बन।
(11) a(संख्यात) सिखाता है, संख्यातीत बन, संकीर्ण भाव को परिहार कर।
(12) a.(असंख्यात) सिखाता है, असंख्य प्रदेशी तू, असंख्यात गुणों से परे भी तुम।

(13) ख.(अनन्त) हमें सिखाता है, अनन्तगुणी तुम, अनन्तानन्त शक्तिधारी तुम।

(14) + (योग) हमें सिखाता है, योग-ध्यान कर, त्रय योग को एकाग्र कर।

(15) - (वियोग) हमें सिखाता है, कर्महानि कर, सर्वकर्म वियोग विमुक्त बन।

(16) x (गुणाकार) सिखाता है, गुणवृद्धि कर, गुणश्रेणी चढ़कर सर्वज्ञ बन।

(17) ÷ (भागहार) सिखाता है, कर्मघात कर, सर्वकर्मक्षीण से सिद्धात्मा बन।

झाडोल (स.) दि= 21/5/2011, प्रातः 7.46

प्राचीन एवं आधुनिक वैज्ञानिकों का संक्षिप्त परिचय (6)
(भौतिक वैज्ञानिक से आध्यात्मिक महावैज्ञानिक तक का स्वरूप व फल)

तर्ज : (हे गुरुवर धन्य हो तुम....)

हे वैज्ञानिक धन्य हो तुम, कितने शोध करते हो-2
सत्यग्राही बन एकाग्र मन से, सत्य का बोध करते हो ।। (टेक)...

क्रम नियमित साधना द्धारा, सत्य का ज्ञान करते हो।
पक्षपात बिन सत्य तथ्य युत, साक्ष्य प्रमाण से करते हो।।
मिथ्या परम्परा जाति क्षेत्र परे, प्राकृतिक नियम पालते हो।
जहाँ सत्य मिले उसे ही मानते, पूर्वाग्रह सब टालते हो।। (1) हे...

कर्मभूमि के आदि काल से, तुम्हारा शोध भी जारी है।
कुलंकर से प्रारंभ होकर, तीर्थंकर महाज्ञानी हैं।।
गणधर ऋषि-मुनि विद्याधरादि, प्राचीन महाविज्ञानी हैं।
यतिवृषभ व धरसेनाचार्य, भूतबली पुष्पदंत सूरि हैं।। (2) हे...

वीरसेनाचार्य नेमीचन्द्राचार्य, उमास्वामी अकलंकसूरी हैं।
बराहमिहिर नागार्जुन तथा, आर्यभट्ट धन्वन्तरी हैं।।

सुश्रुत कणाद वाग्भट्ट महर्षि, महावीराचार्य विज्ञानी हैं।

सत्यग्राही बन एकाग्र मन से, सत्य का बोध करते हो।। (3) हे...

बोधायन पायथागोरस ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य ज्ञानी हैं।

श्रीधराचार्य उग्रादित्य, पुनर्वसु, हिपोक्रिटिश ज्ञानी हैं।

आत्रेय आदि मध्यकालीनज्ञानी, देश-विदेश के ज्ञानी हैं।

ये नींव पत्थर जिससे बने, आधुनिक शोध विज्ञानी हैं।। (4) हे...

गैलीलियो न्यूटन जगदीश चन्द्र हैं, ग्राहमबेल एडिसन पाश्चर।

क्यूरी दम्पत्ति फैराडे आइन्स्टीन है, फर्डिनान राइट ब्रदर।।

नीलबोर्न स्टीफन हार्किंग कोठारी, आधुनिक के विज्ञानाचार्य।

करते सत्य-तथ्य के शोधबोध, स्वपर विश्व कल्याणकर।। (5) हे...

आत्मज्ञान युक्त भौतिक ज्ञान से, तेरा होता और अधिक विकास।

भौतिक ज्ञान की संकीर्णता से, तेरा आबद्ध सच्चा विकास।।

इन्द्रिय भौतिक यंत्र से परे, तेरे ज्ञान का नहीं प्रवेश।

इसी कारण जड़ ज्ञान से, घटित होता कभी विनाश।। (6) हे...

युद्ध महायुद्ध प्रदूषण तथा, ग्लोबल वार्मिंग छेद ओजोन।

लाइफस्टाइल पाश्चात्यकरण, कलकारखाना यान-वाहन।।

इत्यादि अनर्थ भौतिकता का, आध्यात्मिकता से होता विनाश।

इसलिए हे भौतिक ज्ञानी!, आध्यात्मिकता का करो विश्वास।। (7) हे...

आध्यात्मिक बनो भौतिकज्ञानी, धार्मिक बनो सच्चे विज्ञानी।

इसी से स्वपर विश्व कल्याणी, परम विज्ञानी आध्यात्मज्ञानी।।

आध्यात्म विज्ञान सच्चा विज्ञान, वैज्ञानिक धर्म वैश्विक धर्म।

इसी से होता है सर्व विकास, ''कनकनन्दी'' का आत्मिक धर्म।। (8) हे..

विज्ञान के अन्धकार पक्ष (7)

(विज्ञान के दुरुपयोग से विनाश)

राग : (यमुना किनारे श्याम....)

विज्ञान का दुरुपयोग किया न करो, विनाश शृंखला आरम्भ किया न करो
सत्य-तथ्य को स्वीकार किया भी करो, यन्त्रों का सदुपयोग किया ही करो
दुरुपयोग अतियोग से हानि होती है, ''अति सर्वत्र वर्जयेत्'' नीति होती है... (टेक)
विज्ञान को अज्ञात है आत्म विज्ञान, परम विज्ञान तथा परिनिर्वाण
आत्म विकास का ज्ञान अभी तो नहीं; आत्मिक शान्ति का मार्ग जानता नहीं
परम सत्य व ब्रह्माण्ड में पहुँच नहीं है, स्वयं को भी सही जानता नहीं है... (1)
विनाशक गाथा नागासाकी भी कहता, हिरोशिमा विध्वंस की लीला बतलाता
विश्वयुद्ध सर्वयुद्ध अन्धकार बताते, विज्ञान की विनाशक शक्ति भी बताते
विज्ञान विशेषज्ञान नहीं बताता, विज्ञान विपरीत ज्ञान सिद्ध है करता... (2)
अस्त्र-शस्त्र मारणास्त्र अणुबमादि, जीव विनाशक प्रदूषक जो यन्त्रादि
विषाक्त गैस आदि जो विनाशकारी, पर्यावरण ध्वंसी कल कारखाना भारी
तथा ही यान-वाहन या उद्योग, हिंसा प्रदूषणकारी सर्वअयोग्य... (3)

जिससे जीवन चर्या होती कृत्रिम, निष्क्रिय आलस्यपूर्ण भोगवादी जीवन
तन-मन रोगकारी आत्म पतन, फैशन व्यसनमय है निम्न जीवन
ऐसा विज्ञान तथा वैज्ञानिक उपकरण, समस्त अहितकारी विशेषज्ञान... (4)

अतः विज्ञान को धर्ममय होना जरूरी, अहिंसा व आध्यात्ममय पर उपकारी
हिताहित विवेकयुक्त सत्य पुजारी, वैश्विक दृष्टि सम्पन्न विकासकारी
''कनकनन्दी'' भावना भाये हितकारी, आध्यात्म विज्ञान हो सर्वोपकारी/
(गुणकारी)... (5)

सेमारी, दि= 12/6/2011 मध्यान्ह 3.37

विज्ञान की उज्जवल गाथा (8)

(विज्ञान का वरदान)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों, विज्ञान की उज्जवल गाथा
जिसे सुनकर तुम्हें ज्ञात होगी विज्ञान की पवित्र आत्मा/(वरद गाथा)... (टेक)

संकीर्णता व रूढ़िवादिता को दूर करती है विज्ञान-यात्रा
सत्य-तथ्य पूर्ण क्रमबद्धता ही विज्ञान की पवित्र-आत्मा... (1)

पन्थ, परम्परा, जाति, राष्ट्र की सीमा से परे है विज्ञान दृष्टि
सर्व जीवों की हितसाधना में प्रगतिशील है विज्ञान सृष्टि... (2)

अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक की खोज में रत है विज्ञान-रुचि
जीव जगत् व ब्रह्माण्ड-रहस्य के शोध-बोध में सदा प्रवृत्ति... (3)

रोग निवारण दीर्घ जीवन व सुख साधन रत विज्ञान वृत्ति
दूरसञ्चार व एकीकरण में विज्ञान की होती तीव्र प्रवृत्ति... (4)

अतिवृष्टि अनावृष्टि महामारी समस्या का करे निवारण
भुखमरी भूकम्प बाढ़ आदि समस्या का करे निस्तारण... (5)

यान-वाहन व कल कारखाना यंत्र आदि का दक्ष निर्माता
सुई से लेकर कम्प्यूटर तथा रॉकेट तक के आप विधाता/(निर्माता)... (6)

मानव मन से उत्पन्न विज्ञान मानव शक्ति का करे विस्तार
जिससे मानव प्रकृति ऊपर कर रहा है राज्य विस्तार... (7)

जल थल नभ राज्यों के राज का कर रहा है सूक्ष्म विचार
उससे प्राप्त राज के बल पर कर रहा है विश्व सञ्चार... (8)

पर्यावरण की सुरक्षा निमित्त विज्ञान का हो रहा विकास
जिससे प्रत्येक जीव हितार्थे नवीन ज्ञान का हुआ प्रकाश... (9)

भौतिक शक्ति के शोध-बोध से तन-मन का भी बढ़ा है ज्ञान
विचार शक्ति के परिज्ञान हेतु विज्ञान भी देता अद्‌भुत ज्ञान... (10)
इत्यादि बहु उपलब्धियों का प्रदाता बना है आज विज्ञान
जिससे मानव बना है उदार प्रगतिशील व उच्च विचार... (11)
जिससे जन्मे है वैश्विक एकता शान्ति मैत्री विचार
कार्य कारण व समन्वय दृष्टि स्व-पर-वैश्विक हित विचार... (12)
वैश्विक संस्थान, विश्व धर्म संसद, राष्ट्रों में होता है बन्धुत्व भाव
वैश्विक सम्बन्ध-सहयोग आदि वैज्ञानिकता से उत्पन्न भाव... (13)
इससे भी परे आत्मिक विकास, संस्कृति के लिए हो रहा प्रयास
भौतिकता परे आत्मा की कल्पना विज्ञान के लिए नया प्रयास... (14)
धर्म के बिना विज्ञान अन्धा, पंगु धर्म है विज्ञान बिना
इसी से दोनों का विकास होता, जिससे मानव सुखी भी होता... (15)
'कनकनन्दी' तो प्रयासरत आध्यात्म विज्ञान का हो विकास
वैश्विक ज्ञान का हो विकास, विश्वशान्ति में करे निवास... (16)

सेमारी, दि= 11/6/2011 रात्रि 11.11

परिशिष्ट - 1

(1) उत्तम क्षमा धर्म

पयुर्षण (दश धर्म दिन में नहीं आत्मा में है)

प्रवचनकर्त्ता- (आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव)

सेमारी ग्राम में चातुर्मास दौरान विराजित वैश्विक विचारक आध्यात्मिक रसिक वैज्ञानिक ''धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव'' ने पर्युषण पर्व का विशद रहस्य मय विवेचन किया। यहाँ के श्रद्धालुओं को पर्युषण व धर्म का महत्त्व बताया उसका कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है। गुरुदेव ने कहा यह विचारणीय विषय है कि क्या पर्युषण पर्व आज से प्रारंभ हुआ। श्वेताम्बर सम्प्रदाय का पर्व आज समाप्त हुआ दिगम्बरों का आज प्रारंभ हुआ हमने अपनी संकीर्णता में आकाश सम व्यापक धर्म को सीमाओं और दिनों में बांध लिया एक दिन का धर्म धर्म नहीं होता। आज से पर्युषण पर्व प्रारंभ हुआ? पर्युषण पर्व क्या है? पर्युषण का अर्थ क्या है। पर्युषण का अर्थ है परि ऊषणं इति पर्युषणं अर्थात्- परि=समन्तात ऊषणं इति पर्युषणं अर्थात् जो समग्रता से धर्म का सेवन, उपासन करना, आत्मा के निकट बैठना, आत्मदर्शन करना प्रदर्शन त्यागने का नाम पर्युषण है पर्व क्या? पर्व= जोड़ना गृहस्थ व अशुभ कार्य में रत गृहस्थी को धर्म से जोड़ने का नाम पर्व है। अर्थात् पर्युषण पर्व धर्म से जोड़ने का नाम है।

आज के दिन क्षमा को अंगीकार करके क्षमामय हो जाना क्षमा धर्म है। क्षमा केवल व्यवहार काल रूपी दिन को ही क्षमा मान लेना धर्म नहीं है। सिर्फ आज के दिन या क्षमावाणी दिन क्षमा को स्वीकार नहीं करना बल्कि क्षमामय हो जाना क्षमाधर्म है। उत्तम क्षमा यतिनाम् न च नृपतिनाम् अर्थात् उत्तम क्षमा को पूर्णतः यति जीवन में उतारते हैं। गृहस्थ उन यतियों का अनुकरण करते हैं तथा उन यतियों व धर्म की पूजा करते हैं आराधना करते है और उसका अभ्यास करते हैं। हमें दश धर्ममय भाव व्यवहार चारित्र बनाना है। निर्दोष

व्यक्ति साधु संतो पर दोष लगाना सबसे बड़ा पाप है श्रेणिक ने साँप मारा नरकायु नहीं बांधी पर निर्दोष संत पर मरा सर्प डालते ही नरकायु का बंध कर लिया। दूसरों के लिए क्रोध करना स्वयं की हानि करता है।

आज के दिन ही अपने जीवन को धन्य बनाने व निष्पृह गुरु के चरणों में शांति पाने मुम्बई से पधारे श्रीमति लक्ष्मी गुरुचरण दास बाम्बे हाई कोर्ट वकील ने प्रौढ़ आध्यात्मिक गीतांजलि ग्रंथांक नं. 200 का प्रकाशन हेतु इस प्रति की प्राप्ति समर्पण भरी सभी में किया तथा उनका संक्षिप्त परिचय प्रोफेसर प्रभात जी ने दिया। प्रोफेसर प्रभात जी प्रकाण्ड विद्धान निस्वार्थ धर्म प्रचारक गुरु भक्त हैं। गुरुआज्ञा व सेमारी समाज के निवेदन पर पधारे आपका प्रवचन रात्रि में होता है। प्रस्तुति- आ.क्षमाश्री.

(2) उत्तम मार्दव धर्म

''विनम्रता से विद्या कीर्ति पुण्य सन्मान की प्राप्ति''

प्रवचनकार- (आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव)

सेमारी चातुर्मास दौरान पर्युषण पर्व की श्रृंखला में आचार्य श्री कनक नंदी गुरुदेव के प्रवचानांश से- पर्युषण पर्व का उद्देश्य व क्षमा का रहस्य समझने के पश्चात् आज हमें समझना है सही धर्मात्मा का स्वरूप, धर्मात्मा का दृष्टिकोण व्यापक होना चाहिए। क्रोध को हमने खतरनाक मान लिया लेकिन क्रोध से खतरनाक मान, मान से माया, माया से लोभ आदि कषाय भी उत्तरोत्तर खतरनाक हैं इसलिए कथंचित् दशधर्मों का क्रम इस अपेक्षा सही है वैसे धर्म में क्रम की भी आवश्यकता नहीं। धवला, जयधवला आदिग्रंथ पढ़ने पर ये विषय समझ में आते हैं, धर्म का व्यापक, विराट रूप समझने के लिए व्यापक ज्ञान चाहिए। क्रोध दिखाई देता है इसलिए उसे हम बड़ा पाप समझने लगे पर मान माया आदि दिखते नहीं इसलिए इनका रूप सामान्य प्राणी की समझ में नहीं आता। मान प्रदर्शन को माध्यम बनाता है। मानी की हर क्रिया घर के फर्श से

उसकी ड्रेस आदि हर वस्तु में तथा हर क्रिया में प्रसिद्धि की भावना व मान झलकता है। मनोविज्ञान के अनुसार मानव हीन ग्रंथी व अहं ग्रंथी से ग्रसित हो पतन की ओर उन्मुख होता है।

''विद्या ददाति विनयं'' परन्तु मैं कहता हूँ विनय विद्या देती है। लोयत्से ने दाँत और जीभ का उदाहरण देकर अपने शिष्यों को समझाया था। विनय से गौतम ने मिथ्याज्ञान, सम्यग्ज्ञान में परिवर्तित कर गणधर पद प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त में चार ज्ञान के धारी बन गये। चर्चिल ने 5 करोड़ जनता को मारने वाले हिटलर को परास्त किया किन्तु गाँधी जी की विनम्रता, सरलता के आगे डरता था। अन्ना हजारे जी की विनम्रता, सरलता, सहजता ने भी विश्व का हृदय जीत लिया। इसलिए मान से महान नहीं मान त्याग से महानता प्राप्त होती है। अन्ना कोई विश्व विद्यालय में नहीं पढ़े कोई धन इकट्ठ नहीं किया परन्तु थोड़े ज्ञान के सदुपयोग से मान का त्याग करके एक आदर्श स्थापित किया जो अनुकरणीय है। मेरे मन को हर कोई प्रभावित नहीं कर सकता वर्तमान में ऐसा व्यक्तित्व देखने नहीं मिलता फिर भी एक व्यक्ति ने मन को भी आकर्षित किया और मैंने इनकी विनम्रता सरता जानने हेतु 12 दिन लगाया। गुरुदेव ने कहा मेरे 12 दिन 12 वर्ष के बराबर हैं क्योंकि वैश्विक विचारक, आध्यात्म रसिक गुरुदेव अपने जीवन का एक समय भी व्यर्थ नहीं गंवाते लेकिन विनम्र, सरल, सहज, पवित्र भाव वाले स्वयं भी है औरों को भी ऐसा चाहते हैं।

(3) उत्तम आर्जव धर्म

''मन, वचन, काय की पवित्रता युक्त सहज प्रवृत्ति धर्म'': आर्जव

प्रवचनकार- (आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव)

सेमारी ग्राम में चातुर्मास दौरान चल रही प्रवचन शृंखला का आज तृतीय दिवसीय प्रवचनांश। परम पूज्य ''वैश्विक विचारक आध्यात्मिक रसिक वैज्ञानिक

धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव'' ने हँसते हँसाते माया के विभिन्न रूपों का अवलोकन कराते हुए माया ठगनी का स्वरूप व इससे बचने का उपाय समझाया। गुरुदेव ने फिर धार्मिक रहस्य का उद्घाटन करते हुए कहा कि ''मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सो करिये'' ये पक्तियाँ पूर्ण सत्य नहीं है। जैसे आज के डाकू खुले आम जो मन में हो वही कहते हैं वही करते हैं तो क्या वे प्रमाणिक होंगे। सुनो सबकी करो मन की यह नीति भी अधुरी है सबकी सुनकर मनमानी करने वाले उद्दण्ड भी बन सकते हैं। माता कुमाता नहीं होती यह नीति भी पूर्ण सत्य नहीं क्योंकि माता कुमाता देखी जाती है। इसलिए परम्परा रूढ़ीनीतियों से ऊपर उठकर भी सोचना चाहिए।

आर्जव धर्म का अर्थ है पवित्र मन से वचन से क्रिया से जो सहजता, सरलता, और पवित्रता हो वह आर्जव है इसलिए हमारे आचार्यों ने भी कहा मन, वचन, काय की एकता में महानता है किन्तु पवित्र भाव की मुख्यता अनिवार्य है। कभी-कभी सामान्य प्राणी जिसे सत्य समझते वह असत्य हो सकता है। जिसे हिंसा मानते हैं वह अहिंसा भी हो सकती है। जैसे एक बधिक ने संत से पूछा गाय को यहाँ से जाते देखा, संत बैठ गये और कहा मैं बैठा हूँ जबसे कोई गाय नहीं गई यह असत्य प्रतीत होने पर सत्य है। वैसे ही धीवर को मछली का स्थान बताना यह हिंसा है। ऐसे कई दृष्टान्तों से समझाते हुए कहा धर्म शब्द मात्र में नहीं अंतरंग में स्वयं में उतारना होता है प्रेक्टिकल करना होता है जिसका मैं स्वयं प्रतिपल अनुभव कर रहा हूँ। क्रोध नारकी में, मान मनुष्य में, लोभ देव में लेकिन माया का शासन तीनों लोकों में पाया जाता है माया रूपी गर्त में हर पाप छिपाकर जीव अपने व पर को धोखा देता है। माया की संख्या में अनंत एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य व स्त्रियों में पाई जाती है।

भारत में नकली औषधि एक्सपाइरीडेट की खुले आम बेची जा रही है जिससे मायाचारी से गरीब का शोषण और पैसा देकर वह रोग खरीद रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यापार में राजनीति में भी माया का राज्य कम नहीं है किन्तु

गांधीजी व वर्तमान अन्ना हजारे व कई ऋषि मुनि आज भी सरलता, सहजता विनम्रता से आदर्श बनाये हुए हैं। जैन धर्म अति सूक्ष्म है इसलिए इसके आगे विज्ञान, तर्क, कानून भी स्थूल है। आर्जव धर्म को धारण करने वाले को हर जगह सफलता मिलती है सरल व्यक्ति को ही मोक्ष मिलता है।

प्रस्तुति- आ.क्षमाश्री

(4) उत्तम शौच धर्म

''शौच धर्म से दूर होगा भ्रष्टाचार''

प्रवचनकार- (आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव)

सेमारी ग्राम में चातुर्मास आवास में पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर परम पूज्य वैश्विक विचारक, आध्यात्मिक रसिक, वैज्ञानकि धर्माचार्य ''कनकनंदी जी गुरुदेव अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी साधना में रत, हर पल, हर क्षण, नव चिंतन नव अनुभव के रस में डूबने व डूबाने वाले जो कि'' सिद्धान्त चक्रवर्ती आदि कई पदवी के धारी महान् ज्ञानी, विज्ञानी अनुभवी होते हुए भी आगम अनुसार निष्पृह वृत्ति अर्थात् उत्तम शौच धर्म को सतत् प्रयोग में लाते हैं और उनके द्वारा ही रचित दशविध धर्म पर भजन के द्वारा मुनि सुविज्ञ सागर जी ने सभा का शुभारंभ किया, तत्पश्चात् गुरुवर ने प्रवचन के माध्यम से शौच धर्म का विशद व्याख्यान किया जिसका संक्षिप्त सार इस प्रकार है- गुरुवर ने कहा आज शौच धर्म को चतुर्थ स्थान में रखने का कारण है कि पहले क्रोध, क्रोध से मान, मान से माया, माया से लोभ को वश करना उत्तरोत्तर दुलर्भ है तथा इनको क्षय करने का क्रम भी यही है। लोभ कषाय नष्ट किये बिना कोई वीतरागी नहीं बन सकता। लोभ पाप का बाप बखाना यह सबसे बड़ा पाप है क्षपणासार, धवला, जयधवला आदि ग्रंथों से पता चलता है। लोभ को नाश करने के लिए सबसे अधिक शक्ति चाहिए। महाभारत, रामायण, भरत-बाहुबली आदि युद्ध में कारण है लोभ। युग के आदि से आज तक कई उदाहरण इतिहास से ज्ञात होते हैं। जैन

धर्म में इन कषायों का अक्षसंचार बताया है जिसे विज्ञान में मास्टर थ्योरी भी कह सकते हैं। परिग्रह का अर्थ है इस जीव को चारों ओर से ग्रह लगा है घड़ियाल के भी ग्राह कहते हैं जिस प्रकार घड़ियाल पानी में ही हाथी, शेर को खा जाता है, उसी प्रकार इस जीव को 14-14 परिग्रह रूपी घड़ियाल खा रहे हैं। गुरुदेव ने कई उदाहरण दिये और दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि इस विश्व गुरु भारत में लोभ के कारण पशु हत्यायें हो रही हैं, हर चीज में मिलावट, शोषण भ्रष्टाचार, लोकेष्णा, वित्तेष्णा, पुत्रेष्णा, सत्ता की चाह आदि सब लोभ के कारण हैं। परिग्रह को जैन धर्म व सब धर्मों में सबसे बड़ा पाप माना है इसलिए शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ तीनों पदवी के धारी तथा अन्य राजा, महाराजा, चक्रवर्ती आदि महा परिग्रह को त्याग कर साधु व महान् बने। वर्तमान में भी कई संत ऋषि हैं। बिलगेट्स वारेन बफेट आदि भी परोपकार सेवा में परिग्रह त्याग दयादत्ती से कर रहे हैं 45 वर्ष की उम्र में वे इसका लाभ ले रहे हैं और भारत में आकर भी उन्होंने दान देने का उपदेश दिया इस बात पर मुझे खुशी तो हुई पर दुःख भी है कि विश्व को दान का उपदेश देने वाले को विदेशी उपदेश दे रहे हैं। अन्ना हजारे भी लोभ त्याग के वर्तमान आदर्श की प्रेरणा देते हैं। आप सब आदर्श बने शौच धर्म पालन करें।

प्रस्तुति- आ. क्षमाश्री

(5) उत्तम सत्य धर्म

''सत्य ही धर्म कानून राजनीति एवं समाज के मूल सूत्र है।''

प्रवचनकार- वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव

सेमारी ग्राम के पावन वर्षायोग में अपूर्व पर्युषण पर्व पर योग मिला है परमपूज्य वैश्विक विचारक आध्यात्मिक रसिक अभीक्ष्ण ज्ञानोपयागी, सिद्धांत चक्रवर्ती वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव का उनके ही द्वारा रचित भजन के द्वारा मुनि सुविज्ञ सागर जी ने सभा का शुभारंभ किया फिर गुरुदेव का

प्रवचनामृत प्रारंभ हुआ जिसमें उन्होंने कहा मेरा परमविषय है सत्य। मैं सत्य को ही भगवान् मानता हूँ। सत्य में अणु से ब्रह्माण्ड तक आत्मा परमात्मा ही परम सत्य स्वरूप है। संसार में जो सामान्य प्राणी देखता है, बोलता है, सुनता है वह कितना सत्य है कितना असत्य है यह समझना अनिवार्य है क्योंकि कुछ लोग जिसे सत्य मानते हैं वह असत्य भी हो सकता है और असत्य लगने वाला भी सत्य हो सकता है। कई उदाहरणों से गुरुदेव ने व्यापक सत्य का स्वरूप समझाया जैसे- प्राथमिक क्लासों में पढ़ाया जाता है आकाश नीला है परन्तु यह सत्य नहीं क्योंकि आकाश अमूर्तिक रंग, रूप, टेस्ट, गंध रहित है। विज्ञान के अनुसार माईस्कोप से भी 95% वस्तु हम नहीं देख पाते तो क्या हमने सत्य जान लिया। सत्य बहुत विराट है सूक्ष्म है जिसे प्राप्त करने के लिए सब कुछ त्यागना पड़ता है हमारे तीर्थंकर, बुद्ध, ऋषि, मुनि, महापुरुष ने सारा वैभव सत्य पाने के लिए त्याग किया सत्य की खोज में निकल पड़े ''सचवं भगवं''। ''सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप'' ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोए। इन पंक्तियों में रहस्य भरा है। हमारे आचार्यों ने कहा प्राथमिक व्यवहार सत्य में हित-मित-प्रिय बोलना अनिवार्य है। हितकर का अर्थ हैं दूसरों को किसी प्रकार क्षति नहीं पहुँचाना कथंचित् व्यवहार से असत्य भी यदि किसी आत्म हित में कारण बने तो वह श्रावक के लिए सत्य की श्रेणी में गिना है। दूसरों को अपमानित करने, अहंकार प्रदर्शन करने, कुटिल भाव से बोला गया सत्य भी असत्य है। मित= कम बोलना जिससे वचन स्खलन न हो किसी को परेशानी न हो किन्तु जज, माता, पिता, गुरु को मित और प्रिय बोलना जरूरी नहीं उन्हें हित के लिए कठोर बोलना जरूरी है। प्रिय का अर्थ मधुर बोलना परन्तु मधुर बोलकर ठगना नहीं जैसे वेश्या, व्यापारी, कामी मीठा बोलकर ठग लेते हैं। संविधान, कानून या व्यवहार में कई बातें असत्य है। आर्य विदेश से आदि कई शिक्षायें भी गलत है। डार्विन के पूर्व तीर्थंकर, बुद्ध आदि महापुरुष अरब खरब वर्ष पहले हुए उनकी बात क्या हम एक वैज्ञानिक के आधार पर

नकार देंगे? सत्य को स्वीकार करने वैज्ञानिक बनो। अमेरिका से सेमारी आए बिटनी वामन वैज्ञानिक ने 2 घंटे के सत्संग में सत्य धारण करूँगा, अंधविश्वास छोड़ कर गये। प्रस्तुति- आ. क्षमाश्री

(6) उत्तम संयम धर्म

''विकास एवं सुख-शान्ति के लिए संयमित जीवन चाहिए''

प्रवचनकार- प.पू. वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव

सेमारी ग्राम में चातुर्मास के पावन अवसर पर पर्युषण पर्व के संयम धर्म पर परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, ज्ञान दिवाकर, वैश्विक विचारक, आध्यात्म रसिक वैज्ञानिक धर्माचार्य संयम साधना में रत गुरुवर ने अपनी वचनामृतरूपी वर्षा से संयम सुमन विकसित पुष्पित, पल्लवित करने के रहस्य उद्घाटित किये। उन्होंने कहा संयम का अर्थ है सम्यक् प्रकार से पापों का त्याग करके भावों को निर्मल बनाने के लिए यम का पालन करना। संयम का व्यवहारिक रहस्य बताते हुए कहा कि संयम हर दृष्टि में होना चाहिए। मन, वचन, तन को भावों से नियंत्रित करके जो पहले इहलोक में संयमित बनकर आनंद प्राप्त कर लेगा, वही परलोक में आनंद प्राप्त कर पायेगा। जो संयम की पूजा करे, प्रवचन सुने, आरती उतारे पर मन, वच, तन तीनों असंयम में हो तो क्या वह संयम धर्म है। जीवन में धर्म और कर्त्तव्य का पालन करते हुए समय संयम, धन संयम, प्राणी संयम, इन्द्रिय संयम, मन संयम, वचन संयम, आदि सभी संयम अनिवार्य है इसके बिना भीड़ दुर्घटनायें धार्मिक यात्रा करने वालों की मृत्युदर अधिक है क्राउड मनोविज्ञान के अनुसार वहाँ मन अनियंत्रित हो जाता है जिससे मन का नियंत्रण बिगड़ जाता है। जिसका उठने, बैठने, सोने, खाने-पीने आदि में संयम होगा वही आत्म संयम की ओर अग्रसर होगा।

भगवान् महावीर स्वामी गौतम गणधर से कहते हैं ''हे गोतम! एक समय पमायेण मा मुक्कउ'' हे गौतम एक समय भी प्रमाद में मत बिताओ अर्थात् एक समय का प्रमाद कितना बड़ा पाप है प्रमाद सबसे बड़ी हिंसा है। एक समय का प्रमाद देव, शास्त्र, गुरु निंदा से 70 कोड़ा-कोड़ी का बंध करा देता है असंयमी की क्रिया गजस्नानवत् है, विधवा के शृंगार जैसी है। ईशप व पंचतंत्र की कहानियाँ विश्वविख्यात है। हंस कछुओं को मानसरोवर ले जा रहे थे पर कछुए ने वचन पे संयम नहीं रखा पतित हुआ मर गया। ट्रेन पटरी पर चलती हैं संयमित चलती है दुर्घटना नहीं होती। मातायें सब्जी सुधारती हैं भोजन बनाती हैं इन सबमें सावधानी रखती हैं। पहले राजा, महाराजा, चक्रवर्ती आदि गुरुकुल आदि में शस्त्र लेकर नहीं जाते थे अभी तो धार्मिक कार्यक्रम में पुलिस की आवश्यकता होती है क्योंकि अभी धार्मिक स्थानों में संयम नहीं है। और भी संयम के कई पहलुओं पर विशद् प्रकाश डालते हुए संयम का महत्त्व बताया।

प्रस्तुति- आर्यिका क्षमाश्री

(7) उत्तम तप धर्म

''आत्म विशुद्धि के लिए जो तपा जाता है वह तप है।''

प्रवचनकार- वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव

सेमारी पयुर्षण पर्व में परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयागी सिद्धांत चक्रवर्ती ज्ञान विज्ञान दिवाकर वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव जो कि स्वयं अतरंग तप में सतत् अवगाहन करते हुए अपनी आत्मा को कनकसम निर्मल बनाते हैं उन्हीं अनुभवों की लहरों में सेमारी वासियों को व अन्य गाजियाबाद, बाम्बे, सुरखनखेड़ा, पाडवा आदि से पधारे भक्तों व शिष्यों को स्नान कराकर तप रूप साबुन से निर्मल बनने के रहस्यमयी उपाय बताये। गुरुदेव के प्रवचन से ऐसा लगता है कि प्रत्येक प्राणी को इनके प्रवचन का लाभ प्राप्त हो क्योंकि ऐसा आगमोक्त रहस्य बताने वाले गुरु दुर्लभ हैं। तप क्या है, तप कैसे करना,

तप से क्या लाभ, कौन से तप का क्या महत्त्व, तप को कितने भेद व उन भेदों के रहस्य, तप की वर्तमान विकृति, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, सामाजिक आदि कई पक्षों के माध्यम से विशद् विवेचन ने मन की ग्रंथियाँ खोल दी। तप का व्यावहारिक पक्ष जानते हुए तप का अंतरंग स्वरूप जानना जरूरी है।

''तप्यते आत्म शोधनार्थ इति तपः'' आत्म शोधन के लिए परिणाम विशुद्धि से इच्छा निरोध के लिए जो तपन है वही तप है बाकी सब पतन का कारण है। बाह्य तप अंतरंग तप की वृद्धि के लिए करना चाहिए। बाह्य तप उपवास आदि स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है, Stomach को आराम भी देता है। यदि वात, पित्त, कफ सम रहे तो, किंतु उपवास शक्ति अनुसार विवेक से करें। सामाजिक रूढ़ियों पर हँसाते-हँसाते परिमार्जन करने का उपाय बताते हुए गुरुदेव ने अंतरंग व बहिरंग तप का उत्तरोत्तर गुण धर्म बताते हुए कहा बाह्य तप में अनशन, ऊनोदन, वृत्तिपरिसंख्यान, रस परित्याग, कायक्लेश उत्तरोत्तर मन व इन्द्रिय को वश में करते हुए अंतरंग तप की ओर अभिमुख करने हेतु है। अंतरंग तप में प्रायश्चित का महत्व अधिक हैं क्योंकि प्रायश्चित किये बिना, गलती स्वीकार किये बिना आत्म का परिशोधन नहीं होगा। विनय- असंख्यात उपवास से जो फल नहीं मिलता वह देव-शास्त्र-गुरु की विनय से मिलता है। वैयावृत्ति - वैयावृत्ति करने से तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है। यह विषय आचार्य श्री ने भगवती आराधना, धवला आदि ग्रंथों का प्रमाण देकर बताया है। वैयावृत्ति में आहारदान, औषधदान वसतिकादान आदि भी है। हर तप का विशद् विवेचन किया तप-आत्म उत्थान के आत्म विकास के लिए किया जाता है। स्वाध्याय - स्वाध्याय मुनि के लिए परम तप हैं। पंचम काल मुनियों के लिए यही तप है। ध्यान - ध्यान अंतिम अंतरंग तप है। यहाँ संक्षिप्त व अधुरा है। गुरु सानिध्य से पूर्ण प्राप्त करें। प्रस्तुति - आर्यिका क्षमाश्री

(8) उत्तम त्याग धर्म

''आकांक्षा एवं स्वार्थ रहित त्याग ही उत्तम त्याग है''

प्रवचनकार- वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव

सेमारी ग्राम में पर्युषण पर्व पर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, ज्ञान विज्ञान दिवाकर, वैश्विक विचारक, आध्यात्म रसिक वैज्ञानिक धर्माचार्य ''कनकनंदी'' जी गुरुदेव जो स्वयं त्याग के पथ पर निरन्तर बढ़ रहें जो अंतरंग साधना में रत रहकर अंतरंग गुणों की वृद्धि स्वयं करते हैं, कराते हैं। गुरुदेव की भावना इतनी उदार है कि वे हर पल यही प्रयास रत हैं कि साधु, संत व हर मानव त्याग की परिभाषा को समझे और इस आध्यात्मिकता के देश में आध्यात्म को सही ढ़ंग से जिये और उसका पूर्ण लाभ उठाये। गुरुदेव अपने त्याग मय जीवन से अति आनंदित व संतुष्ट हैं इसलिए वे किसी की अपेक्षा उपेक्षा बिना प्रायोगिक शांति समता के सागर में गोता लगा लगा कर दिन, रात शुभ चिंतन मनन में समय का सदुपयोग करते हैं। वे त्याग उसी को मानते हैं जिससे मानव को संक्लेश न हो अस्वस्थ न हो, स्वार्थी न हो तो वह त्याग है। प्रखर वाग्रश्मियों से त्याग के अन्धकार व उज्ज्वल पक्ष को आलोकित करते हुए कहा कि पर संयोग से अशुद्ध दशा होती है और अशुद्ध दशा दुःख के लिए कारण हैं। संयोग से दुःख होने के कारण संयोग को मनसा, वचसा, काया से सर्वदा त्याग करना चाहिए।

त्यागो हि परमो धर्मस्त्याग एव परं तपः।

त्यागादिह यशो लाभः परत्राभ्युदयो महान्।।

त्याग ही परम धर्म है, त्याग ही परम तप है, त्याग से इहलोक, में यश लाभ होता है एवं परलोक में महान् अभ्युदय मिलता है।

भारत में त्याग की पूजा होती है और विदेश में भी भारत के त्याग का सम्मान था रविन्द्रनाथ टैगोर जापान गये तब उनकी जापानवासियों ने पूजा

सम्मान किया तो टैगोर जी बोले भाई मेरी पूजा क्यों उन्होंने कहा हम भारत के हर व्यक्ति में महात्मा बुद्ध का त्याग देखते हैं। ये था भारत का आदर्श सम्मान। राजा, महाराजा चक्रवर्ती भी त्याग करते हैं तो मोक्ष जाते हैं। यदि राज सुख त्याग नहीं करते तो शलाका पुरुष भी नरक जाते हैं इसलिए कहा भी- राजेश्वरी से नरकेश्वरी। उत्तम त्याग साधु करते हैं त्याग करने वाले साधु के सेवा आदि श्रावक करते हैं इसलिए श्रावक दान करते हैं। त्याग में स्व कल्याण होता है दान में दाता पात्र दो का परोपकार होता हैं।

(9) उत्तम आकिंचन्य धर्म

''जो बाह्य द्रव्य से शून्य होता है वह स्वयं में पूर्ण होता हैं''

प्रवचनकार- वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरुदेव

सेमारी पर्युषण पर्व पर परम पूज्य अभीक्षण ज्ञानोपयागी सिद्धांत चक्रवर्ती ज्ञान-विज्ञान दिवाकर, आध्यात्मिक रसिक सहज-सरल व्यक्तित्व के धनी रहस्यमयी शोध पूर्ण चिंतन, लेखन, मनन से स्वलीनता के आनंद का रसपान करने वाले विरले संत परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव के प्रवचानांश से- आकिंचन्य का रहस्य उद्घाटित करते हुए आकिंचन का अर्थ है ''न किंचन यस्य स आकिंचन्य'' जिसके पास कुछ नहीं है वह आकिंचन्य है इसका अर्थ यह भी हो सकता है कुछ नहीं तो गरीब या भिखारी हो परन्तु ऐसा नहीं। आचार्य कहते हैं-

आकिंचन्य महमित्य त्रयलोव्याधिपतिर्भवेत्।

योगीगम्य तव प्रोक्तं रहस्य परमात्मनः।।

जो आकिंचन्य होगा वही त्रयलोक का पति होगा और यह योगी गम्य रहस्य है। आकिंचन्य धर्म योगी पालन करते हैं। दान व त्याग के बाद आकिंचन्य है। हमारे जितने भी तीर्थंकर थे राजकुमार तो थे ही भले राजा न बने हो। क्षत्रियकुल छोड़कर अन्य में जन्म न लेने वाले राजपूत ही तीर्थंकर बने। षट्खण्डाधिपति,

कामदेव, चक्रवर्ती, तीर्थंकर पदवी धारी तीन भगवान् थे। पंचबालयति तीर्थंकर राजकुमार थे। 6 तीर्थंकर राजवस्था में मुनि बने। तीर्थंकर के जन्म में ही कुबरे इतने धन की वर्षा करता है कि नगर में कोई गरीब नहीं रहता फिर भी शतेन्द्र पूजित नहीं होते किन्तु साधु बनकर ज्यों ही अकिंचन्य धर्म स्वीकार करते हैं त्यों ही शतेन्द्रों से पूजित होते हुए तीन लोक के गुरु, प्रभु सर्वज्ञ होते हुए अर्न्तमुर्हूत में या कुछ वर्षों में त्रिलोक पूजित हो जाते हैं। उस आकिंचन्य का सुख आचार्यों ने कितना सुन्दर बतलाया है। ''जं मुनि लहइ अनंत सुह निय अप्प झायंतो।'' जो सुख मुनि आकिंचन्य धर्म धारण करने के बाद आत्म ध्यान करते हुए प्राप्त करते हैं वह सुख असंख्य वैभव के धनी इंद्र को भी प्राप्त नहीं होता। साधु जितना-जितना त्याग करते हैं लक्ष्मी उतनी उतनी इनके पीछे-पीछे भागती है। साधु वे ही बनते हैं जो भाग्यवान होते हैं जिसके राज योग होता है। इसलिए साधु आनंद से दो हाथों से आहार लेते हैं और श्रावक एक हाथ से खाता है जो कि दिन भर दोनों हाथ से कमाता है। समोशरण में अनेक चक्रवर्ती की सम्पदा धूल में लोटती है। अतः शिक्षा लो कि हम संग्रह वृत्ति का त्याग करें सोने को महत्त्व न दें शून्य बनें क्योंकि जो बाह्य द्रव्य से शून्य होता है वह स्वयं में पूर्ण होता है। आकिंचन बनो। गुरुदेव के पूर्ण प्रवचनों का लाभ उनके साहित्य व सानिध्य से प्राप्त करें। प्रस्तुति- आ. क्षमाश्री

(10) उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

''ब्रह्मचर्य से शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक शांति की उपलब्धि''

सेमारी ग्राम में पयुर्षण पर्व के उपलक्ष में परम पूज्य अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत के धनी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, ज्ञान-विज्ञान, दिवाकर, वैज्ञानिक धर्माचार्य, आत्मा साधना में रत संसार शरीर भोगों से पूर्ण विरत, बारह वर्ष की लघुवय में ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प करके दृढ़ वैराग्य पूर्वक अपने लक्ष्य का

चयन करते हुए साहसी कदमों से भावों की पवित्रता ने आज आत्मा को विशुद्ध बनाने की परम पराकाष्ठा पर पहुँच कर अपनी साधना में जो सफलता प्राप्त की है वह अनुकरणीय-पूजनीय है। हर पल, हर क्षण वे इसी कोशिश में रहते हैं कि धर्म व आध्यात्म का लाभ हर व्यक्ति उठाये और सुखी हो जाये। उन्होंने ब्रह्मचर्य का महत्त्व बताते हुए कहा ब्रह्मचर्य धर्म जगत् पूज्य है। ब्रह्मचर्य धर्म का महत्त्व हर धर्म में महान् है। ब्रह्मचर्य धर्म में अन्यान्य समस्त धर्म समाहित है जैसे आकाश में समस्त द्रव्य समाहित हैं। इसी प्रकार ब्रह्म+चर्य= ब्रह्मंचरति इति ब्रह्मचर्य आत्मा में रमण करना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य का विस्तृत वर्णन गुरुदेव के साहित्य से प्राप्त करें। पयुर्षण पर्व में गुरुदेव के सानिध्य में इनके शिष्य गण पधारे। गाजियाबाद से प्रो. प्रभात जी पधारे जिन्होंने दशधर्म पर रात्रि में व दोपहर में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिये। जोधपुर से पधारे डॉ. डिलिट प्रो. कुलपति सोहनराज जी तातेड़ ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुदेव सुलझे हुए व्यक्ति हैं जो अपने ज्ञान-विज्ञान से विश्व में अलख जगा रहे हैं। आज हमें ऐसे गुरु मिले पर हम जैन होकर क्या कर रहे हैं? हमारी नीड से अधिक ब्रीड की पूर्ति ही हमारा लक्ष्य बन गया है, बाकि सब गौण हो गया। पहले धन परिधि में था अब धर्म; आदि कई विषय कहे। डॉ. प्रो. नारायण लाल जी कच्छारा जी ने भी कहा मनुष्य का मूल्यांकन कैसे करें? गुणों से मनुष्य की पहचान होती है। दस लक्षण में जीवन के दस मूल्य सीखते हैं, कल भूल जाते हैं। हर वर्ष व्याख्यान सुनते हैं और भूल जाते हैं। ब्रह्मचर्य की शक्ति महान् है। अन्ना हजारे ने भी बता दिया कि ब्रह्मचर्य की शक्ति कितनी होती है। गुरुदेव से ही मैंने जैन धर्म सीखा है पर मैं भूला नहीं। उसी प्रकार आप लोग भी गुरु का महत्त्व समझें। मुम्बई से हाईकोर्ट वकील गुरु चरणदास जी तथा उनकी श्रीमति मति लक्ष्मी जी व विमलाबेन भी पधारे। वकील साहब जी ने अपनी श्रद्धामयी भावनाओं के कई अनुभव बताते हुए कहा मैं देव शास्त्र गुरु का परम भक्त हूँ। मेरी कनकनंदी गुरुदेव के प्रति

असीम श्रद्धा है। धर्म दर्शन शोध सेवा संस्थान के आप सभी सदस्य हैं। छोटूलाल जी भी उदयपुर से इनके साथ पधारे जो कर्त्तव्य निष्ठ हैं। इन सबने मिलकर गुरुदेव से औरंगाबाद बिहार करने की प्रार्थना कर भावना व्यक्त की। गुरुदेव को विश्व व्यापी बनाने हेतु अपने मिशन को आगे बढ़ाना है। इसलिए गुरुदेव आप आगे बढ़ें, हम सब तन मन धन से आपके साथ हैं।

प्रस्तुति- आ. क्षमाश्री

परिशिष्ट - 2

स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव

(आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के संघ की नियमावली)

(1) संघ में चातुर्मास, केशलोंच, (दीक्षा जयन्ति, आचार्य पद जयन्ति, जन्म-जयन्ति आदि नहीं मनेगी) की आमंत्रण पत्रिका नहीं छपेगी। वैसे गुरुदेव इन पत्रिकाओं को पहले से ही छपवाने के पक्ष में नहीं थे, अगर श्रावक अपनी स्वेच्छा व भक्ति से चतुर्मास की पत्रिका छपवाते भी हैं तो गुरुदेव संघस्थ उनको नहीं भेजेंगे, श्रावक ही भेजेंगे। इसलिए सूचना हेतु सामान्य व कम मात्रा में ही श्रावक पत्रिकाएँ छपाये। संगोष्ठी, शिविर, दीक्षा-महोत्सव आदि विशेष कार्यक्रम की पत्रिका के लिए उपर्युक्त प्रावधान नहीं है।

(2) प्रवचन-विधान/पंचकल्याणक मठ-मन्दिर-मूर्ति निर्माण/ वेदी प्रतिष्ठा/शिविर संगोष्ठी/ साहित्य प्रकाशन/ देश-विदेश में धर्म प्रचार कार्य/ विश्व-विद्यालयों में शोधकार्य/ विश्व-विद्यालयों में आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना इत्यादि कार्य पहले से ही स्वेच्छा, सहजता-सरलता से होते थे तथा आगे भी होंगे।

(3) जिससे श्रावक पर अधिक आर्थिक बोझ पडता हो ऐसे कार्य स्वयं श्रावक अपनी शक्ति-भक्ति स्वेच्छा से करते हैं तो स्वयं करें, संघ ऐसे कार्यों को करने हेतु दबाव नहीं डालेगा।

(4) आचार्य भगवन् की अनुमति के बिना संघ के कोई भी सदस्य (साधु/साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्माचारिणी-श्रावक) किसी भी प्रकार की वस्तु श्रावक से नहीं माँगेंगे और न आदेश देंगे।

(5) किसी भी प्रकार की बोली हेतु संघ दबाव नहीं डालेगा।

(6) संस्था के विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आवश्यकता के बिना संघ में नहीं संस्था में ही रहेंगे।

(7) संकीर्ण पंथवादी, अर्थलोलुपी, अयोग्य, अनुशासनविहीन, अविनयी, गृहस्थ, विद्धान, पंडित, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, साध्वी, साधु (स्व या परसंघ) के लिए भी संघ में अनुमति नहीं है। उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति से लेकर साधुओं को संघ में स्वीकार्य करने का कार्य आचार्य गुरुदेव के निर्णय पर ही होगा।

(8) संघ में संकीर्ण मतवाद, पंथवाद, परम्परावाद, संतवाद, ग्रन्थवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे उदार सहिष्णु, सनम्रसत्यग्राही, अनेकान्तमय वैज्ञानिक पद्धति से स्व-पर-विश्वकल्याणकारी विचार-व्यवहार-कथन लेखन-अनुसंधान-प्रचार-प्रसार को ही महत्व दिया जा रहा है, आगे भी दिया जायेगा।

(9) जिस द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिस्थिति, समाज में उपर्युक्त उद्देश्य एवं कार्य सम्पन्न होंगे ऐसे क्षेत्रादि विशेषतः योग्य ग्रामादि, शहरादि में ही संघ का विहार निवास, चातुर्मास अधिक से अधिक होगा।

(10) संघ के सभी सदस्य स्वावलम्बी बनेंगे यानि अपना कार्य स्वयं करेंगे तथा स्वानुशासी यानि संघ के नियम-कानून-अनुशासन का पालन करेंगे एवं प्रत्येक कर्त्तव्य समय पर करेंगे।

(11) स्वास्थ्य की विशेष समस्या के कारण अपवाद से जो उपचार के रूप में पंखादि, औषधि आदि का प्रयोग होता है उस समस्या का समाधान होने के बाद उसका प्रयोग नहीं करना।

(12) संघस्थ सभी सदस्य परस्पर में वात्सल्य, सेवा, सहयोग, स्थितिकरण, उपगूहन से युक्त होंगे।

आहार सम्बन्धी नियम-

(1) रसोई गैस से बना भोजन-पानी-दूध का त्याग-

करोड़ों त्रस जीवों के शरीर से निर्मित, असंख्य स्थावर जीवों के हिंसाकारक, विस्फोट से घर के जलने से लेकर अनेक नर-नारियों के मृत्यु के कारक तथा अनेक रोगों के कारणभूत गैस से निर्मित भोजन आदि का त्याग का नियम है। विस्तृत विवरण आचार्य कनकनंदी के साहित्यों से प्राप्त करें।

(2) मटर, टमाटर, ग्वांरफली, बेसन, उड़द, मसूरदाल, तुन्दरू (टिंडूरी, टोंडले), सेंगरी (मोगरी), तरबूज, खरबूज, सेमफली, लाल मिर्च तेल आदि का त्याग।

(3) शक्कर, नमक आदि का कम प्रयोग। आ. कनकनन्दी को एसिडिटी-पित्त की समस्या के कारण शीत ऋतु को छोडकर अन्य समय में आचार्यश्री गरम करके ठंडा किया हुआ पानी-एवं दूध लेते हैं।

(4) अधकच्चा-अधपक्का भोजन अभक्ष एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने से त्याग।

(5) कच्चा खट्टा फल, खट्टा दही-मट्ठा आदि त्याग।

आचार्य श्री कनकनन्दी- साहित्य कक्ष की सूची

भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना अभी तक हो चुकी है, आगे प्रायः 100 वि.वि. में स्थापना होगी। विश्व विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर साहित्य स्थापित होने की सूची-

1. श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, कविनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
2. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
3. श्री दि. जैन मन्दिर, दादरी गाजियाबाद (उ.प्र.)
4. श्री दि. जैन मन्दिर, ऐल्लकजी, मण्डोला, गाजियाबाद (उ.प्र.) (श्री विज्ञान सागर द्वारा स्थापित)
5. श्री दि. जैन मन्दिर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
6. प.पू. मुनिश्री विहर्षसागर जी
7. श्री सिद्धान्त तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर, गुडगाँव (हरियाणा)
8. श्री दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
9. श्री दि. जैन मन्दिर, शंकरपुर, शाहदरा, दिल्ली
10. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वहलना, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
11. डॉ. (पं.) ताराचन्द्र पाटनी ज्योतिषाचार्य, 1132, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
12. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, गोरेगाँव, मुम्बई (महा.)
13. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, सेक्शन-16, फरीदाबाद (हरियाणा)
14. श्री एल.डी.जैन, अनिल जैन, श्री महावीर भगवान् दि. जैन मन्दिर, हरिनगर, घण्टाघर, दिल्ली

15. ऋषभाञ्चल जैन मन्दिर, ध्यान केन्द्र, मोरटा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
16. श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर, कांधला, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
17. श्री दि. जैन मन्दिर, सासनी, अलीगढ़ (उ.प्र.)
18. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा, शाहदरा, दिल्ली
19. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-2, शाहदरा, दिल्ली
20. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-12, शाहदरा, दिल्ली
21. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा
22. श्री दि. जैन मन्दिर, रघुबरपुरा, दिल्ली
23. श्रीमती कुंकुम जैन, श्री विनोद कुमार जैन I-3/9 कृष्णानगर, दिल्ली
24. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
25. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
26. श्री रूप कुमार जैन, ए-236, सूरजमल विहार, दिल्ली
27. श्री अनिल कुमार अग्रवाल जैन, दिलशाद गार्डन मन्दिर दिल्ली
28. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, घण्टाघर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
29. श्री दि. जैन मन्दिर, त्रिलोकधाम तीर्थ, बड़ागाँव, बागपत (उ.प्र.)
30. श्री चन्द्रवती जैन महिलाश्रम, बड़ागाँव , बागपत (उ.प्र.)
31. श्री दि. जैन मन्दिर, सञ्चयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
32. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, मुनीम कॉलोनी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
33. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, अनुपुरा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
34. श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पुराना मन्दिर, हस्तिनापुर, मेरठ (उ.प्र.)
35. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, जनरलगंज, कानपुर (उ.प्र.)
36. श्री दि. जैन मन्दिर, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)

37. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, अशोकनगर फेज-1, नई दिल्ली
38. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली
39. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, एन-10 ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली
40. श्री दि. जैन मन्दिर, नोएडा सेक्टर 29, नोएडा (उ.प्र.)
41. श्री दि. जैन मन्दिर, सेक्टर 7, अहिंसा विहार, नई दिल्ली (रोहिणी)
42. उत्तर प्रदेश भवन लाइब्रेरी, शिखरजी, जि. गिरीडीह (झारखण्ड)
43. श्री दि. जैन मन्दिर, मुंगाणा, जि. उदयपुर (राज.)
44. श्री दि. जैन मन्दिर, श्री महावीर जी पुस्तकालय, श्री महावीरजी (राज.)
45. श्री दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, चूलगिरी, जयपुर, राजस्थान
46. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, सेठी कॉलोनी, जयपुर, (राज.)
47. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, साहिबाबाद, गाजियाबाद
48. श्री दि. जैन मन्दिर, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, मेरठ (आ. ज्ञानमती माता जी)
49. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, जैन मोहल्ला, पानीपत (हरियाणा)
50. श्री दि. जैन मन्दिर, अहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)
51. श्री दि. जैन मन्दिर, मुन्नालाल कागजी धर्मशाला, लखनऊ (उ.प्र.)
52. श्री दि. जैन मन्दिर, विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली
53. श्री रतनलाल जैन लाईब्रेरी, यूसूफ सराय, नई दिल्ली
54. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर (पुराना), बड़ागाँव, बागपत